

हम सचि
तः आर्थिक
स ही गये
देकर उनके
कृत बल-
न पता लगा
के परिवार के
स अधिक
आत्मशक्ति
किया है।
व्यसचिव के
त के चार और
एक मंथ हुई
सीबीआई
में खानों
चला है।
एव पद
थे।
एस
आइए

Bill No. 3/07-08

32

2008

ज्योतिष सार - Compiled and edited
with a commentary in Hindi by पं० रामनाथ
महदु and पं० बालश्रीश्री प्रभुणे - Edited
and published by बाबू वाराणसी प्रसाद at
काशी संस्कृत प्रेस - very brittle condition so
the total pages are tissued, last page
partly damaged in one side, torned in one
side damaging few words and neatly
repaired. Lithoprint edn., Benares,
1938 Vikramera.

1353

55

फार्म हाउस, यहीं पर छह
भूमि पर निर्माणाधीन
स्कूल और इंजीनियरिंग
कॉलेज में लैंडफोरा-पदमपुरी
5 एकड़ का फार्महाउस,

नाम 35.32 लाख आर जुहा सिंह के नाम
31.42 लाख की सम्पत्ति के बारे में पता
चला है। यह भी मालूम हुआ है कि
श्रीमती नीलम ने पिछले वर्ष दिसंबर में
इलाहाबाद बैंक की लखनऊ शाखा से
शेष पृष्ठ 2 पर

JAIPR
HYDRO-PO

(Incorporated on December 31, 1994)

ज्योतिषसार

श्रीयुत्तराबूवाराणसी प्रसादजीकी आज्ञासे
 श्रीरमानाथभट्ट और बालशास्त्री प्रभुणे इ
 होने भाषा टीका सहित बनाया
 सो बहुत शोधके जो जो प्रकरण इसमें ही रहे सो
 वर्षफल इत्यादि सब मिलायको तीसरी बार
 छापा इस ग्रंथको लोभबसकोई छापेन ही छापेगा
 तो कानून मुताबिक सरकारसे सजा पावेगा
 वाराणसी प्रसाद स्थिति योगेन प्रयत्नतः ॥
 काशी संस्कृत मुद्रायामं कि तो यं शिलाक्षरैः १
 श्रीकाशीजीमे ज्ञानवापीके पूर्वफाटकपर
 श्रीविश्वनाथजीके पास श्रीयुत्तरमहाराज शि
 वलाल दुबेजीके मकानमे काशी संस्कृत मुद्राय
 त्रमे छपी जिनको लेना होय उनको इस कार्यके
 सम्पादक श्रीवाबूवाराणसी प्रसादजीके
 पास या कचौरी गलीमे भाई प्रताप
 सिंहजीके दुकानपर मिलेंगी
 मिति आषाढ शुक्ल १५ चंदवार संवत् १९३८
 ताः ११ माहे जुलै सन् १८८१ ई०
 श्रीविश्वेश्वरोजयति नराम्

ज्योतिषसार

श्रीयुत्तरावावाराणसी प्रसादजीकी आज्ञासे
श्रीरमानाथभट्ट और बालशास्त्री प्रभुने इ
होने भाषा टीका सहित बनाया
सो बहुत शोधके जो जो प्रकरण इसमें ही रहे सो
वर्षफल इत्यादि सबमिलायको तीसरी बार
छापा इस ग्रंथको लोभवसकोई छापेन ही छापेगा
तो कानून मुताबिक सरकारसे सजा पावेगा-

वाराणसी प्रसाद स्थानियोगेन प्रयत्नतः॥

काशी संस्कृत मुद्रायामं कितो यं शिलासुरैः ?

श्रीकाशीजीमे ज्ञानवापीके पूर्वफाटकपर
श्रीविश्वनाथजीके पास श्रीयुत्तरमहाराज शि
वलाल दुबेजीके मकानमें काशी संस्कृत मुद्राय
त्रमे छपी जिनको लेना होय उनको इस कार्यके

सम्पादक श्रीवावाराणसी प्रसादजीके
पास या कचौरी गलीमें भाई प्रताप
सिंहजीके दुकानपर मिलेंगी.

मिति आषाढ शुक्ल १५ चंद्रवार संवत् १९३८

ना: ११ माहे जुलई सन् १८८१ ई०

श्रीविश्वेश्वरोजयति नराम्

Date 24/06/08

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

SANS

133

IyO

अथ ज्योतिषसारस्य सूची पत्रम्

| प्रकरण | पृ. पं. | प्रकरण | पृ. पं. | प्रकरण | पृ. पं. |
|--------------------|---------|-----------------------|---------|--------------------|---------|
| ज्योतिःसारस्य प्र | | मन्वाद्यः..... | १४ ९ | नीष्टानक्षत्राणि | २१ १ |
| वर्षीयिका..... | १ १ | अष्टदिशकेस्वामी | १४ २१ | चरनक्षत्राणि | २१ ८ |
| मंगलाचरणं... | ४ १ | ग्रहोक्तौजानी... | १४ २६ | उग्रनक्षत्राणि | २१ १५ |
| संवत्सरनामपरि | | ग्रहोक्तैरक्षरीतादि | | मिश्रनक्षत्राणि | २१ २२ |
| ज्ञानम्..... | ४ १३ | वर्ण..... | १५ २ | अंधादिनक्षत्राणि | २१ २७ |
| संवत्सरनामानि | ५ ३ | वारमेजोजोक्तम् | | नष्टवस्तुपरिज्ञानं | २२ ६ |
| संवत्सरफलम्... | ५ १४ | करनासो..... | १५ ६ | अथदिकज्ञानम् | २२ १३ |
| संवत्सराधिपाः... | ६ ९ | सोमवार..... | १५ १६ | प्रकारान्तरेण गते | |
| अथापनप्रकरण | ६ २२ | मंगलवार..... | १५ २१ | वस्तुलाभालाभ | |
| अयनमेधुभाशु | | बुधवार..... | १५ २७ | ज्ञानम्..... | २२ १८ |
| भकर्म..... | ७ २ | गुरुवार..... | १६ ५ | नक्षत्रमेगवस्तु | |
| संक्रांतिपरत्वेकतु | ७ ७ | शुक्रवार..... | १६ १० | परिज्ञानम्..... | २२ २४ |
| अथमासप्रकरणं | ८ १ | शनिवार..... | १६ १४ | गतवस्तुस्थान | |
| मासोक्तेनामवोदेव | ८ १२ | वारकेदेवताअ | | ज्ञानम्..... | २३ ९ |
| वारपरत्वेमासफला | ९ ७ | धिदेवता..... | १६ १९ | मद्यारंभमुहूर्त | २३ २० |
| अथपक्षः..... | ९ ११ | वारदोषा..... | १६ २५ | वस्त्रधारणन | |
| अधिकमास..... | १० ५ | सामान्यवारक | १७ १ | क्षत्राणि..... | २३ २६ |
| क्षयमास..... | १० ९ | नैराभ्यांगः..... | १७ ६ | दुष्टदिनेपिब- | |
| तिथिप्रकरणम्... | १० १६ | वस्त्रपरिधानम् | १७ १३ | स्त्रधारणम्... | २४ ४ |
| तिथिफलानि... | १० २१ | श्मश्रुकर्म..... | १७ २० | मौक्तिकादिधा | |
| तिथिस्वामी... | ११ १ | विद्यारंभः..... | १७ २८ | रणनक्षत्राणि | २४ ९ |
| तिथिसंज्ञा..... | ११ ५ | नक्षत्रप्रकरणंतत्र | | पुंसवननक्षत्रा | |
| तिथिपालन... | ११ ८ | नक्षत्रानयनप्रकारः | १८ ६ | पि..... | २४ १५ |
| तिथिकार्यणि | ११ १४ | शुभाशुभनक्षत्राणि | १८ १३ | कर्णवेधनक्षत्राणि | २४ २१ |
| अमावास्यायोगः | १२ १५ | नक्षत्रपतयः... | १९ १ | अन्नप्राशनन | |
| अमायाव्यतीषा | | अधोमुखनक्षत्रा | | क्षत्राणि..... | २४ २६ |
| तयोगः..... | १२ २६ | पि..... | १९ ७ | श्मश्रुकर्मणि न | |
| अर्द्धादययोगः... | १३ १ | अर्धमुखनक्षत्राणि | १९ १४ | क्षत्राणि..... | २५ १ |
| रूपलाषष्टी... | १३ ८ | तिथ्यधुवननक्षत्राणि | २० २ | श्मश्रुकर्मणिव | |
| वारुणीयोगः... | १३ १२ | ध्रुवसंज्ञकनक्षत्राणि | २० १० | ज्यानि..... | २५ ८ |
| युगाद्यः..... | १३ २१ | मृदुनक्षत्राणि | २० १६ | अस्यापवादः | २५ १९ |
| युगादिस्वामी... | १४ १ | लघुनक्षत्राणि | २० २२ | दंतबंधननक्षत्राणि | २५ २४ |

| | | |
|---------------------------|-------------------------|-------------------------|
| अन्यद्विषयभुक् ५० १ | तत्त्वाभिवेकन ५० ५ | वनचारीकृत्य ३६ १ |
| मैगयपवादः २५ १७ | सूत्राणि ३१ ११ | पक्षिकृत्यम् ३६ ५ |
| मैजीबं धननक्ष २६ ९ | राजदशमसुहृन् ३१ १६ | भूमिक्रयविक्रयौ ३६ ९ |
| जाणि २६ ९ | मासादेशद्वय ३१ १७ | तत्रलोहदाहः ३६ १३ |
| विद्याह्नस्यजाणि २६ १४ | फलम् ३१ २१ | मलुक्रिया ३६ १९ |
| अग्निहोत्रस्यजाणि २६ १९ | गणिकृतचंद्रोद ३१ २४ | सेतुबंधः ३६ २५ |
| विद्याभ्यासनस्यजा २६ २४ | यफलम् ३१ २४ | कुम्भकारकृत्यम् ३७ १ |
| जाणि २६ २४ | पुष्पनक्षत्रकाश ३१ २४ | काष्ठशिल्पकृत्यम् ३७ ६ |
| औषधप्रहणेन २७ २ | गदोष ३१ २३ | स्वर्णकारकृत्यम् ३७ १० |
| सूत्राणि २७ २ | अष्टदुकूलधारण ३१ २४ | चौरकृत्यम् ३७ १६ |
| सौगोत्यनौशुभा २७ ७ | कौशेयम् ३१ २४ | रत्नसुकभूषा ३७ २२ |
| सुभज्ञानम् २७ ७ | रोमजंबुसूत्रम् ३१ २४ | घटनम् ३७ २२ |
| रोमसुनौप्रमाण २७ १३ | सतूलकंबुकथा ३१ २४ | अथयोगप्रकरण ३८ १ |
| रोगमुक्तिस्त्रावेक २७ २० | रणम् ३१ २४ | योगनामानि ३८ ९ |
| रनस्यजाणि २७ २० | सुवर्णतंतुवस्त्र ३१ २४ | योगवर्ज्यघटिका ३८ १६ |
| रोगमुक्तिस्त्रावेदि २८ ५ | परिधानम् ३१ २९ | करणप्रकरणतत्र ३८ २ |
| नक्षुद्धि २८ ५ | चन्द्रनिर्माणम् ३१ २९ | करणानयनम् ३८ २ |
| लताऔषधीवृक्ष २८ ११ | उपानत्यरिधानम् ३१ २९ | करणनामानि ३८ ७ |
| रोपणनक्षत्राणि २८ ११ | वस्त्रमयगेहनि ३१ २९ | करणस्वामिनः ३८ ११ |
| हृणार्भनक्षत्राणि २८ १८ | माणम् ३१ २९ | करणकृत्यानि ३८ २१ |
| द्वयदेनाचारसन २८ २४ | अष्टगणितारंभः ३१ २९ | भद्रास्वरूपम् ४० १० |
| भ्रमणग्रहणनक्षत्रा २९ २ | व्याकरणारंभः ३१ २९ | भद्रातिथिमान ४० २१ |
| जाणि २९ २ | न्यायशास्त्रारंभः ३१ २९ | भद्राणां मुखपुच्छ ४१ ३ |
| गजसुहृन् २९ १५ | वैद्यविद्यागुरु ३१ २९ | विचारः ४१ ३ |
| अश्वसुहृन् २९ २३ | विद्यारंभः ३१ २९ | भद्राया शरीर ४१ २१ |
| पशूनां पात्रनिषेधः ३० १ | जैनविद्यारंभः ३१ २९ | विभागः ४१ २१ |
| गोकपविक्रयनक्षत्राणि ३० ६ | हिंसाद्वन्द्वेन ३१ २९ | फलमाह ४१ २५ |
| जाणि ३० ६ | सुहृन् ३१ २९ | वस्तुतत्त्वार्थम् ४१ २५ |
| हस्तकाशदिसंय ३० ११ | पारसीविद्यारंभः ३१ २९ | पञ्चलवासज्ञान ४१ २५ |
| हस्तसुहृन् ३० ११ | रत्नपरीक्षा ३१ २९ | उत्तम् ४१ २५ |
| हस्तप्रवाहनस्यजाणि ३० १८ | नटक्रिया ३१ २९ | वारपरत्वेनामज्ञा ४१ २५ |
| बीजवापनसुहृन् ३० २४ | अन्नादिपाक ३१ २९ | नम् ४१ २५ |
| सर्पदंशनेवर्ज्याणि ३१ १ | क्रिया ३१ २९ | अथसंक्रांतिप्रकरण ४२ १६ |
| शायनाभ्यासनस्यजा ३१ ६ | रससेवनम् ३१ २९ | संक्रांतिफलम् ४२ २ |

| पृ. पं. | पृ. पं. | पृ. पं. |
|-----------------------------------|----------------------------|-------------------------------------|
| कालफलम्..... ४३ १० | रजस्वलाधर्म ५४ २४ | मूलफल... ६३ २३ |
| संक्रांतिमुखम् ४३ २० | रजस्वलास्नान ५५ ९ | मूलवास... ६४ ८ |
| करणपरत्वेसंक्रांतिमुखं..... ४३ २५ | अशर्माधानप्रक ५६ ४ | आश्लेषानक्षत्र ६४ १४ |
| अशर्माधानप्रक ५६ ८ | गर्भाधानेत्याज्यम् ५६ ९ | द्वादशराशिनाम ६४ २५ |
| गमनम्..... ४४ १४ | ऋतुप्राप्तीसेसोल ५६ २१ | राशिस्वामी... ६४ २८ |
| स्थितिः..... ४४ १९ | दिनप्रेषुभाशुभ ५६ २१ | ग्रहोकेउच्चनीच ६५ ३ |
| फलम्..... ४६ १ | गर्भाधानकोशुभा ५७ ४ | ग्रहोकीक्रूरशुभ ६५ १२ |
| मूर्तयः..... ४६ ४ | शुभदिन..... ५७ ४ | संज्ञा..... ६५ १२ |
| दूसराप्रकार ४७ १ | गर्भाधानेतिथिवा ५७ १३ | ग्रहोकीजातिसंज्ञा..... ६५ १७ |
| संक्रांतिनक्षत्रफलं ४७ ९ | रमाह..... ५७ १३ | ग्रहोकीस्त्रीपुरुषसंज्ञा..... ६५ २२ |
| जन्ममासतिथिनक्षत्रफलं..... ४७ १४ | गर्भाधानेलग्रशुद्धिः ५७ २२ | ग्रहोकारूप... ६६ ४ |
| संक्रांतिरूपम् ४७ १८ | संस्कारः..... ५८ ५ | ग्रहोकावर्ण... ६६ ९ |
| संक्रांतिकेहाथमेक ४७ २४ | वारफलम्... ५८ १४ | ग्रहोकीदृष्टी... ६६ १७ |
| संक्रांतिपुण्यकालं ४८ ६ | सीमंतोन्नयनम् ५८ १९ | दिशास्वामी... ६६ २७ |
| अथग्रहणप्रकरणं ४८ १२ | पक्षच्छिद्रातिथी ५९ ९ | द्वादशभावसंज्ञा ६७ ५ |
| सूर्यग्रहणम्... ४८ १७ | मासेश्वरज्ञान ५९ १५ | केंद्रादिद्वादशभावकीसंज्ञा... ६७ १० |
| राशीकोशुभाशुभ ४८ २३ | गर्भिण्यानिषेधः ६० २ | सामान्यद्वादशराशिफल... ६७ २२ |
| दूसराप्रकार... ४९ १ | गर्भिणीकोपुत्रवा ६० १० | जन्मभूमिज्ञान ६८ २ |
| अथऋतुप्रकरणं ४९ ६ | कन्याहोनेकाप्रश्न ६० १० | प्रसवज्ञान... ६८ २६ |
| मासफल... ४९ १४ | प्रसूतिस्थानेगम ६० १६ | जन्मकालेमृत्युयोगफलं... ५१ ३ |
| तिथिफल... ४९ २६ | गर्भकेलक्षण (नं ६० २३) | कारक... ६९ २ |
| वारफल... ५० १२ | दंतफलम् ६१ ४ | माताकोअशुभ ७० ४ |
| नक्षत्रफल... ५० १९ | उपसूतिकाआह ६१ ८ | जन्मभूमिज्ञान ७३ १३ |
| योगफलं... ५१ ३ | जन्मकालफल ६१ २४ | वर्णसंकरज्ञानम् ७३ १३ |
| करणफलं... ५१ १४ | गंडांतफल... ६१ २८ | पुरुषजातक ७४ १ |
| राशिफलं... ५२ ७ | तिथिगंडांत ६२ १ | नराकारचक्र... ७५ १० |
| होराफलं... ५२ १७ | लग्नगंडांत ६२ ६ | पुरुषजातकको ७५ २८ |
| लग्नफलम्... ५३ १ | नक्षत्रगंडांत ६२ १० | स्त्रीजातकम् ७६ १ |
| ग्रहोकाफल... ५३ १० | कृष्णाचतुर्दशीफल ६२ १६ | |
| रक्तफलं... ५३ १४ | अमावास्याफल ६२ २५ | |
| कालफलम्... ५४ ७ | दिनसंयफल ६३ ५ | |
| वस्त्रफलम्... ५४ १४ | ज्येष्ठनक्षत्रफल ६३ १२ | |

| ५० | ५० | ५० |
|-----------------------|------------------------|--------------------------|
| होना नक को वृत्त ५० १ | नित्यदशक्रम १० ६ | प्राचीनामंत्र १०० १६ |
| अथाष्टोत्तरीदशा ५० १० | अथकोनप्रवृत्त १० २० | कर्णवेध १०० २२ |
| गहोकी अंतर्दशा ५० १६ | गम् १० २० | कटिस्तम्बबंधन १०० २६ |
| विंशोत्तरीमहादशा ५० १ | स्थानपरत्वेफल १० १९ | अथाष्टोत्तरी १० २३ |
| दशाकी वर्षसंख्या ५० १ | गोचरचक्रम् १० २० | चौलम् १०० १० |
| भोग्याभोग्य ५० २ | वेधचक्रमाह १० २० | चौलवारपरत्वे १० २० |
| विंशोत्तरीक्रम ५० ६ | वेधचक्रम् १० १० | विद्यार्थः १० १० |
| महादशांतर्दशा ५० १ | तारामाह १० ११ | मौजीबंधनसूत्र १० १० |
| काफल ५० १ | चंद्रबल १० २० | त १० २० |
| सूर्यकीदशा ५० २ | नारोकेतान १० २० | वर्षसंख्या १० १० |
| चंद्रकीदशा ५० ७ | गहोकीजप १० २३ | मौजीबंधनसंख्या १० १० |
| भौमकीदशा ५० १२ | ख्या १० २३ | व १० १० |
| राहूकीदशा ५० १० | ग्रहपीडाविचार १० १० | वेधपरत्वेनक्ष १० १० |
| गुरुदशा ५० २ | पार्थ १० १० | चक्र १० १० |
| शनीकीदशा ५० ७ | अथजातकुर्म १० १० | वृत्त्यनसंख्या १० १० |
| बुधकीदशा ५० १२ | अथकहद्विचक्र १० १० | मौजीमेरुग्रहसूत्री १० १० |
| केतुकीदशा ५० १० | मिष्टम् १० १० | गुरुबल १० १० |
| शुक्रकीदशा ५० १२ | अथअवकहद्वि १० १० | गुरुग्रहयोग १० १० |
| अथयोगिनीदशा ५० १० | चक्रनामानि १० १० | शुक्राणावसंख्या १० १० |
| योगिनीस्वामी ५० ३ | अथजातकुर्म १० २६ | संस्कारः १० १० |
| योगिनीदशाक्रम ५० २ | स्वानफल १० २४ | अथविराहप्रक १० १० |
| वर्षसंख्या ५० १३ | अथनामुकुर्म १० ३१ | रणम् १० १० |
| अंतर्दशा ५० १० | नामक्रमेणिसंख्या १० १० | तन्माहोदैवज्ञान १० १० |
| दशापरत्वेफल ५० १ | प्राणि १० १० | जनम् १० १० |
| विंशोत्तरीदशाका ५० १ | मनकर्मसुदृष्ट १० १० | विवाहप्रश्न १० १० |
| फल ५० ६ | योगाः १० १० | प्रश्नसमयेभक्ष १० १० |
| धान्यादशाकाफल ५० ११ | मंत्रकारोहण १० १० | आनि १० १० |
| धामरीदशाफल ५० १६ | लेलाहोहण १० १० | अथयोगाः १० १० |
| अद्विजादशाफल ५० २० | जलपूजन १० १० | अथयोगाः १० १० |
| उत्कादशाफल ५० २६ | दुग्धपानसुदृष्ट १० १० | योगाकुयोगाः १० १० |
| सिद्धादशाफल ५० ३ | तामूलमसण १० १० | द्वयप्रमाणमाह १० १० |
| सकलादशाफल ५० ९ | सूर्यवलोकन १० १० | मंगलविचार १० १० |
| सूरीदीनोदिनद ५० १० | भूभुववेशन १० १० | भौमपरिहार १० १० |
| शा ५० १० | भूमिशोधन १० १० | ज्योतिषविचार १० १० |

कन्यालक्षणानि ११६२० स्त्रीपुरुषकारक ११६२० स्त्रीपुरुषकारक ११६२० स्त्रीपुरुषकारक ११६२० स्त्रीपुरुषकारक
 वरलक्षणानि ११७५ ग्रगुणजाननेकाच ११७५ ग्रगुणजाननेकाच ११७५ ग्रगुणजाननेकाच ११७५ ग्रगुणजाननेकाच
 वरदोषाः ११७५ वर्गज्ञानम् ११७५ वर्गज्ञानम् ११७५ वर्गज्ञानम् ११७५ वर्गज्ञानम्
 वर्णाष्टगुणनाम ११७५ श्रीतिज्ञान ११७५ श्रीतिज्ञान ११७५ श्रीतिज्ञान ११७५ श्रीतिज्ञान
 वर्ण ११७५ दुष्टकूटदान ११७५ दुष्टकूटदान ११७५ दुष्टकूटदान ११७५ दुष्टकूटदान
 वश्य ११७५ स्वयंवरकाल ११७५ स्वयंवरकाल ११७५ स्वयंवरकाल ११७५ स्वयंवरकाल
 वशावश्यज्ञानम् ११७५ विवाहेनक्षत्र ११७५ विवाहेनक्षत्र ११७५ विवाहेनक्षत्र ११७५ विवाहेनक्षत्र
 ताराबल ११७५ इकईसमहादोष ११७५ इकईसमहादोष ११७५ इकईसमहादोष ११७५ इकईसमहादोष
 योनि ११७५ अस्तोदयकाल ११७५ अस्तोदयकाल ११७५ अस्तोदयकाल ११७५ अस्तोदयकाल
 ग्रहमैत्री ११७५ अवस्थाविचार ११७५ अवस्थाविचार ११७५ अवस्थाविचार ११७५ अवस्थाविचार
 गण ११७५ अस्तमेवज्यकर्म ११७५ अस्तमेवज्यकर्म ११७५ अस्तमेवज्यकर्म ११७५ अस्तमेवज्यकर्म
 भूकूट ११७५ गुरुविचार ११७५ गुरुविचार ११७५ गुरुविचार ११७५ गुरुविचार
 मृत्युषडाष्टक ११७५ दोषलक्षण ११७५ दोषलक्षण ११७५ दोषलक्षण ११७५ दोषलक्षण
 श्रीतिषडाष्टक ११७५ अष्टमलग्न ११७५ अष्टमलग्न ११७५ अष्टमलग्न ११७५ अष्टमलग्न
 द्विर्द्वादश ११७५ अष्टममुहूर्त ११७५ अष्टममुहूर्त ११७५ अष्टममुहूर्त ११७५ अष्टममुहूर्त
 नाडी ११७५ यामार्ध ११७५ यामार्ध ११७५ यामार्ध ११७५ यामार्ध
 नक्षत्रचरणज्ञान ११७५ चंद्रविचार ११७५ चंद्रविचार ११७५ चंद्रविचार ११७५ चंद्रविचार
 गुणमेलनप्रकार ११७५ ग्रहणउत्पातनक्षत्र ११७५ ग्रहणउत्पातनक्षत्र ११७५ ग्रहणउत्पातनक्षत्र ११७५ ग्रहणउत्पातनक्षत्र
 वर्णकागुणवश्य ११७५ नक्षत्र ११७५ नक्षत्र ११७५ नक्षत्र ११७५ नक्षत्र
 कागुण ११७५ लक्षादोष ११७५ लक्षादोष ११७५ लक्षादोष ११७५ लक्षादोष
 ताराकेगुण ११७५ वेधमाह ११७५ वेधमाह ११७५ वेधमाह ११७५ वेधमाह
 योनीकेगुण ११७५ पंचशलाका ११७५ पंचशलाका ११७५ पंचशलाका ११७५ पंचशलाका
 ग्रहमैत्रीकेगुण ११७५ सप्तशलाका ११७५ सप्तशलाका ११७५ सप्तशलाका ११७५ सप्तशलाका
 गणकेगुण ११७५ वेधनक्षत्रमाह ११७५ वेधनक्षत्रमाह ११७५ वेधनक्षत्रमाह ११७५ वेधनक्षत्रमाह
 भूकूटकेगुण ११७५ वेधप्रकार ११७५ वेधप्रकार ११७५ वेधप्रकार ११७५ वेधप्रकार
 नाडीकेगुण ११७५ क्रान्तिसाम्य ११७५ क्रान्तिसाम्य ११७५ क्रान्तिसाम्य ११७५ क्रान्तिसाम्य
 वर्णफल ११७५ चक्रकाक्रम ११७५ चक्रकाक्रम ११७५ चक्रकाक्रम ११७५ चक्रकाक्रम
 योनीफल ११७५ एकार्गल ११७५ एकार्गल ११७५ एकार्गल ११७५ एकार्गल
 गणफल ११७५ जामित्रदोष ११७५ जामित्रदोष ११७५ जामित्रदोष ११७५ जामित्रदोष
 कूटफल ११७५ अश्विन्यादीनां वि ११७५ अश्विन्यादीनां वि ११७५ अश्विन्यादीनां वि ११७५ अश्विन्यादीनां वि
 नाडीफल ११७५ षष्ठी ११७५ षष्ठी ११७५ षष्ठी ११७५ षष्ठी
 असकूट ११७५ विषनाडी ११७५ विषनाडी ११७५ विषनाडी ११७५ विषनाडी
 नक्षत्रमेलन ११७५ तिथीविषयटी ११७५ तिथीविषयटी ११७५ तिथीविषयटी ११७५ तिथीविषयटी
 वर्णपरत्वेमेलन ११७५ वारविषयटी ११७५ वारविषयटी ११७५ वारविषयटी ११७५ वारविषयटी

| | | | | | | | | |
|-----------------|-----|----|------------------|-----|----|-----------------|-----|----|
| कालवनावने | १५० | १ | पुनर्विवाह | १५१ | ७ | वर्गपाले | १५५ | १६ |
| काक्रम | १५० | १२ | मुकुटविचार | १५६ | २० | फल | १५५ | २० |
| सूर्यऔरलघु | १५० | १ | पदिकारिचार | १५६ | १ | नक्षत्रपरलेख | १५५ | २० |
| कपशीहोयनोड | १५० | १ | पदिकागमनफल | १५६ | १० | यसाधन | १५५ | २५ |
| हचटी | १५० | १ | लग्नविचार | १५६ | १० | गृहराशी | १५६ | ५ |
| लग्नशुद्धीदेखना | १५० | ६ | गोधूलीलग्न | १५६ | २३ | गृहकागमल्या | १५६ | ५ |
| त्रिंशांश | १५० | १२ | गोधूलीलग्न | १५० | १ | तनेकाप्रकार | १५६ | १२ |
| आदौग्रहदेखना | १५० | २० | वधूप्रवेश | १५६ | १२ | गृहकेनाम | १५६ | २१ |
| गशिस्वामी | १५० | १ | उक्तमासादि | १५० | १० | अंशल्यावनेका | १५६ | २१ |
| होराकथन | १५० | २ | वधूप्रवेश | १५० | २२ | प्रकार | १५६ | २० |
| देष्माणकथन | १५० | ७ | शुद्धादिकोपुन | १५० | २२ | प्रकार | १५६ | २० |
| त्रिंशांश | १५० | १४ | विवाह | १५१ | ८ | गृहद्वार | १५७ | ९ |
| सप्तशंश | १५१ | १ | इतपत्रपुहर्त | १५१ | २४ | गृहयोजना | १५७ | १४ |
| लग्ननवमाश | १५१ | २ | अथवास्तुप्रकरण | १५२ | ४ | अल्पदोष | १५७ | २३ |
| द्वारांश | १५२ | १ | ग्रामादिअनुकूल | १५२ | ५ | वास्तुवककाना | १५७ | २७ |
| विषमत्रिंशांश | १५२ | ६ | ग्रहवरु | १५२ | ९ | गृहारंभकास | १५८ | ३ |
| समत्रिंशांश | १५२ | ९ | ग्रहवर्ग | १५२ | १३ | वासफल | १५८ | ७ |
| पुत्रवर्ग | १५२ | १४ | घरभुक्ति | १५२ | २३ | सुखदिशापरले | १५८ | १५ |
| उक्तांश | १५३ | ३ | ग्रामअनुकूल | १५३ | २७ | गृहारंभेनक्षत्र | १५८ | २१ |
| वर्गविचार | १५३ | ८ | गृहजातक | १५३ | ९ | दृष्टचक्र | १५९ | ३ |
| लग्नांशफल | १५३ | १५ | वर्गस्वामी | १५३ | १६ | शिलान्यास | १५९ | १२ |
| वर्गेनयलग्न | १५३ | २० | काकिणी | १५३ | २२ | नक्षत्रपरलेख | १५९ | १२ |
| ह्नीविचार | १५४ | ३ | भूमिलक्षण | १५३ | २६ | लान्यास | १५९ | १५ |
| वैषम्यभंगविचार | १५४ | १२ | भूमिपरीक्षा | १५४ | ३ | शेषकासुख | १५९ | २१ |
| विवाहप्रकार | १५५ | १ | लोहनेकाप्रकार | १५४ | ८ | दुष्टयोग | १६० | ३ |
| ब्राह्मविवाह | १५५ | ५ | शुभभूमीअशुभ | १५४ | १२ | कर्मचक्र | १६० | ७ |
| दैवविवाह | १५५ | १० | भूमी | १५४ | १२ | सिंभचक्र | १६० | १६ |
| आर्षविवाह | १५५ | १२ | सातपुर्ती | १५४ | १८ | धनरखनेका | १६० | २७ |
| राजापत्यविवाह | १५५ | १५ | नक्षत्रसेचंद्रवि | १५५ | २२ | मुहूर्त | १६० | २७ |
| आसुरविवाह | १५५ | १९ | चार | १५५ | २२ | पानचक्र | १६० | २७ |
| माधवविवाह | १५५ | २२ | चंद्रविचार | १५५ | २८ | आयचक्र | १६० | २७ |
| राक्षसविवाह | १५५ | २५ | आयदिसाधन | १५५ | २८ | यहचक्र | १६० | २७ |
| क्षत्रविवाह | १५५ | २७ | सेत्रफल | १५५ | २८ | गृहप्रवेशकाक | १६० | २७ |
| पिशाचविवाह | १५५ | २९ | आयदिकनाम | १५५ | २८ | कलशचक्र | १६० | २७ |

| | ए. पं. | ए. पं. | ए. पं. |
|--------------------|--------------------------|--------|--------------------------|
| वामार्कलक्षण | १७२ २५ स्तेभक्षण | १८२ १७ | पत्नीपतन १९२ १६ |
| एहसुद्धी | १७३ ५ दिग्गोहदम् | १८२ २४ | शरीरस्थानपर |
| एहामुषप्रमाण | १७३ २० पंचकवर्ज्य | १८३ १ | अंगसुराण १९३ २१ |
| शल्यशोधन | १७४ ११ सन्मुखनद्र | १८३ ६ | अंगसुराणफल १९४ २ |
| प्रश्नाक्षरफलं | १७४ २३ चंद्रविचार | १८३ १२ | स्त्रीका अंगसुराण १९५ १ |
| अथयात्राप्रकरणं | १७५ १३ कालविचार | १८३ २२ | दुष्टस्थानेसुराण १९५ ६ |
| शुक्रसन्मुख | १७६ १४ योगिनीविचार | १८३ २७ | नेत्रसुराण १९५ ११ |
| शुभाशुभफल | १७६ २२ कालराहु | १८४ ११ | त्रिभूलपंच १९५ १९ |
| घातचंद्र | १७७ १ सुधितराहु | १८४ २५ | फल १९६ १ |
| घातप्रकार | १७७ ५ कालस्थानवि | | परिपविचार १९६ ७ |
| कालचंद्र | १७७ २५ चार | १८५ ८ | कालज्ञान १९६ १६ |
| तिथिपरत्वेलग्न | पंथाराहु | १८५ २३ | पाशज्ञान १९७ ७ |
| कात्याग | १७८ ८ धर्ममार्गकाफल | १८६ ४ | गमनेलग्नसुद्धी १९७ १३ |
| यात्राकोनक्षत्र | १७८ १७ अर्थमार्गकाफल | १८६ २४ | दूसरा प्रकार १९७ २० |
| मध्यमनक्षत्र | १७८ २३ काममार्गकाफल | १८७ १२ | प्रथमस्थान १९८ १ |
| वर्जनक्षत्र | १७८ २७ मोक्षमार्गकाफल | १८७ २८ | द्वितीयस्थान १९८ १० |
| शुभाशुभवार | १७९ ९ पंथाराहुकेकर्म | १८८ १५ | तृतीयस्थान १९८ २० |
| होराकथन | १७९ १७ गर्गाचार्यमुहूर्त | १८८ २० | चतुर्थस्थान १९८ २५ |
| सूर्यहोरा | १८० ५ शुभाशुभवाहन | १८८ २५ | पंचमस्थान १९९ ३ |
| चंद्रहोरा | १८० ११ चक्रमुहूर्त | १८९ १३ | षष्ठस्थान १९९ ७ |
| मंगलहोरा | १८० १७ फल | १८९ १९ | सप्तमस्थान १९९ १३ |
| बुधहोरा | १८० २२ भ्रमणादलग्न | | अष्टमस्थान १९९ १९ |
| शुक्रहोरा | १८० २७ हर्त | १८९ २३ | नवमस्थान १९९ २५ |
| शुक्रहोरा | १८१ ४ हैवरमुहूर्त | १९० ३ | दशमस्थान २०० ७ |
| शनिहोरा | १८१ ९ घकाडमुहूर्त | १९० ७ | एकादशस्थान २०० १३ |
| प्रश्न | १८१ १५ वारपरत्वेस्तरा | | द्वादशस्थान २०० १८ |
| वस्त्रधारण | १८१ १९ कुन | १९० ११ | गमनेत्याज्य २०१ १ |
| पूर्वदिशामेवर्ज्य | १८१ २४ वारपरत्वेछाया | | गमनेशाला २०१ ८ |
| दक्षिणदिशामेव | शकुन | १९० १८ | दिग्द्वारमाह २०१ १२ |
| ज्य | १८१ २८ काकशब्दशकुन | १९० २८ | पूर्वादीनांस्वामी २०१ १७ |
| पश्चिमदिशामेवर्ज्य | १८२ ४ पिंगलाशब्दशकुन | १९१ ८ | लालादियोग २०१ २३ |
| उत्तरदिशामेवर्ज्य | १८२ ८ छायाशकुन | १९१ १३ | यात्राविचार २०२ ९ |
| विदिकुशूल | १८२ १२ सिक्काशकुन | १९१ २१ | सर्वविचार २०२ १४ |
| शूलदोषनाशकेन | पत्नीशब्दशकुन | १९२ ८ | यात्रायोग २०२ १९ |

| | |
|--|------------------------|
| शुद्धीकयोगचक्रं २०३ २५ नौकाकेस्थान | वेधविचारः २४४ ९ |
| कामधेनुवीमचक्रं २०४ १ मेघप्रह | सुहादशा २४४ १७ |
| पूर्वतन्त्रयोगचक्रम् २०४ ८ दीपिकाचक्रम् २०५ २६ | सुधाफलम् २४५ १ |
| मृगेश्वरयोगचक्रं २०४ १५ कूपचक्रं २०५ १७ | ननुस्थान २४५ ६ |
| कैटवयोगचक्रं २०४ २० बनीवालगायने | धनस्थान २४५ १५ |
| पाशुपतयोगचक्रं २०५ १ काकुहूर्त | तृतीयस्थान २४५ १६ |
| जन्मदेदिनकर्म २०५ २५ शिक्काचक्रम् | चतुर्थस्थान २४५ २१ |
| शक्रमेवाहनविचार २०६ ३ काकुहूर्त | पंचमस्थान २४५ २७ |
| यानासे आयकोश | षष्ठस्थान २४६ ५ |
| हयवेष्टा २०६ १६ क्षफल २०६ १९ | सप्तमस्थान २४६ ११ |
| मत्स्यविधितदुष्ट | आषाढ १५ कोला |
| शकुन २०७ १ सुपरीक्षा २०७ १६ | अष्टमस्थान २४६ १७ |
| यात्राफलमेतज | केतुद्वयफलं २०८ २० |
| मशकुन २०८ १६ कृतेतुद्वयफल २०९ १ | नवमस्थान २४६ २१ |
| अश्वमिश्रप्रकरणं २१० १५ अश्वअंशविद्या २१० ८ | दशमस्थान २४६ २७ |
| अनंदादि योगाः २१० १४ वर्षफलप्रमाणं | हादशस्थान २४७ १० |
| व्यादियोगाः २१२ १ नैकाप्रकार २१२ २१ | होदशभावक |
| लक्ष्मचक्रम् २१३ १ तिथ्यान्वयप्रमाणम् २१३ १३ | लभाह २४७ १५ |
| राक्षसीचक्रम् २१४ ३ तर्कनक्षत्रयोग | ग्रहोक्तप्रकृति २४७ २७ |
| मोक्षमहिषीचक्रम् २१४ २१ नक्षत्रम् २१५ २२ | अथप्रश्नप्रकरणं २१५ १० |
| अश्वचक्रं २१५ ५ ग्रहचालन २१५ ११ | अथ २५५ २७ |
| गजचक्रं २१५ १ ग्रहसाधन २१५ १७ | पंचाप्रश्न २५६ ७ |
| पालकीचक्रं २१५ १० अवातभोगन | शेषकाफल २५६ १७ |
| कुम्भचक्रं २१७ ४ नावनेकीरीति २१७ २१ | दूसराप्रकार २५६ २५ |
| पंचकचक्रं २१७ १० वर्षप्रवेशेचक्रम् | कार्यकार्यप्रश्न २५७ ३ |
| वाणधनुषचक्रम् २१८ १ साधन २१८ १७ | अंकप्रश्न २५७ ११ |
| रथचक्रं २१८ ११ लघुसाधन २१८ १ | नवग्रहयंत्र २५७ २५ |
| नेलकाचक्रं २१९ १ अश्वसुधा २१९ १३ | करनक्षत्रचक्रम् |
| ऊरुकाचक्रं २१९ २ अश्वपंचाधिकारि २१९ १५ | पंचाप्रश्न २५८ ६ |
| रुपिमुहूर्त २२० १ तर्कसाधनविशेष | नक्षत्रसुप्रश्न २५८ १५ |
| हस्तचक्रम् २२० १० शाः २२० १४ | पार्थिवीप्रश्न २५८ २७ |
| नौकाचक्रं २२० २१ विमानकीचक्रम् २२० २१ | सुदिप्रश्न २५९ २ |
| नौकाचक्रं २२० २४ नवग्रहवासः २२० २८ | लघुसंमनविधि |
| केकाहोत्रप्रचक्रम् २२१ ७ विमानकीचक्रं | तत्रम् २५९ १३ |

| | |
|--------------------------------|--------|
| हृदयलक्षकी सज्ञा..... | २५९ १५ |
| अंकप्रश्न | २६० ७ |
| रोगी प्रश्न | २६० १५ |
| रोगप्रश्नलग्नपरत्वे..... | २६० २२ |
| पञ्चन्यप्रश्न | २६१ ६ |
| वृद्धिलक्षण | २६१ १४ |
| पञ्चन्यनक्षत्र | २६१ २८ |
| स्त्रीपुंसकपुरुषव्रत | २६२ ४ |
| अल्पवृद्धिलक्षण | २६२ ११ |
| सूर्यचन्द्रनक्षत्रसंज्ञा | २६२ १४ |
| घरसेपशुनिकसजायनि- | |
| स्काप्रश्न | २६२ २४ |
| संज्ञानौवारफल | २६३ ३ |
| राजभंगदिकयोग | २६३ ७ |
| सूर्यचंद्रकामंडलुविचार | २६३ १४ |
| इंद्रधनुष्यादिपोग | २६३ २० |
| ग्रहचक्रप्रकरणम् | २६३ २५ |
| पुरुषचक्रमेनक्षत्रदेखना | २६७ १ |
| लग्नशुद्धीपंचकदेखना | २६७ १४ |
| वारपरत्वेपंचक | २६७ २२ |
| दिनमानरात्रिमान | २६७ २६ |
| दिनकितनाआयासोदेखना | २६८ ६ |
| रात्रिकितनीभईसोदेखना | २६८ १६ |
| अंतरंगबहिरंगनक्षत्र | २६८ २१ |

इति सूचीपत्रम्
समाप्तं

अथ ज्योतिषसारः प्रारभ्यते

श्रीगणेशाय नमः

अथ ज्योतिःसारस्य पूर्वपीठिका ॥ श्रीगुरुं ज्ञानदातारं नत्वा
 गर्गादिकान्मुनीन् ॥ ज्योतिःसारस्य व्याख्यानं तन्वते भाषया स्फुटम्
 ॥१॥ कल्पके आदिमें परमेश्वर ने पूर्वकल्पीय जनों के कर्मानुसार चतुर्वि
 ध सृष्टि रचना करके उनके निमित्त वैरादि चतुर्दश विद्या प्रगट कीया उ
 न चौदह १४ विद्या मे ब्राह्मण सत्रिय वैश्य शूद्र यह चारों वर्णों के धर्म औ
 र ब्रह्मचर्य ग्रहस्थ वानप्रस्थ संन्यासी ये चारों आश्रमों के धर्म कहे हैं
 जिसमे अपने २ स्वधर्म मे सम्पूर्ण लोकरहें और उत्तम गती को प्राप्त
 होवें सो प्रसंग से चतुर्दश विद्या का नाम भी लिखते हैं ऋग्वेद यजुर्वेद
 सामवेद अथर्वणवेद ये ४ वेद और उन्ही चारों वेदों के ६ अंग होते हैं शि
 क्षा कल्पसूत्र व्याकरण निरुक्त ज्योतिष कुंड-येद अंग और चार
 वेद मिलकर १० हुवे भीमांसा ओम्याय वो पुराण वो धर्मशास्त्र ये
 चारों मिलकर १४ विद्या हुई और जो कोर्द आयुर्वेद धनुर्वेद गां
 धर्व अर्थशासन ये चार उपवेद को जुटागिनते हैं सो अष्टादश वि
 द्या मानते हैं जो चौदही विद्या सिद्ध रखते हैं सो ये चारो उपवे
 द को क्रम से चार ४ वेद ही मे अंतरभाव करते हैं सो वेद त्रिकांड
 विषय है कहिये कर्म उपासना ज्ञान ये ३ विषय हैं तीनों मे कर्म का
 उजो है उसमे यज्ञ यागादिक कहे हैं ॥ ॥ वेदाहिय जार्थमभि
 प्रवृत्ताः कालानुपूर्वाविहिताश्च यज्ञाः ॥ तस्मादिदं कालविधानं शा
 स्त्रं योज्योतिषं वेदसावेदयज्ञानिति ॥ ॥ इस्का अर्थ वेद जो है सो
 यज्ञ के लिये प्रवृत्त है वह यज्ञ काल ज्ञान बिना होने नही सकता इस
 लिये ज्योतिष शास्त्र को अवश्य जानना चाहिये जो कोर्द प्रश्न करे कि
 यज्ञ यागादिको मे काल ज्ञान का क्या जस्तूर है तो उस्को कहना कि अ
 ४ वर्ष ब्राह्मण मुपनयीत वसंते ब्राह्मणो ग्रीनादधीत दर्शयैर्ण

मासाभ्यां यजेत इत्यादिकमुत्तियोगेनैव कृतुर्दशादिकज्ञानदेविना
यज्ञादिकहोनेनहीसकते तस्मात् यज्ञादिकोंमेकालकाज्ञान अ
त्यावश्यकहै इसलिये ज्योतिषशास्त्रको अवश्यजाननाचाहिये
वह ज्योतिषशास्त्र सिद्धांतसंहिता होरा इसभेदसेस्वंप्रया
त्मक वेदकानिर्मलचक्रहै जिसकेजाननेसे सम्पूर्ण ज्योतिष
शास्त्रादिकर्मसिद्धहोताहै ऐसाजो ज्योतिषशास्त्रहै उसके अधिकारी
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य येतीनोंहीहैं शूद्रकोतो अध्ययनकरने
मेंमहान दोषलिखाहै ॥ श्लो० स्नेहाहो भाच्यमोहाच्योविप्रोज्ञान
तोषिवा ॥ शूद्राणामुपदेशंतु दयात्स नरकं व्रजेदिति ॥ अर्थ जोविप्र
स्नेहसेनालोभसेवामोहसे शूद्रोंको ज्योतिषशास्त्रादिकोंकाउपदे
शकरताहै सोनसकाभागी होताहै ऐसागर्गक्षत्रीनेलिखाहै तस्मा
त् शूद्रोंने अध्ययन अध्यापनकभी नहीकरना और क्षत्रिय वैश्यों
को अध्ययनमात्रका अधिकारहै अध्यापनकाउनकोभीनिषेध
है अध्ययन अध्यापनका अधिकारी ब्राह्मणहीहै तस्मात् जो ब्रा
ह्मण ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन अध्यापनकरताहै उसकोभी पु
ण्यलिखाहै ॥ निहंत्य शेषं कलुषं जनानां षडब्जं धर्मसुखास्पदं त्या
दिति ॥ अर्थ जोविप्रदसशास्त्रको गुरुमुखप्रवणद्वारा सम्यक्प्रका
रसोजानताहै और अधिकारीशिष्योंको पढावताहै सोमनुष्योंके
अशेषपापकोनाशकरताहै और धर्मशास्त्रोक्त षडब्जं धर्मसुख
काप्राप्तहोताहै और सिद्धांतमें भीलिखाहै ॥ योज्योतिषवेत्तिनर
स्तसम्यक् धर्मार्थमोक्षान् लभते यश्चेति ॥ अर्थ जोविप्रगुरुमुख
से उत्तमप्रकारसे ज्योतिषशास्त्र होजानताहै सो धर्म अर्थ काम
मोक्ष यहचतुर्विधपुरुषार्थकोप्राप्तहोताहै और यशभी प्राप्तहोताहै
और गर्गक्षत्रीनेलिखाहै ॥ ग्रंथतश्चार्थतश्चैव न ह्येतत्तं जानाति यो हि
जः ॥ अग्रभुक् स भवेच्चोद्विष्ट पूजितः पंक्तिपावन इति ॥ अर्थ ग्रंथसे अ
र्थसे जोहिज यहसम्पूर्ण ज्योतिषशास्त्रकेतत्वकोजानताहै सो ब्रा
ह्मणदिक्कमें अग्रभुक् होताहै और पूजनाहै पंक्तिपावन होताहै ऐसे
नाना प्रकारके फल अध्ययन अध्यापनकरनेवालेकोसूच्यपिहोताहै

कौंमेलिरखेहैं दस्ये यहस्पष्टहोताहै कि इसशास्त्रकेजाननेकापरम
फल निरतिशयानंदवाप्तिलक्षण मोक्षप्राप्तहोताहै अबजोकोईकहे
कि धर्मशास्त्रमेज्योतिषीको औरवैद्यकोआहुभोजनकरवावनेमेम
हानदोषलिराहै औरधर्मकार्यमेमहान्निंदालिरखीहैतोआहु
दिकोंमेज्योतिषियोंकोनिमंत्रणकरनानचाहिये तबपूर्ववचनमे
आहुमोभोजनकरवावनेकोगर्गकृषीनेकिस्तरहसेलिराहै
तोप्रश्नकर्त्ताकोकहनाकि तुमनेगर्गकृषीकेअभिप्रायकोनजा
नकेप्रश्नकियाउनकाअभिप्राययहहैकिजोबिनागुरुमुखसेशा
स्त्रकोनजानकोदैवज्ञताकोप्राप्तहोताहैसोहीपंक्तिदूषकपापीन
सत्रसूचककहलाताहैउसीकोधर्मशास्त्रमेआहुभोजनकरवाव
नेकोनिषेधलिराहैयहअभिप्रायअपनेवचनकाआपहीगर्गकृ
षीस्पष्टलिरखतेहैं॥ श्लो० अविदित्वैवयःशास्त्रंदैवज्ञत्वंप्रप
द्यते॥ संपंक्तिदूषकःपापीज्ञेयोनसत्रसूचकइति॥ अर्थ० जोगु
रुमुखसेशास्त्रनैजानकोदैवज्ञताकोप्राप्तहोताहैसोहीपंक्तिदू
षकपापीनसत्रसूचककहलाताहैऐसेजोनसत्रसूचकहैंउन्ही
कोआहुदिकमेनिषेधधर्मशास्त्रमेलिराहैऔरजोगुरुमुखअ
वणद्वारासिद्धांतग्रंथोंकोजानताहैउस्कोतोअवश्यआहुदिक
मेनिमंत्रणकरनाचाहियेतस्मात्पूर्वोक्तवचनविरोधहैनहींय
हजाननाऔरभीविषयलिरखनारहासोग्रंथविस्तारभयेसेन
हौलिरखतेपीयूषभारादिकग्रंथोमेदेखलेनाऐसाजोसर्वोपयोगी
ज्योतिषशास्त्रसोसंस्कृतकेपरिज्ञानविनाउस्कामतलबजान
नेनहींसक्तेक्योंकिघोडेदिनोसेसंस्कृतकापठनपाठनन्यून
होनेसेकिसीकोसंस्कृतकाअभ्यासरहताहैकिसीकोनहीं
रहताइसलिये श्रीकाशीक्षेत्राधिवासी श्री५ पुत्रबाबूबारा
णसीप्रसादजीनेज्योतिषसारनामकजोग्रन्थहैउसकाख
डीबोलीमोभाषाटीकाकरवायाजिस्येप्रायःसर्वदेशकेलो
गदेखकोउसकामतलबसबसेऔरअतिप्रसन्नहोवें॥*

तत्रादौ मङ्गलाचरणम्

गणेशोऽनमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ॥

अज्ञानगजगण्डघ्नीं गर्गलल्लादिकान् सुनीन् ॥१॥

टी० प्रथमके निर्विघ्नपरिसमाप्तिके लिपे प्रथमतः गणेशजीको नमस्कार करकों और चैतन्यस्वरूपिणी अज्ञानको नाश करने वाली ऐसी जो सरस्वतीजीताको नमस्कार करको और गंगाचार्यलल्ल • बसिष्ठ • नारद इत्यादिक जो ज्योतिषशास्त्रके प्रवर्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करको

श्लो० गंगा प्रथान् समालोक्य देवज्ञानां चतुष्टये ॥

कुरुते बालबोधा यज्योतिः सारमनुजयेम् ॥२॥

टी० और सूर्यसिद्धांतादिकाना प्रकारके ग्रन्थ अवलोकन करको । ज्योतिर्वित्तके संतोषके लिये और बालकों को बोध देने में मुहूर्तादिक का ज्ञान होय इसलिये अत्युत्तम ज्योतिषारनामक ग्रंथ को करने भये -

तत्रादौ संबत्सरनामपरिज्ञानमाह

टी० अब उस ग्रंथमें पहिले संबत्सरनाम जानने का उपाय कहते हैं -

श्लो० शकेन्द्रकालोऽर्कयुतः कृत्वा मून्धरसैर्हतः ॥

शेषाः संबत्सरादौ याः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥

टी० जिस वर्ष में जो शालिवाहन का शक होय उसमें १२ मिलाव को ६० सो भाग दे को जो शेष बचे सो उस वर्ष का संबत् जानना उदाहरण जैसे साशके १७९० उस्में १२ मिलावने से १००२ भये उसमें ६० साठके भाग देने से २ शेष रहा इस्से उस वर्ष में विभयनाम संबत् होगा -

श्लोक० स एव पंचागि कुभिर्भुक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥

रेवाया उत्तरे तीरे संबन्धाः प्रातिविश्रुतः ॥२॥

टी० जो शालिवाहन का शक है उसमें १२५ मिलावने से विक्रम का शक होता है ॥ उसी को नर्मदा के उत्तर तीरवासी जन संबत् कहते हैं -

श्लो० ॥ संबत् कालो ग्रहयुतः कृत्वा मून्धरसैर्हतः ॥ ॥

शेषाः संबत्सरादौ याः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥३॥

टी० संबत् काल में ९ मिश्रित करको ६० से भाग देने से जो शेष रहे सो संबत्सर जानना जैसे संबत् १९२५ इस्में ९ मिलावने से १९३४ भये उस

ज्योतिषसार ५

समे ६० से भाग लेने से १४ शेष रहता तो संवत् १९२५ के वर्ष में चौदहवाँ
विक्रमनामक संवत्सर रेवा के उत्तर तट में जानना—

अथ संवत्सरनामानि

प्रभवो विभवः शुक्रः प्रमोदो यप्रजापतिः॥ अंगिराः श्रीमुखो
भावो युवाधाता तथैव च॥४॥ ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी
विक्रमो वृषः॥ चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्यपः॥
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः॥ नन्दो विजयश्चैव
वज्रयो मन्मथदुर्मुखौ॥६॥ हेमलंबी विलंबी च विकारी शर्व
री पूवः॥ शुभकृच्छो भनः क्रोधी विश्वावसु पराभवौ॥७॥ पू
वंगः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्॥ परिधावी प्रमा
थी च त्यानन्दो राक्षसो नलः॥८॥ पिंगलः कालयुक्तश्च सि
द्धार्थी रौद्रदुर्मतिः॥ दुन्दुभीरुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः सगः॥
टी० प्रभवादिक ६० संवत्सर के नाम नीचे कोष्ठक में स्पष्ट हैं— कोष्ठकम्।

| | | | | |
|-------------|--------------|------------|---------------|---------------|
| १ प्रभव | १३ प्रमाथी | २५ खर | ३७ शुभन | ४९ राक्षस |
| २ विभव | १४ विक्रम | २६ नन्दन | ३८ क्रोधी | ५० अनल |
| ३ शुक्र | १५ वृष | २७ विजय | ३९ विश्वावसु | ५१ पिंगल |
| ४ प्रमोद | १६ चित्रभानु | २८ जय | ४० पराभव | ५२ कालयुक्त |
| ५ प्रजापति | १७ सुभानु | २९ मन्मथ | ४१ पूवंग | ५३ सिद्धार्थी |
| ६ अंगिरा | १८ तारण | ३० दुर्मुख | ४२ कीलक | ५४ रौद्र |
| ७ श्रीमुख | १९ पार्थिव | ३१ हेमलंब | ४३ सौम्य | ५५ दुर्मति |
| ८ भाव | २० व्यप | ३२ विलंबी | ४४ साधारण | ५६ दुन्दुभी |
| ९ युवा | २१ सर्वजित | ३३ विकारी | ४५ विरोधिकृत् | ५७ रुधिराङ्ग |
| १० धाता | २२ सर्वधारी | ३४ शर्वरी | ४६ परिधावी | ५८ रक्ताक्षी |
| ११ ईश्वर | २३ विरोधी | ३५ पूव | ४७ प्रमाथी | ५९ क्रोधन |
| १२ बहुधान्य | २४ विकृति | ३६ शुभकृत् | ४८ आनन्द | ६० सग |

अथ संवत्सरफलम्

प्रभवादि गुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं चकारयेत्॥ सप्तभिस्तु हरे
द्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभं॥१०॥ एकं च त्वारिदुर्भिक्षं पंचद्व
भ्यां सुभिक्षकं॥ त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं शून्यं पीडानसंशयः॥११
टी० प्रभवसंवत्सर से वर्तमान संवत्सर तक गिनको जो अंक हो पउत्को

दूनाकरना उसमेंसे तीन कम कर के जो बाकी रहे उसको ७ से भाग लेना जो बचे उसका शुभाशुभफल कहना जो १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष कहना ५ वा २ रहे तो सुभिक्ष कहना ३ या ६ रहे तो समफल कहना शून्य रहे तो उस वर्ष में जनको पीडा कहना ऐसा कि कोई पूछे संवत् १९२५ में विक्रम नाम संवत्सर है उसका फल कैसा तो उसका क्रम यह है कि विक्रम संवत्सर प्रभवसे गिनने से चौदह १४ होता है उसको दूना करने से २८ हुवे उसमें तीन कम करने से २५ बचे उसमें सात ७ से भाग लेने से शेष ४ रहा तो वर्ष में दुर्भिक्षफल कहना—

संवत्सराधिपमाह

युगं भवेद्दत्तरपचकेन युगानि च द्वादश वर्षेषु च ॥

भवन्ति तेषामधिदेवताश्चक्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ १२ ॥ विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यः ॥

पितरो विष्वेदे वाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यौ च भगः ॥ १३ ॥

टी० ५ वर्ष का १ युग होता है ६० वर्ष में १२ युग भये तब बारह १२ युग के १२

अधिपति होते हैं उनके नाम विष्णु १ बृहस्पति २ इंद्र ३ अग्नि ४ त्वष्टा

५ अहिर्बुध्न्य ६ पितर ७ विष्वेदेव ८ चंद्र ९ अग्नि १० अश्विनी कुमार ११

भग १२

अन्यमतेन

आनंदादिर्भवेद्द्वयाभावादिर्विष्णुरेव च ॥ ज

यादिशंकरः प्रोक्ता सृष्टिपालननाशकाः ॥ १४ ॥

टी० आनन्द आदिले को २० संवत्सर का स्वामी ब्रह्मा है भावादिक २०

फर स्वामी विष्णु है और जयादिक २० का स्वामी शिव है दन्तकर्म

से उत्पत्ति स्थिति संहार फल जानना— ॥ अध्याः पनप्रकरणं ॥

शिशिर पूर्व मृत्यु च मृत्यु तरेण यनमाहुरह अतदा गरः ॥ भ

वति दक्षिण मन्थ कर्तु च यं निगदितारजनी मरुतां हि सा ॥ १५ ॥

टी० शिशिर वसंत ग्रीष्म दस ३ कर्तु में उत्तर तरफ गती सूर्य की होती

है दस लिये दत्को उत्तरायण कहते हैं और वर्षा शरत् हेमंत इवतीने

के सूर्य की गति दक्षिण तरफ होती है दस लिये दत्को दक्षिणायन कहते हैं

उत्तरायण में देवताओं का दिन होता है और दक्षिणायन में देवताओं की

रात्रिहोती है—

अयनमेषुभाषुभकर्मकहतेहैं

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबंधदीक्षाः॥सौ

म्यायनेकर्मेषुभविधेयंयद्गृहितंतत्त्वलुदक्षिणेच॥१६॥

टी० गृहप्रवेशदेवप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबंध मंत्रग्रहणादि दीक्षाइत्यादिशुभकर्मउदगयनमेकरना औरजोनिचकर्महैं अभिचारादिकसौ दक्षिणायनमेकरना- संक्रांतिपरत्वेकतु ॥

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्षट्चत्तवःस्युःशिशिरोवसं

तः॥ग्रीष्मश्रवर्षाचशरच्चतद्वेमेतनामाकथितश्चषष्ठः१७

टी० मकरादि २ राशि सूर्यके भोगनेसे शिशिरादिक ६ ऋतूहोतेहैं—

| | | | |
|-----------|--------------|--------------|------------|
| १ मकर } | शिशिरऋतु १ | ७ कर्क } | वर्षाऋतु ४ |
| २ कुंभ } | | ८ सिंह } | |
| ३ मीन } | वसन्तऋतु २ | ९ कन्या } | शरदृतु ५ |
| ४ मेष } | | १० तुला } | |
| ५ वृषभ } | ग्रीष्मऋतु ३ | ११ वृश्चिक } | हेमंतऋतु ६ |
| ६ मिथुन } | | १२ धन } | |

मतांतरं॥मेषादितोहिहिभभानुभोगात्संतपूर्वाऋतवःषड्ऋतुः

टी० मेषादिकदो राशि सूर्यके भोगनेसे वसन्तादिक ६ ऋतूहोतेहैं—

| | | | |
|-----------|--------------|-------------|------------|
| १ मेष } | वसंतऋतु १ | ७ तुला } | शरदृतु ४ |
| २ वृषभ } | | ८ वृश्चिक } | |
| ३ मिथुन } | ग्रीष्मऋतु २ | ९ धन } | हेमंतऋतु ५ |
| ४ कर्क } | | १० मकर } | |
| ५ सिंह } | वर्षाऋतु ३ | ११ कुंभ } | शिशिरऋतु ६ |
| ६ कन्या } | | १२ मीन } | |

मतांतरम्

चैत्रादिहिहिमासाभ्यां वसन्ताहतवश्चषट्॥दा

क्षिणात्पाःप्रगृह्णन्तिदैवेपित्र्येचकर्मणि॥१८॥

टी० चैत्रादिक २ मासमे १ ऋतु इसतरहसे १२ मासमे ६ ऋतूहोते हैं सोदक्षिणदेशमे देवपितृकार्यमे प्रसिद्धहैं—

| | | | |
|-----------|----------|-------------|------------|
| १ चैत्र } | वसन्तऋतु | १ ज्येष्ठ } | ग्रीष्मऋतु |
| २ वैशाख } | | ४ आषाढ } | |

| | | | |
|-----------|---------------|---------------|----------------|
| ५ आषाढ | } वर्षा ऋतु १ | १० मार्गशीर्ष | } हेमन्त ऋतु ५ |
| ६ भाद्रपद | | | |
| ७ आश्विन | | | |
| ८ कार्तिक | | | |
| | शरद ऋतु ४ | ११ चैत्र | } शिशिर ऋतु ६ |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

मासप्रकरणं ॥ पूर्वराशिपरित्यज्य उत्तरांशं राशिभास्करः ॥

साराशिः संक्रमाख्यास्यान्मासत्वं च न ह्ययने ॥ १९ ॥

टी० पूर्वराशिको छोड़को उत्तरराशिमें सूर्यका जाना उसका नाम संक्रांती है सो संक्रांति मेषादि १२ होती है उसीको सौरमास कहते हैं २ मासका १ ऋतु ३ ऋतुका १ अयन २ अयनका १ वर्ष होता है -

श्लो० दशावधिं मासेषु पैति चांद्रं सौरं तथा भास्करराशिभोगा

तथा त्रिंशदिनं सावनसंज्ञं मासं चाक्षयिंदोर्भगणाश्रयाच्च २०

टी० शुक्ल प्रतिपदासे अण्मास्यापर्यंत जो मास उसको चान्द्रकहते हैं और सूर्य १ राशिको ११ गको २ राशिमें जानेसे सौर मास कहते हैं और ३० दिनका मास जो है उसको सावन कहते हैं और १७ नक्षत्रको चन्द्रके भोगनेसे नाक्षत्र मास जानना -

मासोंके नाम बोदेवता

मधुस्तथामाधवसंज्ञकश्च शुक्लः शुचिश्चायनभोन
भस्म ॥ तथैव ऊर्जश्च सहासहस्यस्तपस्तपस्यश्च यः
थाक्रमेण ॥ २१ ॥ अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने
तथा ॥ चैत्रमासे तु वेदांगो भानुर्वै शाख एव च ॥ २२ ॥ ज्येष्ठ
मासे तथा चैत्र आषाढे तपते रविः ॥ गभस्तिः आषाढे मासे
यमो भाद्रपदे तथा ॥ २३ ॥ सुवर्णरेताश्च युजिका र्त्तिके च
दिवाकरः ॥ मार्गशीर्षे तपे न्यिन्नः पौषे विष्णुः सनातनः
॥ २४ ॥ इत्येते ह्यष्टादशानामासनामान्यनुक्रमात् ॥ के
शवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥ २५ ॥ माघवं माघमा
से तु गोविंदं नद्य फाल्गुने ॥ चैत्रे विष्णुं तथा विद्यादैश्वर्ये
मधुसूदनं ॥ २६ ॥ त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे च यमं विदुः
॥ आषाढाश्रीधरं विजित्वा पीके मां तु भाद्रके ॥ २७ ॥ अश्वि
ने मध्वनाथं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥ मार्गशीर्षे वि ॥

ज्योतिषसार ९

शालग्रामीपौषेलक्ष्मीश्रवदेवता॥२८॥ माघेतुरुक्मिणीप्रोक्ताफा
लुनेधात्रिनामिका॥ चैत्रेमासिरमादेवीवैशाखेमोहिनीतथा॥२९
॥ पद्माक्षीज्येष्ठमासेतुआषाढकमलेतिच॥ कानिमतीश्रावणेच
भाद्रेतुअपराजिता॥३०॥ पद्मावतीआश्विनेतुराधादेवीनिकार्तिके
टी० द्वादशमासकेनाम और बार मासके १२ आदित्य और १२ मासके १२ देव
ता और १२ मासके १२ देवीकेनाम नीचेकोष्ठकमेंदेखनेसेस्पष्टहोंगे—

| | मासनाम | मासनाम | सूर्य | देवता | देवी |
|----|------------|--------|------------|------------|------------|
| १ | चैत्र | मघ | वेदांग | विष्णु | रमा |
| २ | वैशाख | माधव | भातु | मघस्तुदन | मोहिनी |
| ३ | ज्येष्ठ | शुक्र | इन्द्र | त्रिविक्रम | पद्माक्षी |
| ४ | आषाढ | शुची | रवि | वामन | कमला |
| ५ | श्रावण | नभ | गभस्ति | श्रीधर | कानिमती |
| ६ | भाद्रपद | नभस्य | यम | दुष्ठीकेश | अपराजिता |
| ७ | आश्विन | इष | सुवर्णरेता | पद्मनाभ | पद्मावती |
| ८ | कार्तिक | ऊर्ज | दिवाकर | हामोदर | राधा |
| ९ | मार्गशीर्ष | सह | मित्र | केशव | विशालाक्षी |
| १० | पौषमाघ | सहस्य | विष्णु | नारायण | लक्ष्मी |
| ११ | माघ | तप | अरुण | माधव | रुक्मिणी |
| १२ | फाल्गुन | तपस्य | सूर्य | गोविंद | धात्री |

वारपरत्वेमासफलम्॥ ॥ पंचार्कवासरेरोगाः पंचभौमे
महद्भयम्॥ पंचार्किवारादुर्भिक्षंशेषावारश्चुभप्रदाः ३२
टी० एकमासमें ५ रविवार होय तो जनको रोग होय और ५ मंगल पड़े तो महान्
भय प्राप्त होय और ५ शनि पड़े तो दुर्भिक्ष होय दोष रहजे जो बारसो ५ पड़े तो शुभजा
पस ॥ ॥ पूर्वापरौमासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौतौ सितनील
संज्ञौ॥ पूर्वस्तु दैवस्त्वपरश्च पैत्र्यः केचित्तु कृष्णो सितपंचमी
तः॥ ३३॥ आदौ शुक्रः प्रवक्तव्यः केचित्कृष्णपि मासके॥ ३४
टी० मासमें पूर्वदल और परदल इको पक्ष कहते हैं उसमें पूर्वदलको शुक्र प
क्ष और परदलको कृष्ण पक्ष कहते हैं अर्थात् शुक्र प्रतिपदा से पौर्णिमा प
र्यंत शुक्र पक्ष और कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या पर्यंत कृष्ण पक्ष होता है उसमें
पूर्वपक्ष माने शुक्र पक्ष जो है सो देवता को है और परपक्ष माने कृष्ण पक्ष जो है

सेपितरोंकाहै किसी आचार्यकेमनसेशुक्रपंचमीसेरुष्णपंचमीतकशुक्र
पक्षऔर रुष्णपंचमीसेशुक्रपंचमीतकरुष्णपक्षहोताहै उसमेप्रथम
शुक्रपक्षनन्तररुष्णपक्ष उसको अमांतमास कहना किसीकेमनसे
रुष्णपक्षकेनन्तर शुक्रपक्ष सोपौर्णिमांतमासजानना ॥३३॥ ॥

अधिकमास ॥ द्वाविंशदिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्त
था ॥ घटिका न चतुष्केन पतत्यधिकमासक ॥ ३५ ॥

टी० ॥ ३५ मास १६ दिन ४ घड़ीकेनन्तर अधिकमासका संभव होता
है ऐसावसिष्ठ ऋषी कहतेहैं ॥

क्षयमास ॥ ॥ असंक्रांतिमासेषिमासः स्फुटं स्वादि

संक्रांतिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ॥ क्षयः कार्तिका

दित्रयेनात्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येषिमासहयंच ॥ ३६

टी० जोसंक्रांतिरहितमासहै सोअधिकमासजानना औरजो २ सं
क्रांतिकोयुक्तमासहै सोक्षयमासजानना सोक्षयमासकदाचित्
आवताहै सोक्षयमासकार्तिक मार्गशीर्ष पौष इससेअतिरिक्त नहीं हो
ता और जिसवर्षमे क्षयमासहोताहै उसवर्षमेअधिकमास २होताहै

तिथिप्रकरणम् ॥ ॥ मासभाज्यां द्वाभ्यावद्वर्णयेत्तावदे

वतु ॥ यावन्तिगणनाद्धानितावत्यस्तिषयः क्रमात् ॥ ३७ ॥

टी० मासनसत्रसेदिननक्षत्रतकगिनकोजोसंख्याहोयवहीसंख्यातिथी
कीजानना परंतुपौर्णिमांतमाससेगिनना मासनसत्र वैशाखदिनमेसेचित्रा
विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवणपूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर
पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनीये १२ नक्षत्रहैं ॥ ॥ अथतिथिफलानि ॥ ॥

प्रतिपत्तिर्दिवात्रोक्ताद्वितीयाकार्ष्णिनी ॥ तृतीयाश्लेषाश्रवणाश्विनी

हनिदाचचतुर्थिका ॥ ३८ ॥ शुभातुपंचमीशेवाषष्ठिकान्तमुभाभता

॥ सप्तमीतुमुभातेयाअष्टमीव्याधिनाशिनी ॥ ३९ ॥ मृत्युरात्रीतुनवमी

द्रव्यदादशमीतथा ॥ एकादशीतुमुभदाद्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥

॥ ४० ॥ त्रयोदशीसर्वसिद्धाज्ञेयाचौत्राचतुर्दशी ॥ पुष्टिदापौर्णि

मातेयातमावास्याशुभातिथिः ॥ ४१ ॥ ॥ टी० प्रतिपदादिषो

डशतिथीका शुभाशुभाफल अधस्थितत्रक देखनेसे मालूम होगा -

स्वामी ॥ बन्दिर्विरिंचो गिरिजागणेशः फणिर्विशारदो दिनकृन्म
 हेशः ॥ दुर्गोतको विष्णु हरिः स्मरश्च शर्वः शशीचेति पुराणदृष्टाः
 ॥४२॥ अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥४३॥
 टी० ॥ पूर्वोक्त षोडशतिथीके १६ देवता भीचक्रमे स्पष्ट होंगे—
 संज्ञा ॥ नंदा च भद्रा च जया च रिक्ताः पूर्णेति सर्वस्तिथयः क्रमात्स्युः
 ॥ कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्लकृष्णभवेत्युत्तममध्यहीनाः ॥४४॥
 टी० ॥ अबतिथीकी संज्ञा और शुक्लकृष्णभेद सो फलभेद भी चक्रमे देखने से मालूम
 पालन ॥ ॥ कूष्माण्डं बृहतीफलानिलवर्णवर्ज्यं निलामुत (हागा)
 या तैलं चामलं कंदिवं प्रसवताशीर्षकपालां चक्रम् ॥
 निष्पावांश्च मसूरिकाफलमथो वृंताकसंज्ञं मधुद्युतं
 स्त्रीगमनं क्रमात्प्रतिपदादिष्वेव माषोडश ॥४५॥
 टी० ॥ षोडशतिथीमे जो जो पदार्थ वर्ज्य करना सो भी चक्रमे स्पष्ट हो
 गा इसीको तिथिपालन कहते हैं ॥

| | तिथिफल | स्वामी | संज्ञा | शुक्ल | कृष्ण | तिथिपाल |
|----|------------|-----------|--------|-------|-------|----------|
| १ | सिद्धि | अग्नी | नंदा | अशुभ | शुभ | कोहड़ा |
| २ | कार्यसोपन | ब्रह्मा | भद्रा | अशुभ | शुभ | बनभंटा |
| ३ | आरोग्य | गौरी | जया | अशुभ | शुभ | नोन |
| ४ | हानि | गणेश | रिक्ता | अशुभ | शुभ | तिल |
| ५ | शुभ | सर्व | पूर्णा | अशुभ | शुभ | खट्वा |
| ६ | अशुभ | स्कन्द | नंदा | मध्यम | मध्य | तैल |
| ७ | शुभा | सूर्य | भद्रा | मध्यम | मध्य | आंवला |
| ८ | व्यापिना | शिव | जया | मध्यम | मध्य | नारियल |
| ९ | मृत्युदा | दुर्गा | रिक्ता | मध्यम | मध्य | लउआ |
| १० | धनदा | यम | पूर्णा | मध्यम | मध्य | चिचेंडा |
| ११ | शुभा | विष्णुदेव | नंदा | शुभ | अशुभ | समकाराना |
| १२ | सर्वसिद्धि | हरि | भद्रा | शुभ | अशुभ | मसूर |
| १३ | सर्वसिद्धि | मदन | जया | शुभ | अशुभ | भंडो |
| १४ | उग्रा | शिव | रिक्ता | शुभ | अशुभ | सहत |
| १५ | उष्टिदा | चन्द्र | पूर्णा | शुभ | अशुभ | जवा |
| १६ | अशुभ | पितर | ० | ० | ० | मेषुन |

तिथिकार्याणि ॥ ॥ नंदासुचित्रोत्सववास्तुतंत्रसेवादि
 कुर्वीत तथैव नृत्यम् ॥ विवाहभूषाशकटाध्याने भद्रा

रुकार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ ४६ ॥ जयासंश्रमबलोप
योगीकार्याणि सिद्धांत्यपि निमित्तानि ॥ रिक्तासु विद्वद्व
घातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादिचयांतिसिद्धि ॥ ४७ ॥ पूर्णासु मां
गल्पविवाहयात्रासंपौष्टिकं शांतिकर्मकार्य ॥ सदैवद
र्शपितृकर्मचोक्तं नान्यद्विद्वद्भ्यामनुभमकुलानि ॥ ४८ ॥

टी० ॥ नेहतिथीये १६११ आनन्दारिकर्मदेवता औकाउत्साहकर्मगृह
संबन्धीकर्म हेतुसंबन्धीलेन देनगानावजावना इत्यादिकृत्यकरना
और महातिथीये २७१२ विवाह आभूषण गाड़ी रणादिककरना चढना
मार्गबनावना पौष्टिककृत्यकरना और जयातिथीये ३८१३ सुद्ध से
नाके उपयोगी तलवार बंदूक वगैरे बनावनेसे कार्यसिद्ध होना है और
रिक्तातिथीये ४११४ किसीकानाशकरना अथवा अभिचारदिमि
द्विविषयशस्त्रादिकर्मकरनेसे सिद्धि होगी पूर्णतिथीये ५११५ मंगल
कार्यविवाहयात्रा माने प्रवासादिकजाना पौष्टिकशांतिकर्मकर
नाऔर अमावास्यामे सदापितृकार्यकरना मंगलकार्यकरना नही -

अमावास्यायोगः ॥ ॥ अमावास्याभवे द्वारो यदाभूवि
सुतस्यैव ॥ जान्दवीस्नानमात्रेण गोसहस्रफलं भवेत् ४९
अमावा सोमवारेण रविवारेण सप्तमी ॥ चतुर्थी भौमवा
रेण विषुवत्स दशफलम् ॥ ५० ॥ सिनीवाली कुहवापि यदिसो
मदिने भवेत् ॥ गोसहस्रफलं दद्यात्स्नानं च नौनिना कृतम्
॥ ५१ ॥ दृष्टचन्द्रासिनीवाली नष्टचंद्राकुहूस्मृता ॥

टी० ॥ अमावास्याको भौमवार होय उसदिन गंगास्नानमात्रसे सहस्रगो
दानका फल प्राप्त होता है ॥ ४९ ॥ अमावास्या सोमवारको रविवारको स
प्तमी और चतुर्थी भौमवारको होय तो विषुवत्संक्रांतिका फल होता है
५० ॥ अमावास्या दृष्टचंद्र होय तो सिनीवाली और नष्टचंद्र होय तो कुहूसंज्ञा
उसदिन सोमवार होय उसमें न होय के स्नान करे तो सहस्रगोदानका फल होता
अमावास्यातीपातयोगः ॥ श्रवणाश्रिधनिष्ठाद्रीनामदेवत
मस्तु कै ॥ यद्यमारवि वारेण व्यतीपातस उच्यते ॥ ५२ ॥
टी० ॥ श्रवण अश्विनी धनिष्ठा आर्द्रा आश्लेषा मृग दसनसत्रमे

अमावास्या रविवार युक्त होय तो व्यतीपात योग होता है ॥

अर्द्धोदय योगः ॥ माघ मासि रवौ दर्शो व्यतीपाते श्रवणं चि-

ते ॥ अर्द्धोदयाभिधो योगः सूर्य पर्वशताधिकः ॥ ॥

अयमुक्तो दिवा योगः किं विन्यूनं महोदयः ॥ ॥

टी० माघ मास मे रविवार को अमावास्या व्यतीपात श्रवण नक्षत्र युक्त होय तो अर्द्धोदय योग होता है. वह १०० सूर्य ग्रहण से अधिक जानना. यह दिन मे योग कहा इसे किं विन्यून होय तो महोदय योग जानना.

अथ कपिलाषष्ठी ॥ ॥ आश्विने कृष्ण पक्षे च षष्ठ्यां भौ-

मोऽथ रोहिणी ॥ व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिला नंत पुण्यदा ॥

टी० आश्विन कृष्ण पक्ष मे षष्ठी भौमवार रोहिणी नक्षत्र व्यतीपात योग. उस दिन कपिला षष्ठी योग अनंत पुण्यदायक होता है

अथ वारुणी योगः ॥ वारुणेन समा युक्ता मधौ कृष्णा-

त्रयोदशी ॥ गंगायां यदि लभ्येत सूर्य ग्रह शतैः समा-

॥ शनिवार समा युक्ता सा महा वारुणी स्मृता ॥ शुभ-

योग समा युक्ता शनौ शतभिषा यदि ॥ महामहेति

विरव्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत् ॥ ॥ ॥ ॥

टी० शततारका युक्त चैत्र कृष्ण त्रयोदशी होय. उस दिन गंगा प्राप्त होय तो १०० सूर्य ग्रहण के समान फल होता है. शनिवार युक्त होय तो महा

वारुणी जानना. शुभ योग युक्त शनिवार शतभिषा होय तो महामहा वारुणी जानना. सो तीन कोटी कुल का उद्धार करती है ॥ ॥

युगादयः ॥ नवमी कार्तिके शुक्ल वैशाखे च तृतीयका ॥

त्रयोदश्या शिवने कृष्णा तथा दर्शश्च फाल्गुने ॥ ॥

कार्तिकेः भूतकृतारम्भस्तैतारम्भस्तमाधवे ॥ ॥

फाल्गुने ह्यपरारंभ आरंभश्चाश्विने कले ॥ ॥ ॥

टी० कार्तिक शुक्ल नवमी. वैशाख शुक्ल तृतीया. आश्विन कृष्ण त्रयोदशी. फाल्गुन की अमावास्या यह तिथी युगादि जानना. कार्तिक मे कृत युग प्रारंभ वैशाख मे त्रेता युग प्रारंभ. फाल्गुन मे द्वापर युग प्रारंभ. आश्विन मे कलियुग प्रारंभ होता है ॥

युगादिस्वामी ॥ कर्माच्छुद्धिर्देविर्पञ्चपितरस्तत्र देवता
॥ तिलानलवणसौवर्णमांशवदद्याद्युगादिषु ॥ एताद्युगाद
यपुण्याः शुभेवर्ज्या मनीषिभिः ॥ तत्राक्षय्यतृतीया तु
सर्वकार्येषु शोभना ॥ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ॥

टी० चारुगर्भदेवताक्रमसे शंभु हरि ब्रह्मा पितर यहजानना
चारोयुगादिमे तिल लवण सुवर्ण मौ- यहदानकरना यहसु
गादिपुण्यमेशुभ- पंडितवैशुभकार्यमेवर्जकरना परंतु उस्मे अ
क्षय्यतृतीया सर्वकार्यमेशुभजानना ॥

मन्वाद्यः ॥ आश्विनेनवमीशुक्ला माघमासेतुस
प्तमी ॥ भाद्रेचैत्रे तृतीया च कार्तिके द्वादशी तथा ॥
आषाढे दशमी प्रोक्ता ज्येष्ठमासेतु पौर्णिमा ॥ आ
षाढी फाल्गुनी चैत्री कार्तिकी पौर्णिमा तथा ॥ भाद्रे
कृष्णाष्टमी प्रोक्ता पौषे त्रैकादशी सिता ॥ अमा
भाद्रपदे मासिमन्वाद्यास्तिथ्युस्त्विमाः ॥ अ
नमासास्तराकांताः विशेषाः परिकीर्तिताः ॥

टी० आश्विनकीशुक्लनवमी माघशुक्लसप्तमी भाद्रपदऔरचैत्रशु
क्लतृतीया कार्तिकशुक्लद्वादशी आषाढशुक्लदशमी ज्येष्ठकीपौ
र्णिमा आषाढी फाल्गुनी चैत्री कार्तिकी पौर्णिमा भाद्रपदकृष्ण
अष्टमी पौषशुक्लएकादशी भाद्रपदकीअमावास्य यहमन्वादि
तिथिजानना इस्येपौर्णिमांतमासकथनकियाहै ॥ छ ॥

८ दिशाकेस्वामी कहते हैं ॥ रविः शुक्रो महीस्तुः स्वर्धानु

र्भानुजो विधुः ॥ बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशामीशस्तथाग्रहाः

टी० पूर्वदिशाकास्वामी रविकहिमे सूर्यहै आग्नेयीदिशाकाशुक्रहै
शकामंगल नैर्ऋतकासह यमिदिशाकाशनी वायव्यदिशाकाचंद्र
उत्तरदिशाकाबुध दंडान्यदिशाकास्वामी बृहस्पतीये आठोदिशाकेस्वा
ग्रहोंकीजातीकहतेहैं ॥ ब्राह्मणोजीवशुक्रौ बह्विष्यौ मीहै
भौमभास्वरौ ॥ सोमशौ स्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमंदौ तथासजौ
टी० नवग्रहोंमें बृहस्पतिशुक्रयेब्राह्मणहैं औरमंगलसूर्य हव्रिषहैं

ज्योतिषसार १५

और चंद्रबुध वैश्य हैं और राहु शनि पंचम जहै राहु के तुल्य केतू भी अंतर्जान
नवग्रहों के रक्तपीतादिवर्ण कहते हैं ॥ रक्ता वंगार का दित्यौ श्व
तौ शुक्र निशाकरौ ॥ गुरु सौम्यो पीन वर्णौ शनि राहु सितौ शुभौ ॥
टी० मंगल सूर्य ये लाल वर्ण हैं शुक्र बुध श्वेत वर्ण हैं बुध स्पृती बुध पीन
वर्ण हैं शनि राहु असित माने श्याम वर्ण हैं केतू का श्याम ही वर्ण जानना
बार मे जो जो काम करने को सो कहते हैं

राज्याभिषेकोत्सव यानसे वा गोबन्धि मंत्रौषध शस्त्रकर्म ॥ सु
वर्णताम्रौर्णिक चर्म काष्ठ संग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥ ॥
टी० राज्याभिषेक नाना प्रकार के महोत्सव असवारी पर बैठना अथवा
यात्रा करना राजसेवा गौ बैल इत्यादिकों का लेना देना बन्धिकर्म हव
नादि मंत्र शास्त्र का अध्ययन प्रयोगादिक औषध देना शस्त्रकर्म कहि
ये तलवार कटार इत्यादिकों का धारण करना सोने का अलंकार बनाव
ना वा धारण करना तांबे की वस्तु कालेना और देना उन की वस्तु चर्म
की वस्तु काष्ठादिवस्तु सिंहासन पादुका वगैरे का धारण करना युद्ध
संग रोजगार इत्यादिये सब कर्म रविवार को करने से सिद्ध होते हैं ॥

सोमवार ॥ शंख बाजा मुक्ता रजते सुभोज्य स्त्री वृक्ष वस्त्रां बु वि
भूषणाद्याः ॥ गीतं क्रतु स्त्री रविकार शृंगी पुष्पां वसरं भणधिदुवार ॥
टी० शंख कमल मोती चांदी ऊख भोज्य पदार्थ स्त्री भोग वृक्ष तृण
जल अलंकारादि गाना बजावना यज्ञदधि घृतादि गोमहिष्यादि
पुष्प वस्त्र इत्यादिकर्म सोमवार मे करना ॥

मंगलवार ॥ ॥ भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्या
भिघाताहवशशठ्यदंभान् ॥ सेनानिवेशाकरधा
तुहेमप्रचालरक्तानिकुजे विदध्यात् ॥ ॥ ॥
टी० बिगाड करना असत्य संबंधी कर्म चोरी विषादिकर्म अग्निक
र्म शस्त्रकर्म वध मश युद्ध कपट दंभ सेनारखना खानखोदना
धातु सवर्ण भूंगा इत्यादिक कृत मंगलवार को करना ॥ ॥

बुधवार ॥ ॥ नैपुण्य पुण्याध्ययनं कलाश्च शि
ल्यादि सेवालिलेखनानि ॥ धातुक्रियाकां च

नयुक्तिसंधिवायामवादाश्रयधेविधेयाः॥

टी० चातुर्थे पुण्य आध्ययन इष कला शिल्पशास्त्र सेवा लिखना न
सबीर रवीचन धातुसंबंधी क्रिया स्वर्ण संबंधी कर्म भिन्नता कर्म
मह्य विद्या वाद ये कर्म बुधवारको करना ॥

शुक्रवार ॥ धर्म क्रिया पौष्टिक यज्ञ विद्या मंगल ह्ये मोक्ष रवे प्रमया

आः ॥ रथाश्रमैष ज्यविभूषणादि पार्य निदध्यासुर मंत्रि वारे ॥

टी० धर्म करना पौष्टिक यज्ञ योगादि विद्या आस मंगल कार्य स्वर्ण
वस्त्र गृह संबंधी कर्म यात्रा रथ अश्व औषध अलंकारादि ये कर्म
गृहस्थ तवारको करना ॥

शुक्रवार ॥ स्त्री गीत शय्या मणिरत्न गंध वस्त्रोत्सव लंकरणादि

कर्म ॥ भूषण योगो शकृषि क्रिया श्रुति ध्यंति शुक्र स्मृदिने समस्ताः

टी० स्त्री गायन शय्या हीरा मणी गंध वस्त्र उत्सव अलंकारादि श्रुती
संबंधी कर्म गौ वैल रवजा वा रेती इत्यादि कर्म जो है सो शुक्रवारको करना

शनिवार ॥ लोहाश्मसीसत्र पुशस्त्र दास पापानृतस्तेय विषास

विषास ॥ गृह प्रवेश द्विपबंध दीक्षा स्थिर चक्र मार्क सुतेन्द्रि कुर्मात् ॥

टी० लोहा पत्थर सीसा रंग नलवार भाला इत्यादि दास पाप अ
साधनोरी विष अर्धनिकालना गृह प्रवेश हास्तिबंधन उपदेश स्थि
र कर्म इत्यादि कर्म शनिवारको करना ॥

वारके देवता अधिदेवता ॥ सूर्यादि न शिव शिवा गृह विष्णु

केन्द्र काला क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणां ॥ वल्गु बुभूमि

हरि शक्र शची विरिचिस्तेषां पुनर्लुनि गिरिधि देवताश्च ॥ ॥

टी० शिव पार्वती मद्दानन विष्णु महा इन्द्र काल ये ० क्रम से सूर्यादि
कारे की देवता जानना और अधि जल भूमि हरि इन्द्र इंद्राणी महा

ये ७ सूर्यादि वार की क्रम से अधिदेवता ७ जानना ॥

वार दोषाः ॥ नवार दोषाः प्रभवंति रात्रौ देवे ज्यैस्ते ज्यदि वाकरा

पां ॥ दिवा राशौ का केज भू सुतानां कर्त्तव्य निरोध बुधवार दोषः ॥

टी० शुक्रवार शुक्रवार रविवार इन र ने कारो कार विन के बन ही है और सोम
शनि मंगल इन तीनों का दिन के दोष न हो जान पा औ बुधवार को सब विष

सामान्यवारकृत्यं ॥ ॥ सोमसौम्यशुक्रशुक्रवास
राः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ॥ भानुभौमशनि
वासरेषु च प्रोक्तमेव खलुकर्मसिद्ध्यति ॥ ॥

टी० सोमबुध शुक्र शनि इनचारोंमें सर्वकर्म सिद्धि जानना रवि
मंगल शनि इनचारोंमें उक्तकार्यमात्रकी सिद्धि जानना -

तैलाभ्यंगः ॥ ॥ रविस्तापं कांतिवितरति शशीभूमि
तनयो मृत्तिलदमीं सौम्यः स्वरपतिगुरुर्वितहरणं ॥
विपत्तिद्वैत्यानां गुरुस्खिलभोगानुगमनं नृणां
तैलाभ्यंगात्सपदि कुरुते सूर्यतनयः ॥ ॥ ७ ॥

टी० रविवारको तैलाभ्यंग संतापप्रदहोताहै सोमकोकांतिप्रद मंगल
कोमृत्युप्रद बुधकोलक्ष्मीप्रद गुरुवारकोवित्तनाशक शुक्रकोतैलल
गानेसेविपत्तिआतीहै शनिवारकोतैललगानासंपत्तिकारकहोताहै -

वस्त्रपरिधानम् ॥ ॥ जीर्णरचौ सततं बुभिरार्द्रमिन्दो
भौमेश्वरे बुधदिने च भवेद्धनाय ॥ ज्ञानाय मंत्रिणि भृगो
प्रियसंगमाय मंदे मलाय च नवांबरधारणं स्यात् ॥ ॥

टी० रविवारको नूतनवस्त्र परिधान करनेसे जल्दी जीर्ण होगा सोमवा
रको नूतनवस्त्र परिधान करनेसे अशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्र ही
रहेगा मंगलके रोज परिधान करनेसे शोकप्रद होगा बुधवारको धनप्राप्ति गुरु
वारको ज्ञानप्राप्ति शुक्रवारको मित्रप्राप्ति शनिवारको परिधान करनेसे मलिन र

श्मश्रुकर्म ॥ भानुर्मांसं पयति तथा सप्तमार्तं डमुनुभौ हेगा
मश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंचमासान् ॥ सप्तैवेदुर्दशसु

रगुरुः शुक्र एकादशेति प्राहुर्गर्ग प्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नून ॥

टी० रविवारको क्षौर करनेसे १ महिना आयुष्य नाश जानना सोमवार
को क्षौर करनेसे ७ महिना आयुष्य वृद्धि जानना मंगलको आ ८ महिना आयु
ष्य नाश बुधवारको ५ महिना आयुष्य वृद्धि गुरुवारको १० महिना आयुष्य
वृद्धि शुक्रवारको ११ महिना आयुष्य वृद्धि शनिवारको ७ महिना आयुष्य
नाश जानना यह गर्ग लल्ल नारद प्रभृति मुनिगणोंने क्षौरकार्यमें लिखा है -

विद्यारंभः ॥ विद्यारंभः स्मरगुरु सितज्ञेष्वाभीष्टार्थदायी

नक्षत्रपतयः॥ ॥ भेशादस्वयमाग्नि केन्दुगिरिशः प्रोक्ता
 ह्यदित्यंगिराः सर्पाः कव्यभुजो भगो र्यमरवित्त्वष्टा बहया
 मारुतः॥ इन्द्राग्नि त्वष्टा मित्र इन्द्र निर्ऋति नीरं च विश्वे विधिर्वै
 कुंठो वसुपाशयज्ञैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः॥ ७॥
 टी० अश्विन्यादिरेवत्यन्त २० नक्षत्रके २० स्वामी नीचेकोष्टक
 मेदेखनेसे स्पष्टहोंगे -

| नक्षत्र | स्वामी | नक्षत्र | स्वामी | नक्षत्र | स्वामी |
|---------|--------------|---------|------------|---------|--------------|
| १ अ | अश्विनीकुमार | १० म | पितर | १९ मू | निर्ऋति |
| २ भ | यम | ११ पू | भग | २० पू | जल |
| ३ कृ | वृद्धि | १२ उ | अर्यया | २१ उ | विश्वेदेव |
| ४ रो | ब्रह्मा | १३ रु | रवि | २२ अ | विधि |
| ५ म | चंद्र | १४ चि | त्वष्टा | २३ अ | विष्णु |
| ६ आ | शिव | १५ स्वा | वायु | २४ ध | वसु |
| ७ उ | अदिति | १६ वि | इंद्राग्नी | २५ श | वरुण |
| ८ पु | अंगिरा | १७ अ | मित्र | २६ पू | अजैकपात |
| ९ श्ले | सर्प | १८ ज्ये | इंद्र | २७ उ | अहिर्बुध्न्य |

अधोमुखनक्षत्राणि॥ ॥ मूलाभेयमघाद्विदैवभरणी
 सर्पाणिपूर्वात्रयंज्योतिर्विद्विरधोमुखं हिनवकुंभानामि
 दंकीर्तितं॥ वापीकूपनडागगर्तपरिखाखातौ निधेरु
 द्भुतिक्षेपोद्युतविलप्रवेशगणितारंभाः प्रसिध्यन्ति च ८
 टी० मूलकृतिका मघा विशखा भरणी आश्लेषा तीनोपूर्वा ये ९ नक्षत्रअ
 धोमुखसंज्ञकहोते हैं इन नक्षत्रोंमें बावली कूपनलावगढा परिखा धनकाडना
 और निकालना द्युत विलप्रवेशगणितारंभ इत्यादि अधोमुख कार्यजो हैं सो सबकर
 उर्ध्वमुखनक्षत्राणि॥ ॥ पुष्यार्द्राश्रवणो जराशतभिषक्
 ब्राह्मश्रविष्ठा बह्या न्यूर्ध्वा स्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धि
 ष्यमान्यथैतेषु तु॥ आसादध्वजघर्मवारणगृहप्राकारस
 त्तोरणोच्छ्रायारामविधिर्हितोनरपतेः पट्टाभिषेकादि च॥ ९॥
 टी० पुष्य आर्द्राश्रवण तीनो उत्तरा शततारका रोहिणी धनिष्ठा ये ९ न
 क्षत्र उर्ध्वमुखहोते हैं इन नक्षत्रोंमें देवालयाध्वज मंडपादि गृहकोटतो

रणचंदवा वगीचा राज्याभिषेक इत्यादिक ऊर्ध्वमुख कार्य सब करना-
तिर्यङ्मुखवनसत्राणि ॥ ॥ ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरः
पौष्णानुराधानिलत्वष्टारव्यानिबंदंतिभानिमुनयस्तिर्य
ङ्मुखान्येषुतु ॥ अश्वेभोष्टुलायरासभृषोरआदिहं
त्यश्विनौगंत्रीयंनहलप्रवाहगमनारंभाःप्रसिध्यंतिच ॥ १०

टी० ज्येष्ठा पुनर्वसू हस्त अश्विनी मृगशिरा अतुराधा स्वाती चित्रा ये
नक्षत्र तिर्यङ्मुखहोतेहैं इननक्षत्रोंमेंघोडाहांतीऊंट महिषसरबैलमेहा
सहस्र प्रवान इनचीजोंकोलेना औरनौकापानीमेढालना हलचला
वना यात्रा इत्यादितिर्यङ्मुखनक्षत्रोंमेंतिर्यङ्मुखकर्म करना—

प्रवसंतकनक्षत्राण्याह ॥ ॥ रोहिणीसहितमुत्तरा
त्रयंकीर्त्तयतिमुनयोऽप्रवाह्यं ॥ बीजहर्म्यनगराभि
षेचनाराप्रशांतिपुहितंस्थिरेषुच ॥ ११ ॥ ॥ ॥

टी० रोहिणी तीनोउत्तरा ये४ नक्षत्र प्रवसंतकहोतेहैं इसीकोस्थिर
भीकहतेहैं इननक्षत्रोंमें खेतमो बीजबोना गृहप्रवेश नगरमेप्रवेश रा
ज्याभिषेक बागवगीचालगावना शांतिकर्म येसबस्थिरकर्म करना—

मृदुनक्षत्राणितत्कार्यंचाह ॥ ॥ त्वाष्ट्रमित्रशशि
पूषदेवतान्यामनंतिमुनयोमृदन्यथा ॥ मित्रकार्य
रतिभूषणांबरोद्गीतिमंगलविधानमेषुतु ॥ १२

टी० चित्राअतुराधा मृगशिरा रेवती ये४ नक्षत्र मृदुसंज्ञकहोतेहैं—
दुर्हीकोमैत्रभीकहतेहैं इननक्षत्रोंमेंमैत्रकार्य स्त्रीसंग अलंकारधारण
वस्त्र परिधान गानावजावना मंगलकार्यइत्यादिकर्म करना—

लघुनक्षत्राणितत्कार्यंचाह ॥ अश्विनीगुरुभक्त
र्मदेवतंसाभिजित्तुचतुष्टयंमनं ॥ पण्यभूष

णकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषुसिद्धिदम् ॥ १३

टी० अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् ये४ नक्षत्र लघुसंज्ञकहैं—
दुर्हीकोस्थिरभीकहतेहैं इननक्षत्रोंमें दुकानघरना अलंकारधारणकरना
क्रीडाकरना औषधलेना ज्ञानसीखना शिल्पकहिष्कारोगरी या
त्रा प्रस्थानादि येकार्यकरनेसेसिद्धहोतेहैं—

तीक्ष्ण नक्षत्राणितत्कार्येचाह ॥ मूलशक्रशिव
सार्पदैवतान्पुल्लपंत्यश्चतीक्ष्णसंज्ञया ॥ भूत
यक्षनिधिमंत्रसाधनंभेदबंधवधकर्मचात्रतु ॥ १४

टी० मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा ये ४ नक्षत्र तीक्ष्णसंज्ञक हैं इन्हीको
हारुण भी कहते हैं इन नक्षत्रों में भूतसाधन यक्षसाधन द्रव्यनिकाल
नेका निधिमंत्रका साधन विद्वेषण किसीको फसावना मारण इत्या
दिकर्म करनेसे तत्काल सिद्ध होते हैं—

चरनक्षत्राणितत्कार्येचाह ॥ ॥ वैष्णवत्रयपुतः
पुनर्वसुमौरुतंचचरपंचकंत्विदं ॥ दंतिवाजिकरभै
षवाहनारामयानविधिषुप्रशस्यते ॥ १५ ॥ ॥

टी० श्रवणधनिष्ठा शनितारका पुनर्वसु स्वाती ये ५ नक्षत्रचरसंज्ञक
होते हैं इन्हीको चर भी कहते हैं इन नक्षत्रों में हाती घोडा वाहन ना
नाविध बगीचा रथ इत्यादिको कारखीदना अथवा असवारी कर
ना बगीचा वगैरेका लगावना ये सब काम करनेसे शुभ होता है—

उग्रनक्षत्राणितत्कार्येचाह ॥ ॥ पूर्विकात्रितयमं
तकंमघेत्युग्रपंचकमिदंजगुर्बुधाः ॥ शाठ्यनाश
विषघातबंधनोत्साहशस्त्रदहनादिषुस्पृतम् १६

टी० पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा भरणी मघा ये ५ नक्षत्र
उग्रसंज्ञक होते हैं इन्हीको क्रूर भी कहते हैं इन नक्षत्रों में शठता क
रना नाश किसीको विष देना मारण बंधन उत्साह शस्त्र दहनादि
ये सब कर्म करनेसे त्वरित सिद्ध होते हैं—

मिश्रनक्षत्राणितत्कार्येचाह ॥ ॥ हव्यवाहभयु
नंद्दिदैवतमिश्रसंज्ञमथमिश्रकर्मसु ॥ स्वाभिधा
नसमकर्मसाधनेकीर्तितानिसकलानिसूरिभिः १७

टी० कृत्तिका विशाखा ये २ नक्षत्र मिश्रसंज्ञक होते हैं इन्हीको सा
धारण भी कहते हैं इन नक्षत्रों में नामानुमिश्रितकार्य करनेसे सिद्ध होते
अंधादि नक्षत्राण्यथाह ॥ ॥ अंधकंतदनुमंदलो हैं—
चनंमध्यलोचनमतःसलोचनं ॥ रोहिणीप्रभृति +

भंवतुष्टयेसाभिजिच्चगणयेत्यु नपुनः ॥१८॥

टी० रोहिणीसे अंध मंदलोचन मध्यलोचन सुलोचन ये ४ संज्ञा
२० नक्षत्रों की क्रमसे जानना उदा० रोहिणी अंधमृग मंदलोचन आर्द्रा
मध्यलोचन पुनर्वसु सुलोचन पुष्य पुनः अंध आश्लेषा मंदलोचन मघा म
ध्यलोचन पूर्वा सुलोचन रक्षी रीतिसे २० नक्षत्रों की अंधादि संज्ञा जानना -
नष्टवस्तुपरिज्ञानमाह ॥ अंधकेलभतेशीघ्रंमंदकेचदिन

त्रयात् ॥ मध्यकेचवतुःषष्ठ्यानप्राप्नोति सुलोचने ॥१९॥

टी० किसी पृच्छकने प्रश्न किया कि हे पंडितजी हमारी हतवस्तु कब मिले
गी तो विचार करना जो अंधनक्षत्रमेवस्तु गई होय अथवा अंधनक्ष
त्रमे पृच्छकने प्रश्न किया होय तो कहना कि वस्तु जल्दी मिलेगी जो मंदलो
चन होय तो ३ दिनमें मिलेगी जो मध्यलोचन नक्षत्र होय तो ६४ दिनमें
मिलेगी सुलोचन नक्षत्र होय तो कहना प्राप्ती नही होगी -

अथ दिक्ज्ञानमाह ॥ ॥ अंधके पूर्वतौ वस्तु मंदके द
क्षिणतया ॥ पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे च सुलोचने ॥२०॥

टी० जो पृच्छक पूछे कि वस्तु किस दिशामे है अंधनक्षत्रमेवस्तु गई होय तो पूर्व
दिशामे कहना जो मंदलोचनमे गई होय तो दक्षिण दिशा कहना जो मध्यलो
चनमे गई होय तो पश्चिम दिशा कहना जो सुलोचनमे गई होय तो उत्तर दिशा कह
प्रकारांतरेण गतवस्तुलाभात्प्रज्ञानमाह ॥ अंधे सद्यः ना

प्राप्यते वस्तुनष्टे कष्टात् प्राप्यं मंदने प्रचतहत् ॥ दुरात्
प्राप्यं मध्यनेत्रे नलभ्यं न श्रोतव्यं नैवलभ्यं सनेत्रे २१

टी० जो अंधनक्षत्रमेवस्तु गई होय तो सदा प्राप्ति होगी जो मंदलोचनमे गई हो
य तो कष्टसे मिलेगी जो मध्यलोचनमे गई होय तो दूरसे अथवा माघ रहेगी ले
क्रीन मिलेगी नही जो सुलोचनमे गई होय तो अथवा भी नही होगी और न मिले
गी

नक्षत्रसे गतवस्तुपरिज्ञान ॥ ॥ मघादि अर्धमांतं
च समीपे वस्तु दृश्यते ॥ हस्तदि वस्तु पर्यंत मन्वहस्ते
च दृश्यते ॥२२॥ शतता राघ मांतं तु स्वर्गं देवस्तु दृश्यते
॥ अग्रादिसार्धपर्यंत मृहं दृश्यं तया ॥२३॥ ॥

टी० मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी ये नक्षत्रों में जो वस्तु नष्ट होय अ

थवा प्रश्नकालमेयेन सत्र होय तो समीप मिलेगी ऐसा कहना- हस्तचित्रा
स्वाती विशारवा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण
धनिष्ठा येन सत्रों मे वस्तूनष्ट होय अथवा प्रश्नकालमेयेन सत्र होय
तो कहिये दूसरे किसी के हाथ मे वस्तु है कष्ट से मिलेगी शततारका पूर्वा
भाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी येन सत्रों मे गत होय अ
थवा प्रश्नकालमेयेन सत्र होय तो कहिये कि अपने घर मे ही मिलेगी कृ
त्तिका रोहिणी मृग आर्द्रा पुनर्वसू पुष्य आश्लेषा येन सत्रों मे गत
होय अथवा प्रश्नकालमेयेन सत्र होय तो कभी मिलेगी नहीं -

अथ गत वस्तु स्थान ज्ञान माह ॥ ॥ तिथि चारं च न सत्रं प्रह

रेण समन्वितं ॥ दिक् संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥

॥ २४ ॥ एकेन भूतले द्रव्यं दूयं चेद्वांड संस्थितं ॥ तृतीये जल

मध्यस्थं मंतरिक्षे चतुर्थके ॥ २५ ॥ तुषस्थं पंचमे तु स्यात् पृष्ठे

गोमयमध्यगं ॥ सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणं ॥ २६

टी० प्रश्नकालके तिथि चार न सत्र प्रहर इनकी सबकी संख्या एकत्र कर
को १० अंक से गुणको ७ अंक से भाग लेको जो शेष बचे उसका फल कह
ना जो १ बचे तो भूमि मे कहना जो दो बचे तो किसी बरतन मे कहना जो ३
बचे तो जल के बीच मो कहना जो ४ बचे तो अंतरिक्ष की हिये सिकहर खै
रे मो कहना जो ५ बचे तो भूसा के भीतर कहना जो ६ बचे तो गोबर मे
कहना जो ७ बचे तो भस्म मे कहना इसरी तसे स्थान निश्चय कहना -

अथ मद्यारंभ मुहूर्त माह ॥ ॥ रौद्रे पित्र्ये वारुणे पौर

हते याम्ये सापे नैर्ऋते चैव धिष्ण्ये ॥ पूर्वाख्येषु त्रि

ष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारंभः कालविद्धिः पुराणैः ॥ २७ ॥

टी० आर्द्रा मघा शततारका ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल पूर्वाफाल्गु
नी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये १० नक्षत्रों मे नूतन मद्य निकालने
को आरंभ करना यह काल को जानने वाले प्राचीन ऋषियों ने कहा है

अथ वस्त्रधारण नक्षत्राण्याह ॥ ॥ रोहिणी पुष्य

पंचकेष्विधेऽनुत्तरे पिच पुनर्वसू दूय ॥ रेवती पुष्य

सुदेव ते च भेन व्यवस्त्र परिधानमिष्यते ॥ २८ ॥

टी० रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अश्लेषा उत्तराफाल्गुनी
उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा ये १३ नक्ष
त्रोंमे नूतनवस्त्र धारण शुभ होता है -

दुष्टदिनेपिवस्त्रधारणमाह ॥ ॥ विप्राक्षयात्तथोद्गहेराक्षायी
त्योर्पितंचयत् ॥ निवेधियं पिवारादौ वस्त्रं धार्य जगुर्बुधाः २९

टी० ब्राह्मण के भाजासे और विवाहमे और राजा लोगोंने जो संतो
पसे दिया हुआ ऐसे वस्त्र धारण करनेमे व्यती पातादि दुष्टदिनका भी
दोष नही होता ऐसा आचार्योंने कहा है -

मौक्तिकादिधारणनक्षत्राण्याह ॥ ॥ नामस्य पौष्णवसु मे
करपंचकेचमार्त्तंडभौम गुरुमंत्रिशशांकवारे ॥ मुक्तासुवर्ण
मणिविद्रुमदंतशंखरत्नवराणि विधृतानि भवंतिसिंध्यै ३०

टी० अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अश्लेषा ये
नक्षत्रोंमे और रवि मंगल गुरु शुक्र चन्द्र ये चारोंमे मोती सुवर्ण म
णि मूंगा हाथीदंत शंख रत्न वस्त्र इत्यादि धारण करनेसे शुभ होता है -

पुंसवननक्षत्राण्याह ॥ ॥ अश्विनः सवर्णः पुनर्वसुर्निष्कृतेर्वचस
पुष्यकोमृगः ॥ रविभूसुतजीववासरः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ३१

टी० अश्विन हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर येनक्षत्रोंमे और रवि मंगल
गुरु ये चारोंमें लक्ष्मी देवता पुंसवन करना पुंसवन कहिये पुरुष ही गर्भ
मे उत्पन्न होय इसलिये पुंसवन संस्कार प्रथम गर्भमे करना अवश्य है दि
नीयादि गर्भमे कृताकृत है सो पुंसवन संस्कार गर्भके तीसरे मासमे करना -

कर्णवेधनक्षत्राण्याह ॥ ॥ पौष्णवैष्णवकराणि
निवित्रा पुष्य वासव पुनर्वसु मैत्राः ॥ सेंद्वे अश्विन
वेधनिधाने नित्यं शान्तिमुनयो हि शिशूनां ॥ ३२ ॥

टी० रेवती अश्विन हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अश
लषा मृगशिर इन नक्षत्रोंमे बालकोंका कर्णवेध करनेको मुनी लोगोंने क
ह है -

अन्नप्राशननक्षत्राण्याह ॥ ॥ रेवतीश्रुतिपुनर्व
सुहस्तब्राह्म्यतपूष्यगमिहितयेन ॥ उत्तरेषु गदि
नदिनवान्नप्राशनं शुभं विधिः ॥ ३३ ॥

टी० रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृग आर्द्रा तीनों उ
त्तर इन नक्षत्रों में बालकों को नवान्न प्राशन करवावना -

शमश्रुकर्मणि न सन्नाप्याह ॥ ॥ पुष्ये पौष्णे चाश्विनी
ष्वेद वै च शक्रे हस्ताश्चित्रिके मेष्वादिभ्यः ॥ क्षौरकार्ये वै
ष्वावाचत्रये च मुक्ताभौमादित्यपातं गिवारान् ॥ ३४ ॥

टी० पुष्य अश्विनी रेवती मृग ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा
शततारका येन नक्षत्रों में और मंगल रवि शनि इन चारों को छोड़ को शमश्रुकर्म कर

ना -
शमश्रुकर्मणि वर्ज्या न्याह ॥ ॥ भद्रा पक्षांतरिक्ता
व्रतदिन वस्तुभूशाद्धषष्ठी पुरात्रौ संध्यापातारभास
तृशनिषु घटधनुः कर्क कन्या गतेर्क ॥ जन्मार्धे जन्ममा
से सुरदिन यजने भूषितो ग्रामयायी भुक्तो भ्यक्तो भि
षिक्तः समरदिन गतः शमश्रुकार्ये न कुर्यात् ॥ ३५ ॥ ॥

टी० भद्रा पौर्णिमा अमावास्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिन अष्टमी
प्रतिपदा आद्धदिन षष्ठी रात्री सायंकाल व्यतीपातादि दुष्टयोग भौम
मवार रविवार शनिवार कुंभ कर्क कन्या धनु ये ४ राशी के सूर्य मे जन्म न
क्षत्र जन्ममास जिस दिन हवनादिक होय उस दिन में अलंकार धारण क
रको प्रस्थान के दिन भोजन करको तैल लगायको मंगलाभिषेक जिस दिन
होय उस दिन युद्ध में जाने के दिन ये सब दिन शमश्रु कार्य कराना नही -

अस्यापवादमाह ॥ ॥ राजकार्ये नियुक्तानां नटानां रूप
जीविनां ॥ शमश्रुरो मनस्वच्छेदे नास्ति कालविशोधनं ३६

टी० राजकार्य में जो नियुक्त हैं प्रधानादिक उनको और नटको व
ह रूपी रूप से है जीवन जिनका ऐसे जो उनको शमश्रुरोम नर
च्छेद में काल विचार आवश्यक नही है -

दंतबंधन न सन्नाप्याह ॥ ॥ येषु येषु प्रशंसंति सुरक
र्म महर्षयः ॥ तेषु तेष्ववशंसंति नरवदंतादिलेखनं ॥ ३७

टी० जिन नक्षत्रों में क्षौर कार्य कहा है उन्हीं नक्षत्रों में दंत बंधन नरवर्त्तन क
अन्यदपि शमश्रुकर्म न्यापवादमाह ॥ ॥ आज्ञायानरपते
र्हि जन्मानां दाहकर्म मृतसूतकेषु च ॥ बंधमोक्षमरव

दीक्षणेपुनश्चौरमिष्टमस्त्रिलेपुनश्चिदं ॥३८॥

टी० राजाके आहासे अथवा ब्राह्मणके आहासे अंत्यक्रियानिमित्तम् तत्कालांतमे कैदी छूटने बाद यज्ञमे इतने जगह श्राद्ध अवाश्यक नहि नदेखनेका उपयोग नही है -

श्लोक० ॥ तारासुहं सौरं रविगुरुमुद्राव्रतदीप्ता ॥

सुत्रविशुद्धिर्यात्रायां सर्वशुद्धशरीरेन ॥३९॥

टी० शमश्रुकर्ममेताराशुद्धि अवश्य देखना नूतनवतग्रहणमें रविगुरुमुद्रा अवश्य देखना यात्रामे सुत्रशुद्धि देखना और सर्वकार्यमें मौनं द्रुमुद्रा देखना -

मौजीबंधननक्षत्राण्याह ॥ ॥ सौम्येपौष्णेवैष्णवेवा

सवारण्येहस्तस्वातीत्वाष्टपुष्याश्विमेपु ॥ ॥ अश्लेषादिष्वं

मेरबलाबंधमोक्षो संस्मर्यं ते नूनमाचार्यवर्यैः ॥४०॥

टी० मृग रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौजीबंधन करना और मोक्ष भी करना ऐसा आचार्यों ने लिखा है -

विवाहनक्षत्राण्याह ॥ ॥ मूलमैत्रमृगरोहिणीक

रैः पौष्णमारुतमघोत्तराश्विनैः ॥ निर्विधाभिरुद्रु

भिरृगीदृशंपाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥४१॥

टी० मूल अनुगधा मृग रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा उत्तराश्रव इन नक्षत्रोंमें और निर्वधनक्षत्रमें विवाह करना सुभेह -

अग्निहोत्रलेनेकोनक्षत्र ॥ ॥ प्राजापत्येपूषभेसाहि

दैवेपुष्यज्येष्ठासौंदेवरुतिकास्तु ॥ अम्याधानं न्युन

राणां त्रयेपि त्रेष्ट्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुरैः ॥४२॥

टी० रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृग रुतिका उत्तराश्रव इन नक्षत्रोंमें प्रथम अग्निहोत्र लेना -

विद्याभ्यासनक्षत्राण्याह ॥ ॥ मृगादिचस्वपि

भेषु मूलेहस्तादिके च त्रितयेश्विनीषु ॥ पूर्वाचपे

च श्रवणे च तद्दिद्यासमारंभमुशान्तिसि ॥ ४३

टी० मृग आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती अश्वि नी पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें वेद

शास्त्रादिविद्याका आरंभकरना -

औषधग्रहणेन सत्राग्याह ॥ ॥ पौष्णहयेचादिति

भहयेचहस्तत्रयेचश्रवणत्रयेच ॥ मैत्रेचमूलेच

मृगेचशस्तंमैषज्यकर्मप्रवदंतिसंतः ॥ ४४ ॥

टी० रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका
अनुराधा मूल मृगशिरा मकरांशे औषधलेनेसे अतिशीघ्ररोग दूर होनाहै -

रोगोत्पत्तौ शुभाशुभज्ञानं ॥ ॥ स्वात्याश्लेषा रोहिद्रू

वीत्रयेषु शाक्रेभ्यो मे सूर्यजे सूर्यवारे ॥ नंदारिक्तास्ववरो

गस्यवान्निर्मृत्युर्ह्येयः शंकरो रक्षितोऽपि ॥ ४५ ॥ ॥

टी० स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा इन नक्षत्रांशे मंगल शनि आदि
त्य इन वारो मे प्रतिपदा वही एकादशी चतुर्थी नवमी चतुर्दशी इन तिथिन
मे जो रोग उत्पन्न होय तो मृत्यु जानना शंकर सदाशिव भी रक्षण नही कर सके

रोगमुक्तौ प्रमाणमाह ॥ ॥ व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णोसमैत्रे

प्राणत्राणं जायते तस्य कच्छात् ॥ वैश्येसौम्ये रोगमुक्तिस्तु

मासाद्दिशत्यस्याद्वासराणां मघासु ॥ ४६ ॥ पक्षाद्द्वस्तेवा

सेवे सद्दिदैवमूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्येन वा हात ॥ याम्येत्वाष्ट्रे

वैष्णवे वारुणे च नैरुज्यं स्यान्नूनमेकादशा हात ॥ ४७ ॥ अ

हिर्बुध्रेतिष्य संज्ञे सभागे प्राजापत्यादित्ययोः सप्त रात्रात् ॥

रो गान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ४८

टी० रेवति अनुराधामे जो व्याधि उत्पन्न होय तो उस्का प्राण रक्षण अतिकष्टसे

होगा उत्तराषाढा मृगयेन सत्रमे जो व्याधि होय तो १ मास वंतर व्याधि ना

शहोगा मघामे २० दिन मे नाश और हस्त मे १५ दिन मे नाश और धनिष्ठा

मूल अश्विनी कृत्तिका इन नक्षत्रांशे होय तो ९ दिन मे नाश और भरणी चि

त्रा श्रवण शततारका इन मे होय तो ११ दिन मे नाश और उत्तराभाद्रपदा

पुष्य पूर्वोफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इन नक्षत्रांशे व्याधि होय तो ७ दि

न मे व्याधि नाश जानना ऐसा गर्गदि ऋषियों ने निःसंदिग्ध कहा है -

रोगमुक्तिस्त्वानमेवारनक्षत्रवर्ज्य ॥ ॥ इंदोर्वारे भागे वैच

ध्रुवेषु सर्पादित्य स्वातियुक्तेषु मेषु ॥ पित्र्ये चांत्ये चैव कु

यां लक्ष्मि नैव स्नानं रोगमुक्तस्वजंतोः ॥ ४९ ॥

टी० रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा आश्लेषा पुनर्वसु स्वाती मघा रेवती इन नक्षत्रों में और सोमशुक्र येवारों में रोगमुक्त पुरुष को स्नान नहीं करवाना -

रोगमुक्तिस्नाने दिन मुद्दिमाह ॥ ॥ लघुचरेरर्धकुजे
ज्यवारं रिक्ता तिथौ चंद्रबले च हीने ॥ केंद्रत्रिकोणार्थं न
ते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानां ॥ ५० ॥ ॥ ॥

टी० मेष कर्क तुला मकर इन लग्नों में और मंगल रवि गुरु इनवारों में और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी इन तिथि न में चन्द्र का बल ही न रहने और केंद्र कहिये लग्न चतुर्थ सप्तम दशम त्रिकोण कहिये नक्षत्र पंचम और अर्ध कहिये द्वितीय इन स्थानों में पाप रह हो - दिन में रोग विमुक्त पुरुष को वैधने स्नान करवावना -

लता औषधी वृक्षारोपण नक्षत्राणि ॥ ॥ सावित्री तिथ्या
शिवि वारुणानि मूलं विशारवा च मृदु भ्रवाणि ॥ लतौ
षधी पादपरोपणेषु शुभानि भाग्यति प्रादितानि ॥ ५१ ॥

टी० हस्त पुष्य अश्विनी शततारका मूल विशारवा मृदु कहिये चित्रा अशुभा मृग रेवती भ्रव कहिये रोहिणी तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में लता औषधी वृक्षादि लगावने से शुभ फल को देने वाले होते हैं -

कूपारं भनक्षत्राण्याह ॥ ॥ हस्तत्रये वासनवारुणं
चण्डो वंषि त्र्यं वीणि चैवोत्तराणि ॥ प्राजापत्यं चापि
नक्षत्रमाहुः कूपारं मे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥ ५२ ॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तरा भाद्रपदा रोहिणी इन नक्षत्रों में कूप कहिये कुं और नवने को आरंभ करना ऐसा नारदादि मुनिकहते हैं -

द्रव्यदेना वारुणना ॥ ॥ साधारणाग्र भ्रवदारु
णारं वैषिं व्येयं द्रव्यं द्रविणं प्रयुक्तं ॥ हस्तेन वि
न्यस्त बल प्रनष्टं नलभ्यते तं नियतं कदाचित् ॥ ५३ ॥

टी० कृतिका विशारवा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा भरणी या मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा इन नक्षत्रों में जो कोई किसी दे प्रसाधना

दिकरक्तेव याधननष्टहोजायतो कभीमिलेगानही-

ऋणग्रहणनसत्राण्याह॥ ॥मृदुपुष्याश्विनीचैववि

शाखाश्रवणत्रयं॥पुनर्वसौचशंसंतिधनादिनिधिर्वर्तनं ५४

टी० चित्रा अनुराधा मृग रेवती पुष्य अश्विनी विशाखा श्रवण धनिष्ठा
शततारका पुनर्वसु इननसत्रोंमेऋणदेनाप्रशस्तहै-

अन्यदपि॥ ॥हस्तेर्कचारेसंक्रांतौयदृणंस्यात्कुलेषुच॥

वृद्धियोगेतथाज्ञेयमृणच्छेदंतुकारयेत्॥५५॥ छ॥

टी० हस्तनसत्रमे रविवारमे संक्रांतिदिनमे वृद्धियोगमे ऋणलेनानही-
ऋणलेनेसेबहऋणपुस्तदरपुस्त चलाजाताहै औरइन्हीदिनमेऋणछे
दकरनेसेशीघ्रहीऋणनाशहोजाताहै-

अन्यदपि॥ ॥ऋणंभौमेनगृण्हीयान्नदेयंबुधवा

सरे॥ऋणच्छेदंकुजेकुर्यात्संचयंसोमनन्दने॥५६॥

टी० मंगलवारकोकर्जाऋणकिसीसेलेनानही औरबुधकोऋणदेनानही-
ऋणछेदकहियेऋणकाअदाकरनामंगलकोऔरसंग्रहकरनावुद्धको-

गजमुहूर्तमाह॥ ॥हस्तत्रयेसौम्यहरित्रयेच

पौष्णद्वयेपुष्यपुनर्वसौच॥मैत्रेचसर्वाण्यपिकुं

जराणां सर्वाणिशस्तान्यखिलानि यानि॥५७॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती मृग श्रवण धनिष्ठा शततारका रेवती अश्विनी पुष्य
पुनर्वसु अनुराधा येनसत्रोंमे औररिक्तातिथि४।९।१४। अमावास्याभौमवा
रइनकोवर्जितकरको हाथीकाबेचना औरखरीदना औरअलंकारादिकर
कोभूषितकरनायेसबहस्तिसंबंधिकर्मकरना यहवसिष्ठनेलिखाहै-

अश्वमुहूर्तमाह॥ ॥पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यभेषु

पौष्णानिलादित्यकराह्येषु॥सवारुणर्षेषुबुधैः

स्मृतानिसर्वाणिकार्याणितुरंगमानि॥५८॥ छ॥

टी० पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृग रेवती स्वाती पुनर्वसु हस्त श
ततारका इननसत्रोंमे औररिक्तातिथि४।९।१४ भौमवर्जितदिनमे
अश्वकारखरीदना औरबेचना औरअलंकारादिकरकोभूषितकरना
येसबकर्मकरनेसेशुभहोताहै यहश्रीपतीनेलिखाहै-

पशूनां यात्रा निषेधः ॥ ॥ चित्रोत्तरावेष्णावरोहिणी
षु च तुर्दशी दर्शदिवाष्टमीषु ॥ ग्रामप्रवेशं गमनं च
दध्याद्वीमान् पशूनां न कदाचिदेव ॥ ५९ ॥ ॥ ॥

टी० चित्रा उत्तरात्रयश्च श्रवणरोहिणी चतुर्दशी अमावास्या अष्टमी येतिथि न
क्षत्रमे पशुओंको घरसे बाहर निकालना नहीं और बाहरसे घर भी ल्यावाना नहीं

गोक्रयविक्रयनक्षत्राणि ॥ ॥ शक्रवासवकेरुषु
विशाखा पुष्य वारुण पुनर्वसु मेषु ॥ अश्वि पूषभ
युतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः स्मरणीया ॥ ६० ॥

टी० ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शततारका पुनर्वसु अश्विनी रेव
ती इन नक्षत्रोंमें गौकाक्रयविक्रयकरना कय कहिये द्रव्य मौल्यदे को दूसरे
से वस्तु कालेन और विक्रय कहिये मूल्य ग्रहण पूर्वक वस्तु देना -

तृणकाष्ठदिसंग्रहमुहूर्तमाह ॥ ॥ वासवोत्तरद
लादिपंचकेयाभ्यदिग्ममनगेहगोपनं ॥ प्रेतदाहत्
णकाष्ठसंग्रहः शय्यकावितरणं च वर्जयेत् ॥ ६१ ॥

टी० धनिष्ठाका उत्तरार्द्ध शततारका पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती येनक्ष
त्रोंमें दर्शिकाकी यात्रा पुराने घरको बनाना प्रेतका दाह भूतलकडीका संग्रह
पलंग खदिया आदिका बीनना ये सब काम पंचकमेन ही करना -

हलप्रवाहनसवाण्याह ॥ ॥ मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु
मूलेमघा विशारवा सहितेषु मेषु ॥ हलप्रवाहं प्र
थमं विदध्या निरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ॥ ६२ ॥

टी० चित्रा अशुभधा मृग रेवती रोहिणी तीनों उत्तराश्च अश्विनी पुष्य हस्त
अभिजित् श्रवण धनिष्ठा शततारका पुनर्वसु मूल मघा विशारवा इन न
क्षत्रोंमें प्रथम निरोगी मुष्क सहित ऐसा बैल लगायके हल चलावना -

बीजवापनमुहूर्तमाह ॥ ॥ हस्ताश्विपुष्योत्तररो
हिणीषु चित्रानुराधा मृगरेवतीषु ॥ स्तौतौ धनिष्ठासु
मघासु मूले बीजोद्भिर्हृत्कृत् फलं प्रतिष्ठा ॥ ६३ ॥ ॥

टी० हस्त अश्विनी पुष्य तीनों उत्तराश्च रोहिणी चित्रा अशुभधा मृग रेवती स्तौ
ती धनिष्ठा मूल इन नक्षत्रोंमें बीजवापन करनेसे उत्कृष्ट फल प्रद होता है -

सर्पदंशनेवर्ज्या न्याह ॥

यः कृत्तिका मूल मघा विशाखा सांपात कार्द्रा सुभुजंगदष्टः

॥ सवैनते येन सरसितो पि प्राप्नोति मृत्योर्वदने मनुष्यः ६४

टी० कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा भरणी आर्द्रा इननसत्रों मे जो सर्प का देतो गरुड रक्षण करे तो भी मनुष्य मृत्युमुख से न बचे —

गायनाभ्यासनसत्राणि ॥ ॥ हस्तस्तिष्यो वा सर्वं

चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तराच ॥ पूर्वाचार्यैः

कीर्तितं चंद्रवर्तिनृत्यारं भेशो भनोऽन्नसवर्गः ॥ ६५

टी० हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनो उत्तरा ३ इनन सत्रों मे चंद्रावुकूल देख को गाना बजावना नाचना सीखने को आरंभ करना

राज्याभिषेकनसत्राणि ॥ ॥ मैत्रशाककरपुष्यरो

हिणी वैष्णवे सुनिस्तूत रासुच ॥ रेवती मृगशिरा

शिवनी पुचस्माभृतां समभिषेक इष्यते ॥ ६६ ॥

टी० अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनो उत्तरा ३ रेवती मृग अश्विनी इननसत्रों मे राजा को राज्याभिषेक करना कथित है —

राजदर्शनमुहूर्तः ॥ ॥ सौम्याश्वितिष्यश्रवणश्रवि

ष्ठा हस्त ध्रुवत्वाष्ट्रचपूषभानि ॥ मैत्रेण युक्तानि नरे

श्वराणां विलोकने भानि शुभप्रदानि ॥ ६७ ॥ ४ ॥

टी० मृग अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त रोहिणी तीनो उत्तरा ३ चित्रा रेवती अनुराधा इननसत्रों मे राजा की मुलाकात करने से कल्याण होता है —

मासादौ चंद्रोदयफले ॥ ॥ रौद्राहिया म्या निलवारुणं

द्रान्याहुर्जघन्या नितया बृहंति ॥ ध्रुवद्विदैवादिनिभानि

नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनीन्द्रे ॥ ६८ ॥ बृहत्सुधान्यं कु

रुते समर्पजघन्यधिष्ठयेभ्युदितो महर्गता ॥ समेषु धि

ष्ठयेषु समं हि मां शुर्वदंति संदिग्धमिदं महांतः ॥ ६९ ॥

टी० आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शततारका ज्येष्ठा येन सत्रजघन्य संज्ञक होते हैं और रोहिणी तीनो उत्तरा ३ विशाखा पुनर्वसु येन सत्रबृहत्संज्ञक होते हैं शेष बचे हुए येन सत्रसमसंज्ञक होते हैं उत्प्रे बृहत्संज्ञक

कनक्षत्रमेवासादिमे चंद्रोदयजो होयतो अन्नादिक सत्ताहोगा जो मासा
दिमे जघन्यसंज्ञकनक्षत्रों मे चंद्रोदय होयतो महंगाहोगा जो सममे चं
द्रोदयहोयतो समान रहेगा ऐसा मुनी लोगो ने लिखा है —

राशिकृतचंद्रोदयफल॥ ॥ मीनमेषादितत्त्वद्रुःसत
तदक्षिणोन्नता॥ मेषोन्नता उत्तरायां समतारुषकुं
भयोः ॥७०॥ चिह्नचरंतुसमेचंद्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ॥
सुभिक्षं क्षेममारोग्यमुत्तराश्रित्य चंद्रमाः ॥७१॥ ॥

टी० शुक्रपक्षके द्वितीयाका चंद्रोदय जो मीन या मेष राशि पर होयतो चं
द्रकी उन्नता दक्षिणतरफ होती है उसका फल दुर्भिक्षताहोगी और जो
मिथुनादि मकरपर्वतराशी मे चंद्रोदय होयतो उत्तरके तरफ चंद्रकी उ
न्नताहोती है उसका फल सुभिक्षक्षेम आरोग्यहोता है और चरकुंभ
राशी मे चंद्रोदय होयतो समताहोगी फल राजा का कलहहोगा —

पुष्यनक्षत्रका गुण दोष ॥ ॥ परकष्टं निखिलं निहंति
पुष्यो नखलु निहंति परंतु पुष्यदोषं ॥ प्रथममृतक
रोष्टमेपि पुष्ये विहितमुपैति सदैव कर्मसिद्धिम् ॥७२॥

टी० पुष्यनक्षत्र अन्यदोषों को नाश करता है परंतु स्वदोष को नाश नहीं
करता और अष्टमचन्द्रमा होयतो भी पुष्यकार्यसिद्धि करता है —

अन्यदपि ॥ ॥ सिंहो यथा सर्वचतुष्यदा नांतये
वपुषो बलवानुदनां ॥ चंद्रे विरुद्धे प्यथ गोचरे
पिसित्यंतिका यौगिकता निपुष्ये ॥७४॥ ॥

टी० जैसा संपूर्णचतुष्यदों मे सिंह बलवान है तैसा ही नक्षत्रों मे पुष्य बलवान
है गोचरमे ॥७४॥ चंद्रमा होयतो भी पुष्यनक्षत्रकार्यसिद्धि को करता है —

अन्यदपि ॥ ॥ ग्रहेण विद्धो प्यशुभान्वितोपि वि
रुद्धतारोपि विलोमगोपि ॥ करोत्यवशं सकला
र्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणंतु पुष्यः ॥७५॥ ॥

टी० पुष्यनक्षत्र ग्रह करको विरुद्ध होय अथवा अशुभ ग्रह युक्त हो
य अथवा प्रतिकूल तारा होयतो भी सकल कार्यसिद्धि अवश्य करको
पुष्य करता है परंतु विवाह छोड़को —

अथदुकूलं ॥ ॥ जीवेऽर्के जे बुधे शुके वस्त्रोक्तं सर्वं श्रवा
चिते ॥ स्थिरं रोमं द्रुहैर्पुक्ते यदुकूलस्य धारणम् ॥ ११ ॥

टी० गुरु रवि चंद्र बुध शुक्र इनके बारमे वस्त्र धारण नक्षत्रमे श्रवण
पुक्त स्थिरलग्नमे शुभग्रह पुक्त मेदुकूल (दुपट्टादौ) धारण करना ॥ ११ ॥

अथ कौशेयम् ॥ ॥ अश्विनी रेवती हस्ते रोहिण्यां
श्रवणत्रये ॥ पूर्वोत्तरे पुनर्वसोः स्वाती पुष्ये मघाभि
धे ॥ १२ ॥ रवौ चंद्रे गुरौ धार्ये कौशेयवसनं जनैः ॥ ॥

टी० अश्विनी रेवती हस्त रोहिणी श्रवण धनिष्ठा शततारका ३५
वी ३५ उत्तरा पुनर्वसु स्वाती पुष्य मघा यहनक्षत्र रवि सोम गुरु य
हवारमे लोकने कौशेय (रेशमी वस्त्र) धारण करना ॥ १२ ॥

अथ रोमजं वस्त्रं ॥ नील वस्त्रोदिते पिच्छे रेवती पुष्य यो
रपि ॥ शुक्रेशनैश्च रेऽर्के च धारयेद्दोमजां वरम् ॥ १३ ॥ ॥

टी० नील वस्त्र धारणमे जो नक्षत्र और रेवती पुष्य यहनक्षत्र शु
क्र शनैश्च रवि यहवारमे रोमज (दुसालादौ) वस्त्र धारण करना ॥

अथ सतूलकंचुक धारणं ॥ ॥ पुष्योत्तरातुराधां त्ये धनिष्ठा श्रि
करत्रये ॥ रोहिण्यां गुरु शुक्राब्जे देहे दुर्ग धृतिः शुभा ॥ ॥

टी० पुष्य ३५ उत्तरा अनुराधा रेवती धनिष्ठा अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती
रोहिणी यहनक्षत्र गुरु शुक्र सोम इनके बारमे शरीरमे रुईदार वस्त्र धार
(ण करना)

अथ सुवर्णरजततंतुषपवस्त्रपरिधानं ॥

सुवर्णतंतुसंमिश्र धारणं च रवौ कुजे ॥ राजतं
तद्विशुक्तेऽब्जे वस्त्र धारणभेषु भम् ॥ १४ ॥ ॥

टी० सुवर्ण तंतु संमिश्रित वस्त्र (सेल्हादौ) रवि और भौमवारको धारण करना र
जतंतु संमिश्रित वस्त्र शुक्र सोमवार और वस्त्र धारण नक्षत्रमे शुभ ॥

अथ वस्त्रनिर्माणम् ॥ ॥ रोहिणी रेवती चित्रा नुराधा
मृगभोत्तरे ॥ शनिं हित्वा विदध्या तु तंतुभिः पटसाधनं ॥

टी० रोहिणी रेवती चित्रा अनुराधा मृग ३५ उत्तरा यहनक्षत्रमे श
निवार छोडके सबवारमे वस्त्र बनावनेको प्रारंभ करना ॥

अथोपान्तपरिधानं चर्मकृत्यं च ॥ ॥ चित्रा पूर्वानुरा

धार्ज्येष्टाश्लेषामघासृगे॥ विशाखाकृतिकामूलरे
वत्यांशकिं सूर्ययोः॥१॥ उपानत्परिधानं चर्म कर्मापिशस्यते

टी० चित्रा पूर्व्या अनुराधा आर्द्रा ज्येष्ठा आश्लेषा मघा मृग विशाखा
कृतिका मूल रेवती यहनक्षत्रमे बुध शनि सूर्य इनके बारमे उपान
त (जोडा) परिहरना और चर्म कृत्य भी करना शुभ ॥

अथ वस्त्रमयगेहनिर्माणं॥ ॥ श्रुतित्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुरा
धारेहिणीमृगे॥ हस्तत्रये पुनर्भेऽन्त्येष्ट्युत्तरे पट्वेश्मसत्॥

टी० श्रवण धनिष्ठा शतताराका अश्विनी पुष्य अनुराधा रोहिणी मृग हस्त
चित्रा स्वाती पुनर्वसु रेवती उत्तरा यहनक्षत्रमे पट्वेश्म (वस्त्रका गृह) प्र
ना

अथ गणितारंभः॥ ॥ शतद्वयेऽनुराधाईरोहिणीरे
वतीकरे॥ पुष्यजीवेबुधे कुर्यात्प्रारंभं गणितारंभं॥१॥

टी० शतताराका पूर्वाभाद्रपदा अनुराधा आर्द्रा रोहिणी रेवती हस्त
पुष्य यहनक्षत्रमे गुरु बुध इनके बारमे गणित विद्याका प्रारंभ शुभ -

अथ व्याकरणारंभः॥ रोहिण्यां पंचके हस्तासु नर्भे मृग
मेऽश्विमे॥ पुष्ये शुक्रे ज्येष्ठा रोहिणी शब्दशास्त्रं पठेत्सुधीः॥

टी० रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा पुनर्वसु मृग अश्विनी पु
ष्य यहनक्षत्रमे शुक्र गुरु बुध इनके बारमे व्याकरण विद्या प्रारंभ करना -

न्यायशास्त्राचारंभः॥ ॥ अुत्तरे रोहिणीपुष्ये पुनर्भे श्रव
णेकरे॥ अश्विन्यां शतमे स्वाती न्यायशास्त्रादिकं पठेत्॥

टी० उत्तरा रोहिणी पुष्य पुनर्वसु श्रवण हस्त अश्विनी शततारा
स्वाती यहनक्षत्रमे न्यायशास्त्र प्रारंभ करना -

वैद्यविद्यागारुडविद्यारंभः॥ हस्तत्रयेऽनुराधायां पुनर्भे श्र
वणत्रये॥ मूले चैवाश्विनीपुष्ये ज्येष्ठाश्लेषाईभे मृगे॥ ॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शततारा मूल
अश्विनी पुष्य ज्येष्ठा आश्लेषा आर्द्रा मृग यहनक्षत्रमे वैद्य वि
द्या और गारुड विद्या प्रारंभ करना -

जैनविद्यारंभः॥ ॥ श्रुतित्रये मघापूर्वा अनुराधारेव
तीत्रये॥ पुनर्भे स्वाति मे सूर्ये शुक्रे जैनार्थे मं पठेत् ॥

टी० श्रवण धनिष्ठा शततारा पूषा अनुराधा रेवती अश्विनी भरणी पु
नर्वसु स्वाती यहनसत्रमे सूर्य शुक्र इनके वारमे जैन विद्या प्रारंभ करना

लिंगांडछेदनमुहूर्तः ॥ ॥ नराश्ववृषभादीनां लिंगांडछे
दनं स्मृतम् ॥ अर्क रेज्यांत्यपुष्यार्क स्वाती दुश्रुतिवासवैः ॥

टी० सूर्य भौम गुरु यहनवारमे रेवती पुष्य हस्त स्वाती मृग श्रवण धनि
ष्ठा यहनसत्रमे नर अश्व वृषभादि इनके लिंग अंडदनका छेदन कथित है

अथ पारसी विद्या प्रारंभः ॥ ॥ ज्येष्ठा श्लेषा मघा पूर्वा रे
वती भरणी द्वये ॥ विशारवा द्रोत्तरा षाढा शतभे पाप
वासरे ॥ १ ॥ लग्ने स्थिरे च चंद्रे च पारसी मारवी पठेत् ॥

टी० ज्येष्ठा आश्लेषा मघा पूर्वा रेवती भरणी कृतिका विशारवा
आर्द्रा उत्तराषा शततारा यहनसत्रमे पापग्रह के वारमे स्थिर लग्नमे
स्थिर चन्द्रमे पारसी और मारवी विद्या प्रारंभ करना ॥ —

अथ रत्न परीक्षा ॥ ॥ पुनर्भे शतहस्तस्यैश्वर्ये ज्येष्ठे परी
क्षणम् ॥ रत्नानामष्टमी भूतं हित्वा भौमं शनैश्चरम् ॥ ॥

टी० पुनर्वसु शततारा हस्त श्रवण ज्येष्ठा यहनसत्रमे अष्टमी च
तुर्दशी इस्को छोडके रत्न परीक्षा करना —

अथ नटक्रिया ॥ ॥ मृगार्द्रा रोहिणी पुष्ये पुनर्भे श्रवण
त्रये ॥ चित्रा चोत्तरा मूले कृत्यं सन्नृत्यजीविनाम् ॥

टी० मृग आर्द्रा रोहिणी पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शततारा चि
त्रा उत्तरा मूल यहनसत्रमे नृत्यजीवीने कृत्य प्रारंभ करना —

अथान्नादिपाकक्रिया ॥ ॥ मूलं चित्रा नुराधा सुविशारवा
कृतिकामृगे ॥ उत्तरा रोहिणी ज्येष्ठा रेवती पुष्य चिक्रिया ॥ ॥

टी० मूल चित्रा अनुराधा विशारवा कृतिका मृग उत्तरा रोहिणी
ज्येष्ठा रेवती यहनसत्रमे पाक क्रिया करनेको प्रारंभ करना —

अथ रससेवनम् ॥ ॥ हस्तत्रये अश्विनी पुष्ये अनुराधा ले
श्रुतित्रये ॥ पुनर्भे मृगशीर्षे कै भौमे ज्येष्ठ रसभक्षणम् ॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती अश्विनी पुष्य अनुराधा रेवती श्रवण धनिष्ठा शत
तारा पुनर्वसु मृग हस्त यहनसत्रमे भौम गुरु इनके वारमे रसभक्षण प्रारं
भ करना

अथवनचारिकृत्यम् ॥ ज्येष्ठा स्वाती श्रिनी पुष्ये पुनर्भे
रोहिणी करे ॥ उत्तरा सुषु भंरुत्यं मृगिणां वनचारिणां ॥ ॥

टी० ज्येष्ठा स्वाती अश्विनी पुष्य पुनर्वसु रोहिणी हस्त उत्तरा
यहनसत्रमे मृगि और वनचारी इनका कृत्य करना -

अथपक्षिकृत्यम् ॥ ॥ शुभाहेसुरवैतिर्यङ् सुखेचो - ध्व
मुखेचभो सारिका शुक्रमुरब्धानां पक्षिणां कृत्यमुत्तमं ॥ ॥

टी० शुभदिनमे उत्तमसूर्यबलमे तिर्यङ्मुख नक्षत्रमे ऊर्ध्वमुख न
सत्रमे सारिका (मैना) शुक्र (सुगा) मुख्य आदि कृत्य करना -

अथभूमीकयविक्रयो ॥ ॥ जीवेशुकेचनंदासु पूर्ण
यांमूलभेमृगे ॥ पूर्वाश्लेषामघांतेचविशारवाहित
येतथा ॥ ॥ पुनर्भेमृनिभिः प्रोक्तं कपविक्रयणभुवः ॥

टी० गुरु शुक्र इनकेवारमे नदा और पूर्ण तिथीमे मूल मृग पू
३ आश्लेषा मघा रेवती विशारवा अनुराधा पुनर्वसु यहनसत्रमे
मुनीने भूमीका कयविक्रय कयविक्रय पाहे -

- अथतप्तलोहदाहः ॥ ॥ शतचित्राश्रिनीमूलेविशारवा
कृतिकार्द्रमे ॥ ज्येष्ठाश्लेषावृजेः कैंग कुरेलोहाग्निभैषजम् ॥

टी० शततारा चित्रा अश्विनीमूल विशारवा कृतिका आर्द्रा ज्येष्ठा आश्लेषा
यहनसत्रमे भौषसूर्य इनकेवारमे कूरुपमे अग्निसेतत्रलोहसेदाहकरना

अथमल्लक्रिया ॥ ॥ ज्येष्ठार्द्राभरणीपूर्वामूलाश्लेषा
मघाभिधे ॥ जया पूर्णास्तसहारेसार्केशीर्षोदपलपमे
के ॥ ॥ सत्तैवटैः कन्द्रगैसार्कैः पलुकीडाशुभावहा ॥

टी० ज्येष्ठा आर्द्रा भरणी पूर्वा मूल आश्लेषा मघा यहनसत्र
मे जया पूर्ण तिथी शुभवारमे अर्क सहित शीर्षोदपलपमे अर्क
सहित शुभग्रह केंद्रमे होपरेसे कालमे मसु कीडा शुभजानना -

- अपसेतुबंधः ॥ ॥ अतारोहिणीस्वातीमृगेः कैमं
गलेगुरो ॥ सेतूनां बंधनं शरंतसुपेलप्रेषुपे सिने ॥ ॥

टी० उत्तरा रोहिणी स्वाती मृग यहनसत्रमे रवि भौम गुरु इनकेवारमे
शुभरूपशुभग्रहसे अक्लोकिंत रस्तेतुबंधन (पूलइत्यादि) बनावना शुभ

अथकुंभकारकृत्यम् ॥ ॥ पुनर्वसू हृषेहस्तत्रयेत्येरो
हिणी मृगे ॥ अनुराधा श्रवणे ज्येष्ठा सूर्ये सौम्यवासरे
॥ १ ॥ तथा चरोदये प्रोक्ता कुंभकारक्रिया बुधैः ॥ ७ ॥

टी० पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती रेवती रोहिणी मृग अनुराधा श्रवण ज्येष्ठा
यहनक्षत्रमे रविसहितशुभवारमे चरलग्नमे कुंभकार (सोहार) काकर्मकरणा-

अथकाष्ठशिल्पकृत्यम् ॥ ॥ हस्तषट्केऽश्विनीपुष्येरेवत्यांश्रव
णत्रये ॥ पुनर्वसो रोहिणी युग्मे सूत्रधारी क्रियोत्तमा ॥ १ ॥

टी० हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा अश्विनी पुष्य रेवती श्रव
ण धनिष्ठा शततारा पुनर्वसु रोहिणी मृग यहनक्षत्रमे सूत्रधारी (बडही) काकर्मकरणा-

अथस्वर्णकारकृत्यम् ॥ ॥ श्रवणेष्विनीपुष्ये मृगे हस्त
चतुष्टये ॥ कृतिकायां पुनर्वसोः शुभलग्ने तिथावपि ॥

॥ १ ॥ हेमकारक्रिया शस्ता हित्वा बुधशनेश्चरौ ॥ ७ ॥

टी० श्रवण धनिष्ठा शततारा अश्विनी पुष्य मृग हस्त चित्रा स्वाती
विशाखा कृतिका पुनर्वसु यहनक्षत्रमे शुभलग्ने मे शुभतिथी मे
हेमकार (सोहार) काकर्म बुध और शनी इनको त्याग करके करना शुभ-

अथचौरकृत्यम् ॥ ॥ विशाखा कृतिका पूर्वा मूला द्रुम
रणी मघे ॥ आश्लेषा ज्येष्ठयोर्मदभौ मघोः शकुनेव
ले ॥ १ ॥ लग्ने वा दशमे भौमे चौर्यसद्व्यलब्धये ॥

टी० विशाखा कृतिका पू० ३ मूल आर्द्रा भरणी मघा आश्लेषा ज्येष्ठा यहन
क्षत्रमे शनिभौम इनके वारमे शकुनवलमे गमनलग्ने भौमहोय अथवा
दशमहोय ऐसे कालमे उत्तम द्रव्यलाभके वास्ते चौर्यकर्मकरणा ॥ -

अथरत्नयुक्तभूषाघटनं ॥ ॥ कृतिकादित्रये हस्तपं
चके रेवती हृषे ॥ श्रुतित्रये पुनर्वसोः पुष्यमे चोत्तरात्र
ये ॥ १ ॥ कुजे कैरत्नयुक्तभूषाघटनं शुभवासरे ॥ ७ ॥

टी० कृतिकारोहिणी मृग हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा रेवती
अश्विनी श्रवण धनिष्ठा शततारा पुनर्वसु पुष्य उत्तरा यहनक्षत्र
मे भौमसूर्य और शुभवारमे रत्नयुक्तभूषण वनावने को आरंभ करना

॥ इति नक्षत्रप्रकरणम् ॥

॥अथयोगप्रकरणम्॥ ॥वाक्यतेरर्केनक्षत्रंशवपत्ता

चांद्रमैवच॥गणयेत्तुनिर्गुणयोगः स्यात्सशेषतः १

टी० पुष्यनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रनक्षत्रगिनकी और श्रवणसे दिननक्षत्रनक्षत्र गिनकी दोनोकी संख्या एकत्र करकी २० से भाग देने का शेष बचे सो योग कह ना जैसा संघत् १२२५ ज्येष्ठ शुद्ध ३ सोमवार आर्द्रा नक्षत्र है सो उस दिन योग कौन है ऐसा प्रश्न करे तो गिनती करना पुष्यनक्षत्रसे रोहिणी सूर्यनक्षत्र २४ हुवे और श्रवणसे आर्द्रा दिननक्षत्र १२ हुवे तो दोनो मिलावने से ३६ हुवे ३६ से २० का भाग देने से बचा शेष १६ तो उस दिन मूल योग तु वारे सा जानना

योगनामानि॥ ॥विष्कम्भः प्रीतिगुप्ताभ्यां शोभन

स्तथा॥अतिगंडः सुकर्माचधुनिः मूलस्तथैवच॥२॥ गंडो

दृष्टिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा॥वज्रः सिद्धिर्व्यती

पातो वरीयान्परिघः शिवः॥३॥ सिद्धः साध्यः शुभः शुद्धो

ब्रह्मैवैवृत्तिः क्रमात्॥सप्तविंशतियोगस्तु कर्पुर्नमसमं फलं ४

टी० विष्कम्भ आदि २७ योग जो हैं सो नीचे कोष्टक में स्पष्ट देखेगा

और सत्तार्द सो कानामसदृशफल जानना —

| | | | | | | | | | |
|---|----------|----|--------|----|---------|----|---------|----|---------|
| १ | विष्कम्भ | ७ | लुक्मी | १५ | ध्रुव | २३ | व्याघात | ३१ | साध्य |
| २ | प्रीति | ८ | धुनि | १६ | व्याघात | २४ | वरिषान | ३२ | शुभ |
| ३ | अगुप्ता | ९ | मूल | १७ | हर्षण | २५ | परिघ | ३३ | शुक्ल |
| ४ | शोभन | १० | गंड | १८ | वज्र | २६ | शिव | ३४ | ब्रह्मा |
| ५ | शोभन | ११ | दृष्टि | १९ | सिद्धि | २७ | सिद्ध | ३५ | शुद्धि |
| ६ | अतिगंड | | | | | | | | |

योगवर्ज्यघटिका॥ ॥विरुद्धसंज्ञाद्वयैवयोगास्तेषामनिष्टः

खलुपादआयः॥सर्वैवृत्तिस्तु व्यनिपातनायासर्को व्यनिष्टः परिघ

स्य चार्द॥५॥तिस्रस्तुयोगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञेन वर्ण्य च

मूले॥गंडेति गंडे च षडे वनादयः शुभे पुकार्ये सुविबर्जनीयाः॥६॥

टी० सत्तार्दसयोगों पे जो विरुद्ध नामक योग हैं जैसे मूल वज्रादि इनका

प्रथमपाद अनिष्ट जानना और वैवृत्ति व्यनिपात तस्केकारों पाद अनिष्ट

जानना परिघका पूर्वार्द अनिष्ट विष्कम्भ योगकी आदि ३५टी अनिष्ट

वज्र योगकी आदि २५टी व्याघात योगकी २५टी मूल १५टी गंड और

२अतिगंड इनकी ६ घटी अनिष्ट जानना — ॥इति योगप्रकरणम्॥ ॥

अथकरणप्रकरणम्॥

करणानयनं॥ ॥ गतनिश्रयोदिनिग्राशुकुप्रतिप

दादिनः॥ एकोनासप्तकच्छेषं करणं स्याद्दवादिकं ?

टी० जिसदिनकरणल्यावनां होय तो शुकुप्रतिपदासे वर्तमान तिथी तक गिनको उसको द्विगुणित करको उसमें एक कम करको ७ से भागले को जो शेष बचे सो तिथी का करण जानना॥

करणनामानि॥ बवाब्हयं बालवकौलवारय्यंततो भवे

नैतिलनामधेयं॥ गरभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहु

रार्याः करणानि सप्त॥ २॥ अंतैरुष्णचतुर्दश्यां शुकुनि

र्दशा भागयोः॥ शेषं चतुष्पदं नागं किंस्तु प्रप्रतिपदले ३

टी० बव १ बालव २ कौलव ३ नैतिल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टि कहिये भद्रा ७ ये सात करण होते हैं और रुष्ण १४ के उत्तरार्द्ध में शकुनी नाम करण होता है अमावास्या के पूर्वोत्तरार्द्ध में कम से चतुष्पद और नाग में २ करण होते हैं किंस्तु प्र नाम करण प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में होता है॥

करणस्वामिनः॥ ॥ इन्द्रो ब्रह्मा मित्रनामार्थमाभूः श्रीः

कीनाशश्चेति निष्कर्षनाथाः॥ कल्पुसारव्योसर्पवा

युस्तथैव ये च त्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णां॥ ४॥ ७॥

टी० इन्द्र ब्रह्मा मित्र अर्यमा भूमी रुहमी यम ये ७ देवता बवादि ७ करणों के होते हैं और शकुनी नाग चतुष्पद किंस्तु प्र ये ४ करण के देवता कलि वृष भसर्प वा युक्रम से जानना और ये चारों स्थिर जानना -

करणकृत्यानि॥ पौष्टिकं स्थिरशुभानिववारय्ये बालवे द्विज

हिता न्यपि कुर्यात्॥ कौलवे प्रमद मित्रविधानं नैतिलेशुभ

गताश्रमकर्म॥ ५॥ गरेचवीजाश्रय कर्षणानि वणिज्य के स्थे

र्य वणिक् क्रियाश्च॥ न सिद्धि मायातिकृतं च विष्ट्यं विषारि

धानादिषु न त्रिसिद्धिः॥ ६॥ मंत्रौषधानि शकुनौ तु सपौष्टिका

निगोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदेति॥ सो भाग्यसारुणधृ

ति प्रवकर्म नागे किंस्तु प्रना चिनिखिलं शुभकर्म कार्यं ७

टी० वव करण में पौष्टिक व्रत शांत्यादि स्थिर कर्म देवालय नडाग कृपादि

ये कार्य करना बालवकरण में हिज काहित करना- कौलवकरण में मित्रना
माने दोस्ती करना- और उस्ताहादिक करना- नैतिलकरण में विवाहादि मंग
ल कार्य करना- गरकरण में बीज का बोना और हल चलावना- वणिज
करण में देवता स्थापन तलाव बाबली गृह इनको बांधना और दुका
नदारी करना और विधि माने भद्राकरण में विष प्रयोग शत्रु घात इत्यादि
कर्म करना- शुभ कार्य कोई करना नहीं शकुनिकरण में पौष्टिक माने में
ओपदेश औषध ग्रहण ग्रह शांतिादिकर्म करना चतुष्पदकरण में गौको
खरीदना बैचना ब्राह्मण से वाराज्याभिषेक पितृ कार्य करना नागकरण
में सौभाग्य कर्म दारुण कर्म धैर्य कर्म विद्याभ्यासादिकर्म करना किंस्तुष्ट
करण में संपूर्ण कर्म करना- ॥ ॥ भद्रास्वरूपमाह ॥ ॥

दैत्यैः समरे मरेषु विजितेष्वीशः क्रुधा दृष्ट्वा त्वं कायात्किल वि
र्गतमवरमुखीलां मूलिनीं चक्रपात्नम् ॥ विधिः स त्त भुजा मृगेंद्रगलका
शा मोदरी प्रेतगा दैत्यघ्नी मुदितैः सुरैस्तु करण प्रांतैर्नियुक्ता तु सा ॥ ॥
टी० देवासुरसंग्राम में दैत्यैः दूकर को देवतों का पराजय भया ऐसा जान को
महादेव को क्रोध उत्पन्न हुआ तब स्वशरीर से शक्ति विधिनामक उत्पन्न
हुई उस्का मुख गर्भ के ऐसा और पुच्छ वसी चक्र के ऐसे जिस्के गोड और
७ भुजा सिंह के कंठ के ऐसा कंठ कशोदरी और प्रेत के ऊपर बैठ के गमन क
रने वाली ऐसी शक्ति दैत्यो को नाश करने वाली देवतों ने देस के अत्यंत हर्ष
पूर्वक अपने करण प्रांत में नियुक्त किया तब उसी शक्ति के सहायता से देव
तों ने दैत्यों का पराजय किया ऐसा भद्रा का स्वरूप और उस्का पराक्रम क
वियों ने कथन किया है- ॥ ॥ भद्रा निधिमान ॥ ॥

शुक्ले पूर्वाह्नेष्टमी पंचदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे ॥ क
थोत्पार्थे स्यात्तृतीया दशम्योः पूर्वे भागे सप्तमी शंभु तिथ्योः ९
टी० शुक्लपक्ष में अष्टमी ८ और पौर्णिमा १५ रस्के पूर्वदल में भद्रा होती है और उ
सी पक्ष में चतुर्थी ४ और एकादशी ११ के परदल में भद्रा होती है और कृष्णपक्ष में त
ृतीया और दशमी १० के परदल में भद्रा और सप्तमी ७ और चतुर्थी ४ के पूर्वदल
अन्यदपि ॥ ॥ दिवा सर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रा तु वृश्चि (यमहादेव)
की ॥ सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् ॥ १० ॥

टी० दिनको भद्रासर्पमुखी होती है और रात्रीमे भद्रावृश्चिकी होती है २
सहिये दिनको सर्पका मुख त्यागकर ना और रात्रिको पुच्छ परित्याग करना -

भद्रायाः मुखपुच्छविचारः॥ ॥ पंचद्व्यद्विहताष्टराभरस
भूयामादि घट्यः शराविष्टे रास्यमसङ्गजेतुरसरा माघशिव
वाणाब्धिषु॥ यामेष्वंत्यघटित्रयं शुभकरं पुच्छं तथा वासरे
विष्टिस्तिष्ठ्य परार्धजा शुभकरी रात्रौ च पूर्वार्द्धजा॥ ११॥

टी० शुक्लपक्षीयचतुर्थीके पांचवे प्रहरकी पहिली पांचघड़ी भद्राका मुख
होता है सो शुभकर्ममे निबंध्य है एवं शुक्लपक्षीय अष्टमीके द्वितीय प्रहरकी आ
दि ५ घड़ी मुख एवं एकादशीके सप्तम प्रहरकी ५ घड़ी मुख एवं पूर्णिमाकी ४
प्रहरकी ५ घड़ी मुख एवं कृष्णपक्षीय तृतीयाकी अष्टम प्रहरकी आदि ५ घ
ड़ी मुख एवं सप्तमीके तृतीय प्रहरकी आदि ५ घड़ी मुख एवं दशमीमे षष्ठ प्रह
रकी आदि ५ घड़ी भद्रा मुख एवं चतुर्दशीके प्रथम प्रहरकी ५ घड़ी भद्रा मुख
होता है सो सर्वत्र शुभकर्ममे निबंध्य है इसी तरे से शुक्लपक्षमे चतुर्थीको अष्टम
प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी भद्रा पुच्छ होता है सो शुभ है एवं अष्टमीको प्रथम प्रहरकी
अंत्य ३ घड़ी पुच्छ एकादशीको ६ यामकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ पूर्णिमाको ३
प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ द्वासीरीतिसे कृष्णपक्षके तृतीयाको ७ प्रहरकी अं
त्य ३ घड़ी पुच्छ सप्तमीको २ प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ दशमीको ५ प्रहर
की अंत्य ३ घड़ी पुच्छ चतुर्दशीको ४ प्रहरकी अंत्य ३ घड़ी पुच्छ सो जानना
सो शुभकर है और जो परदलकी भद्रा पूर्वदलमे होय और पूर्वदलकी
भद्रा परदलमे होय तो वह भद्रा सम्पूर्ण कर्ममे शुभकारक जानना -

भद्रायाः शरीरविभागमाह॥ ॥ मुखे पंचगले त्वेकावसस्येका
दशस्मृताः॥ नाभौ चतस्रः षट्कृत्यांति स्त्रः पुच्छे तु नाडिकाः १२
टी० मुखमे ५ कंठमे १ हृदयमे १ नाभिमे ४ कटिमे ६ पुच्छमे ३ घड़ी
इस तरे स ३० घड़ीमे भद्राका अंगविभाग होता है -

॥ फलमाह॥ ॥ कार्यहानिमुखे मृत्युर्गले वससिनिःस्त्र
ता॥ कट्यामुन्नततानाभौ च्युतिः पुच्छे प्रवोजयः॥ १३॥
टी० मुखमे कार्यहानि कंठमे मृत्यु हृदयमे दरिद्रता कटीमे उन्नतता
नाभिमे कार्यनाश पुच्छमे जपला भोगा -

चन्द्रतः स्वर्गमृत्युपातालवासज्ञानमाह

कर्ककुम्भद्वये भूस्पाकौ पर्यं जवितयेद्युगा ॥ कन्या

चापद्वये चंद्रे भद्रा पातालवासिनी ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

टी० कर्क सिंह कुम्भमीन ये धराशीके चन्द्रमे भद्राका वास पृथ्वी मे जानना वृ
श्चिकमे वृषभ मिथुन ये धराशीके चंद्रमे भद्राका वास स्वर्ग मे जानना क
न्या तुला धन मकर ये धराशीके चन्द्रमे भद्राका वास पाताल मे जानना -

फलम् ॥ ॥ स्वर्गभद्रा भवेत्सौरव्यं पाताले च धनाग

मः ॥ मृत्युलोके यदा भद्राकार्यं सिद्धिस्तदा न हि ॥ १५ ॥

टी० भद्रा स्वर्ग मे रहने से सौख्य फल पाताल मे धनागम - फल मृत्यु
लोक मे भद्रा कार्य हा निकरती है -

वारपरत्वनामज्ञानं ॥ ॥ सोमेशु केच कल्याणी शनौ चैव तु

वृश्चिकी ॥ गुरौ पुण्यवती शेषा चान्यवारेषु भद्रिका १६

टी० सोम शुक्रको भद्रा होय तो कल्याणी जानना शनिवारको वृश्चिकी
गुरुवारको पुण्यवती और रवि मंगल बुधको होय तो भद्रिका नाम जान
ना नामानुसूय ही फल जानना - ॥ इतिकरणप्रकरणम् ॥ ॥

अद्य संक्रांतिप्रकरणम् ॥ ॥ घोरारवौ ध्वांसी मृत

युतौ च संक्रांतिरारे च महोदरी स्यात् ॥ मंदाकिनी हे

च गुरौ च मंदा मिश्रा भृगौ राक्षसि चार्क पुत्रे ॥ १ ॥ ॥

टी० रविवारके दिन संक्रांति होय तो घोर नाम जानना सोमको ध्वांसी
नाम मंगलको महोदरी नाम बुधको मंदाकिनी नाम बृहस्पतको मंदा
नाम शुक्रको मिश्रा नाम शनिवारके दिन होय तो राक्षसी नाम जानना -

अन्यदपि ॥ ॥ उग्रसि प्रचरै र्मेघ भुव मिश्रा रव्यदक्ष

पौ ॥ क्रसै संक्रांतिरै र्मेघ घोरारवा क्रमशी भवेत् ॥ २ ॥

टी० उग्रनक्षत्र नीनो पूर्वा भरणी मघा इननक्षत्रमे संक्रांती होय तो घोर
नाम जानना सिप्र हस्त अभिनी पुष्य अभिजित् इसनक्षत्रों मे ध्वांसी ना
म जानना चर स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शततारका इसनक्षत्रों मे महो
दरी नाम जानना मेघ भृगु रेवती चित्रा अनुराधा इसनक्षत्रों मे मंदाकिनी
नाम जानना भुव नीनो उत्तरा रोहिणी इसनक्षत्रों मे मंदा नाम जानना

मिश्र विशाखा रुतिका इसन क्षत्रौ मे मिश्रनाम जानना हारुण मूल ज्येष्ठा आर्द्रा आश्लेषा इसन क्षत्रौ मे संक्रांति होय तो राक्षसी नाम जानना फलं ॥ ॥ ध्वांक्षी वैश्यान् सुखयति महोदयं लंचोरसार्थानघो राशूद्रानथनरपतीने वमंदाकिनी च ॥ नंदारख्या च द्विजवरगणान् मिश्रकारख्या पशून्श्च चांडालानां प्रकृतिमखिलां राक्षसीं संतिता च ३ टी० ध्वांक्षी नाम होय तो वैश्यको सुख जानना महोदरी होय तो चोरको सुख पोरा होय तो शूद्रको सुख मंदाकिनी नाम होय तो राजाको सुख नंदाना महोय तो ब्राह्मणको सुख मिश्राना महोय तो पशूको सुख राक्षसी नाम होय तो चांडालादिकको सुख जानना -

कालफल ॥ पूर्वाण्ह काले नृपति द्विजेंद्रान् मध्यं दिने चाथविशोप राणहे ॥ शूद्रान् रात्रौ वस्तमिते प्रदोषे पिशाचकान् रात्रिचरान् निशीथे ॥ ४ ॥ नटादिकाश्चापररात्रकाले प्रत्यूषकाले पशुपालकांश्च ॥ संक्रांति र्कस्य समस्त लिंगां प्रभातसंध्यासमये निहंति ॥ ५ ॥ टी० दिनके प्रथम भाग मे होय तो ब्राह्मणको और राजाको दुःख जानना मध्यान्ह मे होय तो वैश्यको दुःख जानना दिनके तृतीय भाग मे होय तो शूद्रको दुःख जानना रात्रिके प्रथम भाग मे होय तो पिशाचको दुःख जानना मध्यरात्रि मे होय तो राक्षसको दुःख जानना रात्री के तृतीय भाग मे होय तो नटादिकको दुःख जानना अरुणोदय काल मे होय तो पशुपालकको दुःख जानना सूर्योदय काल मे होय तो गुप्तोदय कालको दुःख जानना -

संक्रांति मुखं ॥ ॥ अर्केशु क्रैमुखं पूर्वैः सौम्ये भौमे च दक्षिणे ॥ शनौ चंद्रे मुखं पश्चाद्गुरौ चैवोत्तरा मुखी ॥ ६ ॥ टी० रवि और शुक्र के दिन होय तो पूर्व मुख जानना बुध और मंगलको होय तो दक्षिण मुख जानना शनि के सोमको होय तो पश्चिम मुख जानना बृहस्पति के दिन होय तो उत्तर मुख जानना -

करण परत्वे संक्रांति मुखं ॥ ॥ बवे पूर्व मुखं प्रोक्तं बालवे यमदि ३ मुखं ॥ कौलवे पश्चिम मुखं तैत्तिरीयं चोत्तरं मुखं ७ गेराय वैदिव चक्राणि ज्याये यदि ३ मुखं ॥ धद्राणी शदि ग्वं शकुने निर्कतो मुखं ॥ ८ ॥ चतुष्पदी च पाताले नागे चोर्ध्व

मुखी भवेत् ॥ किंस्तु भेसर्वदिग्बन्धं संक्रान्तिमुखलक्षणं ॥ ११ ॥

टी० नवकरणभेसंक्रान्तिहोयतो पूर्वमुखजानना बालवकरणभेहोयतो दक्षिणमुखजानना कौलवकरणभेहोयतो पश्चिममुखजानना तैत्तिरुकरणभेहोयतो उत्तरमुखजानना गरकरणभेहोयतो वायव्यमुखजानना वणिजकरणभेहोयतो आग्नेयमुखजानना भद्राकरणभेहोयतो दक्षिणमुखजानना शकुनीकरणभेहोयतो नैर्ऋत्यमुखजानना चतुष्पदकरणभेहोयतो पातालमुखजानना गगकरणभेहोयतो ऊर्ध्वमुखजानना किंस्तु घ्नकरणभेहोयतो सर्वदिग् मुखजानना ॥ अथ दृष्टिः ॥

चंद्रपुंरौ दृष्टिविदिकूलशानौ सूर्यसितेनैर्ऋतिकोणदृष्टिः ॥

पानीमुनेरुक्पवनेनिरुक्तावुपेशनौरुद्रदिशीरणा भवेत् १०

टी० सोम और बृहस्पतिको होयतो अग्निकोणमें दृष्टि जानना रवि और शुक्रको होयतो नैर्ऋत्यकोणमें जानना मंगलको होयतो वायुकोणमें जानना बुधवोशनीको संक्रान्ति होयतो दक्षिणकोणमें जानना

अथ गमनं ॥ ॥ मंदेर्चंद्रे गमः सौम्यबुधे भौमे च वारु

णे ॥ रवौ शुके नभोयाम्ये पुंरौ प्राग्यमनस्मृतम् ॥ ११ ॥

टी० शनी और सोमको होयतो उत्तरदिशामें गमन जानना बुध और मंगलको होयतो पश्चिम गमन जानना रवि और शुक्रको होयतो दक्षिण गमन जानना बृहस्पतिको होयतो पूर्वदिशामें गमन जानना

स्थितिः ॥ ॥ चतुष्पदेनैतिलनागयोश्च सप्तोरविः संक्र

मणं करोति ॥ विद्याह्वाख्ये च गराह्ये च सवालवाख्ये

स्थित एव विज्ञे ॥ १२ ॥ फलः ॥ ॥ किंस्तु घ्ननाग्निशकुने च

णिकौलवाख्ये चोर्ध्वस्थितस्य खलु संक्रमणं स्वस्मान् ॥

पान्धार्यविष्टिषु भवेत् क्रमशस्त्वदृष्टो मयेष्टेति मुनयः

प्रवदन्ति पूर्वे ॥ १३ ॥ ॥ बाहना ॥ ॥ सिंहो व्याघ्रो वराहश्च ग

र्दभः कुंजरस्तथा ॥ महिषी घोदकश्चावद्या गोवृषभकुक्कु

टौ ॥ १४ ॥ गजो वाजिर्यो मेघः सरोष्ठे केसरी क्रयान् ॥ शा

दूतमहिषी व्याघ्रवानराश्च बवादितः ॥ १५ ॥ ॥ फलः ॥ ॥

गजं लक्ष्मीं वृषं स्थैर्यं घोदके वाहने तथा ॥ सिंहो व्याघ्रे भयं

प्रोक्तं सभिस्संगर्दभेश्रुनौ ॥१६॥ वराहे महती पीडा जायते
 मेघवाहने ॥ महिष्योश्च भवेत् कुशः कुकुटे मृत्युरेव च ॥१७॥
 ॥ वस्त्र ॥ श्वेतपीतहरितं च पांडुरं रक्तं श्यामं मसितं बहु
 वर्णं ॥ कंबलं विवसनं घनवर्णं न्यशुक्रानि च ववादितः क्र
 मात् ॥१८॥ आयुध ॥ ॥ भुशुंडी च गदारुडं दंडकोदंडतो
 मरान् ॥ कुंतपाशा कुशास्त्रं च बाणश्चैवायुधं बवात् ॥१९॥
 ॥ भोजनपात्र ॥ ॥ सोवर्णं राजतं ताम्रं कांस्यं लोहं च रव
 र्परं ॥ पत्रं वस्त्रं करोधूमिः काष्ठपात्रं ववादितः ॥२०॥ ॥
 ॥ भक्ष्यपदार्थ ॥ ॥ अन्नं च पायसं भक्ष्यं पक्वान्नं च पयो द
 धि ॥ चित्रा नंगुडमध्याज्यं शर्करा तु बवादितः ॥२१॥ ॥
 ॥ लेपन ॥ कस्तूरी कुंकुमं चैव चंदनं मृत्तिका नथा ॥ गोरोच
 नमरक्तश्च हरिद्रा च तथा जने ॥२२॥ सिंदूरमगरुश्चैव क
 रूरश्च ववादितः ॥ ॥ जाति ॥ ॥ देवभूता हि विहगपशवो
 मृगएव च ॥ ब्रह्मसत्रियविद्वद्भूमिश्रजाती बवादितः ॥
 ॥२३॥ पुष्पा ॥ पुन्नागजाती बकुलश्च केतकी विल्वस्तथा
 कंकमलं च दूर्वा ॥ मल्ली तथा पाटलिका जपा च वदिषु
 प्याणि च योजयेत् ॥२४॥ ॥ भूषण ॥ ॥ नूपुरं कंकणं मुक्ता
 विद्रुमं मुकुटं मणि ॥ गुंजा वराटकं नीलं गरुत्पं रुक्मकं व
 दात् ॥२५॥ ॥ कंचुकी ॥ ॥ विचित्रपत्रांशुकभूर्जपत्रिका
 सीता तथा पाटल नीलवर्णा ॥ कृष्णाजिनं च मेषवल्कलां
 दुरा ववादितश्चैव तु कंचुकी स्यात् ॥२६॥ ॥ वय ॥ शिशू
 कुमारी च गता लका युवा प्रौढा प्रगल्भा च तनश्च वृद्धा ॥
 वंध्याति वंध्या च सुतार्थिनी च प्रव्राजका चैव फलं शुभं
 बवात् ॥ यद्दह्यो नुरुपं स्यात् तस्य तस्य महद्द्वयम् ॥
 ॥२७॥ पंथाश्च भोगरतिहास्यदुर्मुखी ज्वरान्विता भु
 क्तिसुकं पितामृता ॥ ध्यानस्थिता कर्कश बद्धरूपिणी
 ववाच वस्थाः कथिता मुनींद्रैः ॥२८॥

टी० ये सब वस्तुका नीचे लिखे चक्रपरसे स्तन होवेगा - कोटक

| | | | | | | | | | | | |
|--------|--------|--------|-------|-------|------|------|------|------|------|------|------|
| रुण | वद | बाहव | होत्र | नेत्र | ग | गण | विधु | गुण | गुण | नाग | मि |
| विनी | वेदी | वेदी | खडी | खडी | खडी | खडी | खडी | खडी | खडी | खडी | खडी |
| फल | मध | मध | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा |
| नाहन | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह |
| उ. वा | होती | होती | होती | होती | होती | होती | होती | होती | होती | होती | होती |
| फल | मध | मध | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह | मिह |
| वत्स | सफेद | वीला | हरी | गुण | लाल | नील | लाल | लाल | लाल | लाल | लाल |
| आयु | लोफ | मदा | खडी | दंड | धनु | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा |
| मात्र | मोना | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी |
| महगा | अन्ना | लोफ | मान | दंड | दंड | दंड | दंड | दंड | दंड | दंड | दंड |
| लेपन | लाल | लोरी | वदन | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी |
| वर्ण | देव | भूम | सर्प | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा |
| पुष्प | केसर | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी |
| भूषण | धुंगरु | कमना | मोदी | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा |
| कुचुकी | लोरी | पत्ता | हरी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी | मोदी |
| वय | बाह | कुमारी | विध | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा |
| अवस्था | महगा | मोदी | रति | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा | महगा |

फल॥ ॥ आ गुपंवाहनाहारोयज्जातीयेधनंचयत् ॥

सत्त्वोपविष्टास्तिष्ठन्तस्तेलोकक्षययापुयुः ॥ २९ ॥

टी० जोवाहनादिक्वत्स्वरसंक्रान्तिकाभोगहीयतोउसवस्तुक्कानाशजानना

मूर्तयः॥ ॥ संक्रांतौमूर्तिभेदाहरपवनयमेवारुणेसापे

ऐंद्रेषांपंचेदुसंज्ञागुरुकरपित्तभेदापिदस्त्रेचसौम्ये

॥ त्वाष्ट्रैर्मैत्रेचमूलेश्रुतिवसुधपुषात्रीणिपूर्वाखरा

मैत्राहोदित्येहिदैवेभयतिशरकतादुनरात्रीणिक्वसं

॥ ३० ॥ बाणवेदैःसमर्पस्यान्ध्यास्थानामरामयोः॥ मू

र्त्तोपचद्रोपातेदुर्भिक्षंचप्रजायते॥ ३१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

टी० संक्रांतौकापूर्तिभेदकहनेहैं आदौ स्थाती भरणी शततारका आखेना

जेछाईसनसत्रमेहोयतोदुर्भिक्षहोयप्रजाकोदुःखहोयनामूर्तीजाननाउय

दस्त-मघा कृतिका अश्विनीचृन चित्रा अनुषाभा मूल ज्येष्ठा धनिष्ठारेपती

तीनोपूर्व दसनसत्रमेहोयतोमध्यमफलजानना२० मूर्ती रेहिणी पुनर्वसु

विशखा तोनोउत्तरा दसनसत्रमेहोयतोअन्योसुखहोय५५ मूर्ती जानना

दूसरा प्रकार ॥ ॥ पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिनक्ष
कं ॥ द्वित्रिसंख्यासमर्धस्याचतुःपंचमहर्घता ॥ ३२ ॥

टी० गत्रसंक्रांतिसे प्राप्तसंक्रांतिकगिनना २ अथवा तीन नक्षत्रका अंतर
होय तो समर्ध जानना ४ अथवा ५ नक्षत्रका अंतर होय तो दुर्भिस जानना

अन्यदपि ॥ संक्रांतिनाडीनवमिथ्रिताचसप्ताहतापावकभा
जिताच ॥ एकेसमर्धदिनयेचसौम्यशून्ये महर्धमुनेयोवदंति ३३
टी० संक्रांतीके घड़ीमे ६ मिलावना ७ से गुण देना ३ से भाग लेना १ शेषरहे तो
उत्तमफल जानना २ शेषरहे तो मध्यम जानना ० शेषरहे तो महर्धता जानना

संक्रांतिनक्षत्रफल ॥ ॥ संक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभा
वधि ॥ त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं पुनः पुनः ॥ ३४ ॥
पंचाभोगो व्यथा वस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥ ३५ ॥

टी० संक्रांतिजिसनक्षत्रमेलगे उसनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक गिनने की रीति
प्रथम १ नक्षत्र पंचा ६ भोग ३ व्यथा वस्त्र ३ हानि ६ धन प्राप्ती दूसरी तिसे जानना

जन्ममासतिथीनक्षत्रफल ॥ ॥ यस्य जन्मर्क्षमासाद्यति
शौसंक्रमणं भवेत् ॥ तन्मासाभ्यन्तरे तस्य वैरं क्लेशं धनस्यः ३५
टी० जन्मनक्षत्रमे संक्रांतिलगे तो वैर जानना जन्ममासमे होय तो क्ले
श जानना जन्मतिथीको होय तो धनका नाश जानना

संक्रांतिरूपमाह ॥ षष्टियोजनविस्तीर्णा संक्रांतिः पुरुषालुति ॥
एकवक्त्रानवभुजालंबो ह्रीर्दीर्घनासिका ॥ ३६ ॥ पृष्ठा लोकाभ्रमं
त्येव गृहीत्वा स्वर्परं करे ॥ एवं संक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः
टी० संक्रांतिका शरीरप्रमाण ३४० कोस और पुरुषके ऐसा आकार १
मुख ९ भुजा ओठ लंबा बड़ी नासिका आगे देखनी है पीछे चलती है
हाथमे खपरालिये है भ्रमण करती है ऐसा रूप संक्रांती का जानना
संक्रांतिके हाथमे फल ॥ ॥ मेवालि कर्केचन शैवरक्तचापेच
मीनेच नुलेच पीतं ॥ श्वेतं वृषे स्त्रीमिश्रुनेच चंद्रकृष्णं च न
केश्यघटेच सिंहे ॥ ३७ ॥ रक्ते फलं भवेद्दुःखं श्वेते चैव सखं शु
भं ॥ पीने श्रीस्तुनया प्रोक्ता श्यामे मृत्युर्न संशयः ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

टी० पेष वृश्चिक कर्क दसतीन राशीके चंद्रमामे संक्रांती प्रवेश होय तो हा

यमेरक्तफलजानना और प्रजाको दुःख प्राप्ती जानना धनभीन तुला इस
तीन राशीके चंद्रमा मे संक्रांती प्रवेश होय तो पीत फल जानना लक्ष्मी प्रा
प्ती होय वृषकन्या मिथुन इसतीन राशीके चंद्रमा मे संक्रांती प्रवेश हो
य तो सफेद फल जानना सुख प्राप्ती होय मकर कुंभ सिंह रसतीन राशी
के चंद्रमा मे संक्रांती प्रवेश होय तो कृष्ण फल जानना मृत्पुष्पांति जानना

संक्रांति पुण्य काल ॥ ॥ संक्रांतिकाला दुभय न नाडि १

का पुण्यामताः षोडश षोडशोष्णा गोः ॥ निशीथ तो वा

ग परत्र संक्रमे पूर्वा पराहंति म पूर्व भागयोः ॥ ४० ॥

टी० संक्रांतीके पूर्व और पर १६ घड़ी पुण्य काल होना है परंतु आधी रात
के पहिले होय तो दिन के तृतीय भाग मे पुण्य काल जानना आधी रात के बाद
होय तो पर दिन के पूर्व भाग मे पुण्य काल जानना ॥ इति संक्रांति प्रकरणं ॥

अथ ग्रहण प्रकरणम् ॥

तत्रादौ चंद्रग्रहण की प्रवृत्ती ॥ ॥ आनोः पंचदशोऽक्ष से चंद्रमा य
दिति धृति ॥ पौर्णमास्या निशा शेषे चंद्रग्रहण मादिशेत् ॥ १ ॥

टी० सूर्य नक्षत्र से १५ वे नक्षत्र मे चंद्रमा होय और पौर्णमासी होय को रा
त बच जाय तो चंद्रग्रहण की प्राप्ती जानना -

सूर्यग्रहणम् ॥ ॥ माघो न ग्रस्त नक्षत्रा त्यो षोडशं यदि सूर्य

र्षभं ॥ अमावास्यादि वा शेषे सूर्यग्रहण मादिशेत् ॥ २ ॥

टी० सब पहिले मे सूर्य और चंद्र अमावास्या के दिन एक राशी मे प्राप्त होते
हैं परंतु ग्रहण काल मे एक नक्षत्र मे दिन को आय के अमावास्या जाय के दिवसे
परहे तो सूर्यग्रहण की प्राप्ती जानना पर २३ दिन चंद्र नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक
गिनना ११ निकाल को सोरह १६ गान सत्र आवे तो सूर्यग्रहण जानना -

राशीको शुभाशुभ ॥ ॥ त्रिषट्दशा यो यम तं नराणां शु

भ प्रदं स्यात्तु हणं रवी होः ॥ हिंस्र नंदेषु च मध्यमं स्या

त् शेषे च निष्ठं मुनयो वदंति ॥ १ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

टी० सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपने राशी से तृतीय राश १२ राश १० एकादश

११ ये राशी शुभ होती हैं और द्वितीय रस सप्तम ८ नवम ९ ये मध्यम जानना

१० यम १ चतुर्थ ४ पंचम ५ अष्टम ८ दश १२ ये अशुभ जानना -

दूसरा प्रकरण ॥ ॥ ग्रासात्तृतीयोष्टमगमनतुर्थस्तथा
पसंस्थः शुभदः स्वराशेः ॥ ग्रासाद्विः पंचनवर्तु
मध्यस्ततो धर्मोक्ताश्चतुर्थे शेषाः ॥ ४॥ ७॥ ॥

टी० सूर्यग्रहणजिसराशीयेलगेउसराशीसे ३० ॥ ४॥ ११ ये शुभजानना ॥ ११ ॥
ये मध्यमजानना १ ॥ २॥ ११ ॥ १२ ये अशुभजानना ॥ इति ग्रहणप्रकरणम् ॥

अथ क्रतुप्रकरणम्

तिथिरेकगुणप्रोक्तानसत्रचचतुर्गुणं ॥ वारः षष्ठगुणो ज्ञे
यो मासश्चाष्टगुणस्मृतः ॥ १॥ ॥ वस्त्रशतगुणं विद्यादर्शनं च
ततोधिकम् ॥ संक्रांत्यां ग्रहणे चैव वैरिणी च गता लका ॥ २॥

टी० स्त्रीको प्रथम क्रतु प्राप्त होता है उस्का फल फल मया विधिसब कहते हैं
तिथीका एकगुण १ नक्षत्रका चार ४ वारका द्वागुण महिनेका ८ गुण वस्त्रका
१०० गुण और जो देखे उस्को बहुत दोष है संक्रांती के दिन क्रतु प्राप्त होय तो
वंध्या होय और ग्रहण के दिन होय तो विधवा होती है ॥ —

मासफल ॥ ॥ प्रथम तौ मधौ नारी विधवा भवति ध्रुवं ॥

वैशाखे धनपुत्राढ्या ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत् ॥ ३॥ आषाढे

चमृतापत्याश्रावणे च धनान्विता ॥ भाद्रे च दुर्भगा ज्ञेया

श्विने च तपस्विनी ॥ ४॥ ॥ ऊर्जेल्या युष्मती नारी मार्गशीर्षे च

हुप्रजा ॥ पौषे तु पुंश्रली नारी या चे पुत्रसुखान्विता ॥ ५॥ फा

ल्गुने श्रीमती साध्वी क्रमान्मासफलं स्मृतम् ॥ ७॥ ७॥ ॥

टी० स्त्रीके प्रथम क्रतु चैत्रमे प्राप्त होय तो विधवा जानना वैशाखमे होय तो
धनपुत्र करको युक्त ज्येष्ठमे होय तो रोगयुक्त होती है आषाढमे होय तो
मृतप्रजा आश्रावणमे होय तो धनयुक्त भाद्रपदमे होय तो दुर्भगा होती है
आश्विनमे होय तो तपस्विनी कार्तिकमे होय तो थोडा आपुष्य मार्गशीर्ष
मे होय तो बहुत प्रजा पौषमे होय तो जारिणी माघमे होय तो पुत्रसुख
युक्त फाल्गुनमे होय तो पतिव्रता जानना —

तिथिफल ॥ ॥ शुचिर्नारी प्रतिपदि द्वितीयायां तु दुःखिनी ॥

तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् ॥ ६॥ पंचम्यां चैव सौ

भाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी ॥ सप्तम्यां सुप्रजानारी चाष्टम्यां —

एकसीतथा ॥ नवम्यां विधवा नारी दशम्यां सौख्य
भोगिनी ॥ एकादश्यां शुचिर्नारी द्वादश्यां मरणं भव
म् ॥ ८॥ त्रयोदश्यां शुभाशौका चतुर्दश्यां परान्विता ॥
चौथी मास्या ममावास्या शुभं च शुभमेव च ॥ ९॥ १॥

टी० स्त्रीको प्रथमं क्रतु प्रतिपदाको प्राप्त होयतो पवित्रजानना द्वितीयाको
दुःखी तृतीयाको पुत्रवती चतुर्थीको विधवा जानना पंचमीको होयतो
सौभाग्यवती षष्ठीको होयतो कार्यनाश सप्तमीको होयतो सुप्रजा अष्टमी
को होयतो एकसी नवमीको होयतो विधवा दशमीको होयतो सुखका
भोगकर एकादशीको होयतो शुचि द्वादशीको होयतो मरणप्राप्ती त्रयोद
शीको होयतो शुभजानना चतुर्दशीको होयतो पररत होय चौथी माको हो
यतो शुभजानना अमावास्याको होयतो अशुभजानना -

वारफल ॥ ॥ आदित्ये विधवा नारी सोमं चैव मृतप्रजा ॥ सोमि
पुत्रे आत्मघाती बुधे कन्या प्रसूयता ॥ १॥ गुरुवारं सुत प्राप्तिः क
न्या पुत्रपुताभूयो ॥ मंदे च पुंश्चली नारी शेषं वारफलं बुधैः ॥ ११॥

टी० स्त्रीको रविवारको क्रतु प्राप्त होयतो विधवा होती है सोमवारको हो
यतो मृतप्रजा होय मंगलको होयतो आत्मघाती बुधको होयतो कन्या बहु
त होय बृहस्पतीको होयतो पुत्रप्राप्ती शुक्रको होयतो कन्या पुत्रपुत्र होय
शनिवारको होयतो जारिणी होती है -

अथ नक्षत्रफलं ॥ ॥ अश्विन्यां शुभगानां भरण्यां विधवा भवेत्
॥ कृत्तिकायां च वंध्या स्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी ॥ १॥ मृगेश्वरी
अयुक्ते जलचार्द्रायां क्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौ पुत्रवती पुष्ये पु
त्रधनान्विता ॥ १३॥ आश्लेषायां भवेद्द्वयमपायां चार्थसंयु
ता ॥ पूर्व्यायां चार्थपुक्ता हिचोनरायां सतीतया ॥ १४॥ हस्तो
पुत्रधनैर्मुक्ता विजायामनुचारिणी ॥ स्वास्थान्यगर्भादयवा
विशाखायां पुनरुत्तरा ॥ १५॥ मैत्रेश्वरी भगवती ज्येष्ठायां विध
वा भवेत् ॥ मूले पतिव्रता सा धीमती सौभाग्यभोगिनी ॥ १६॥
उत्तरार्धवती प्रोक्ता भवेत् सौभाग्यसंपदा ॥ धनिष्ठायां शुभगानां
शने भद्रा चिना बुधैः ॥ १७॥ पुंश्चोत्तरायां विनीतु उमेलस्त्री यु

ताशुभा॥रेवत्यांपनिरिक्तातुज्ञेयंभानांफलंबुधैः॥१८॥

टी० नक्षत्रौ मे ऋतुप्राप्तकाफलशुभाशुभकोष्ठकपरसेमालूमहोवेगा—

| | | | | | | | |
|----|------------|----|---------------|------|------------|-----|---------------|
| अ | सुभगा | पु | पुत्रधनयुक्त | स्वा | पररता | श्र | सौभाग्य |
| भ | विधवा | आ | बंधा | वि | निष्ठुर | ध | शुभा |
| रु | बंधा | म | द्वययुक्ता | अ | दुर्मेगा | श | कल्याण |
| रो | चारुभाषिणी | पू | द्वययुक्ता | ज्ये | विधवा | पू | लक्ष्मीयुक्ता |
| मृ | हारिद्र | उ | पतिव्रता | मू | पतिव्रता | उ | शुभा |
| आ | क्रोधी | ह | पुत्रधनयुक्ता | पू | सौभाग्यवती | उ | शुभा |
| पु | पुत्रवती | चि | पतिमनेयोग्य | उ | धनयुक्ता | रे | पतित्प्राणी |

योगफलं॥ ॥ आद्यतौविधवानारीनिष्कंभेचरजस्वला॥स्ते

हःप्रीत्यातुदंपत्योरापुष्पांस्तुधनप्रदः॥१९॥सौभाग्येपुत्रयुक्ता

तुशोभनेमंगलान्विता॥अनिगंडेतुविधवासुकर्मणितुशोभना २०

धृतौसंपत्तियुक्ताचमूलेरोगयुताभवेत्॥गंडेदुःखान्विताना

रीचद्वौपुत्रान्विताभवेत्॥२१॥ध्रुवेतुशोभनानारीव्याघातेभ

र्तृपातिनी॥हर्षणेहर्षयुक्तातुवज्रैवैवानपत्यता॥२२॥सि

द्धौपुत्रान्वितानारीव्यतीपातेविभर्तृका॥मृनवत्साचवर्षणेपरी

घेचाल्पजीवनी॥२३॥शिवेपुत्रवतीनारीसिद्धेशीप्रफलान्विता

॥साध्येधर्मपरानारीशुभेशुभगुणान्विता॥२४॥शुक्लेशुभकरानारी

ब्रह्मणिस्वपत्नौरता॥ऐंद्रेतुदेवरतावैधव्यं वैधृतौस्मृतम्॥२५॥

टी० योगफल शुभाशुभकोष्ठकपरसेजानलेना— कोष्ठकम्

| | | | | | | | |
|------|------------|-----|-------------|-----|-------------|-----|------------|
| वि | विधवा | पू | संपत्तियुता | व | अपुत्रा | सा | धर्मयुक्ता |
| प्री | पतिस्नेह | मू | रोगयुता | सि | पुत्रयुक्ता | शु | उत्तमलक्षण |
| आ | धनयुक्त | गं | दुःखयुक्ता | व्य | मष्टपती | सु | शुभकारिणी |
| सौ | पुत्रयुक्त | रु | पुत्रयुक्ता | व | मृतवत्सा | ब्र | पररता |
| शो | मंगलहोष | क्र | शोभना | प | अल्पजीवी | दंड | देवररता |
| अ | विधवा | आ | पतिपातिनी | शि | पुत्रयुक्ता | वै | वैधव्य |
| सु | शोभना | ह | हर्षयुक्ता | सि | फलप्राप्ती | | |

कर्णफल॥ ॥ बवेप्रोक्तानुबंध्यास्त्रीबालवेपुत्रसंपदः॥कौ

लवेपुंश्चलीनारीतैनिलेचारुभाषिणी॥२६॥गरेचगुणसं

पन्नावणिजेपुत्रिणीस्मृता॥विष्ट्यांचमृतवत्साचशकुने

समपीडिता ॥ २७ ॥ अनुप्राप्तहोयतो वं व्याजानना कालवमे पुत्रवती

भवेत् ॥ किंस्तु प्रमेयमिचारीतु करणानां शुभं फल ॥ २८ ॥

टी० ब्रह्मकर्णमे अनुप्राप्तहोयतो वं व्याजानना कालवमे पुत्रवती कौलवमे
जारीणी तैमिलमे चारुभाषिणी गरुमेहोयतो शुण्डमुक्त वणिजमेहोयतो पुत्रिणी
भद्रमेहोयतो मृतवत्साजानना शकुनीमेहोयतो अनिकामी जानना यतुषमे
होयतो शुभाजानना नभामेहोयतो पुत्रवती जानना किंस्तु प्रमेहोयतो वं व्याजानना

वशिफल ॥ ॥ व्यभिचारीतु मेघे स्याद्दृष्ये सुखभोगिनी ॥

मिशुने धन युक्ते कर्कटे दुःखिता बुधैः ॥ २९ ॥ सिंहपुत्रव

तीनारी कन्यायां मानिनी शुभा ॥ तुल्ये विचक्षणा नारी वृश्चि

के व्यभिचारीणी ॥ ३० ॥ धने पतिव्रता शे यामां सहीना च न

कके ॥ कुंभे धनवती शे यामीने च चपला बुधैः ॥ ३१ ॥ ४॥

टी० मेघराणीमे अनुप्राप्तहोयतो जारीणी जानना दृष्यमे सुखभोगिनी जा
नना मिशुने धन युक्त जानना कर्कटे दुःखिता जानना सिंहमे पुत्रवती जा
नना कन्यामे अभिमानिनी जानना तुल्यमे विचारवा न जानना वृश्चिके वं
व्याजानना धनमे पतिव्रता जानना मकरमे कशां गी जानना कुंभमे धन
युक्त जानना मीनमे चंचला जानना

होराफल ॥ सूर्ये च न्याधिसंयुक्ता चंद्रहोरे पतिव्रता ॥ कुजे होरे

तुल्ये भाग्यं बुधे होरे तु पुत्रिणी ॥ ३२ ॥ जीवे सर्वसमृद्धि स्याद्

गोक्षे भाग्यमेव च ॥ शनौ सर्वविनाशाय होरकस्य फलं बुधैः ३३

टी० होराका शुभाशुभफल कोष्टके देखने से मालूम होगा —

| होरा | फल | होरा | फल |
|--------------|----------|--------------|--------------|
| सूर्यकी होरा | व्यापी | गुरुकी होरा | सर्वसमृद्धि |
| चंद्रकी होरा | पतिव्रता | शुक्रकी होरा | शोभा |
| मंगलकी होरा | दुर्भगा | शनीकी होरा | सर्वविनाशिनी |
| बुधकी होरा | पुत्रिका | | |

लग्नफल ॥ ॥ मेघलग्ने दिवा च वृषमे धनसंयुता ॥ का

थिनी मिशुने लग्ने कर्कटे पतिनाशिका ॥ ३४ ॥ सिंहपुत्र

प्रसूता च पति युक्ता स्त्रिय लग्ने ॥ तुल्ये चैव धनादायी च

श्रिकेदद्गुदुःखिनी ॥३५॥ धनरुग्नेधनेश्वर्यमकरेक

कशाभवेत् ॥ कुंभवंशद्वयघ्नीचमीनेसर्वगुणान्विता ३६

टी० प्रथमजोराशीमेसूर्यहोयसोलग्रसूर्योदयमेहोताहै उदयलग्नसे
अस्ततकदलग्नभोगतेहै अस्तसेउदयनकदलग्नभोगकरतेहै मेषलग्न
मेऋतुप्राप्तहोयतोदरिद्रीजानना वृषमेधनयुक्ताजानना मिथुनमे
कामयुक्तजानना कर्कमेपतिनाशिनीजानना सिंहमेपुत्रवतीजानना क
न्यामेपतियुक्ताजानना तुलामेअंधताजानना रश्मिकमेदद्गुऔरदुः
खिजानना धनमेधनयुक्ताजानना मकरमेकर्कशाजानना कुंभमेदोनों
वंशकाघातजानना मीनमेहोयतो गुणयुक्तजानना —

ग्रहोंकाफल ॥ ॥लग्नेगुहृश्चसौरिश्चरविचंद्रौतथैवतु ॥

तदासाविधवानारीसर्वसौभाग्यवर्जिता ॥३७॥ छ ॥

टी० जिसलग्नमेस्त्रीकोप्रथमऋतुप्राप्तहोयउसलग्नमेराहूहोयअथवाशनी
होयअथवारविहोयअथवाचंद्रमाहोयतोविधवाजानना सौभाग्यसेवर्जितहोय-

रक्तफल ॥ ॥प्रथमतोैफलंस्त्रीणामुच्यतेरजसाधुना ॥

सुभगापुत्रसंयुक्ताशुक्रवर्णेतथार्तवे ॥३८॥ शशशोणि

तसंकाशेयद्वावैरक्तसन्निभे ॥ पुत्रकन्याप्रसूतीस्यान्नी

लेतुस्यामृतप्रजा ॥३९॥ कर्बुरेप्रियतेसाचपिंगटेचमृ

तप्रजा ॥ कृष्णेचविधवानारीरजस्येवंविनिर्दिशेत् ॥४०॥

वरामध्यस्त्रवास्यातुदुर्भगाबहुशोणिता ॥ शोणितेविंदु

मात्रेतुस्त्रैरिणीचाल्पशोणिता ॥४१॥ रक्तेरक्तेभवेत्पुत्रः

कृष्णेचमृतपुत्रिका ॥ पिछिलाचभवेदंध्याकाकबंध्या

चपांडुरा ॥४२॥ पीतेदुश्चारणीप्रोक्तासुभगागुंजवर्णके

॥सिंदूरभेभवेत्कन्यारजःशोणितलक्षणम् ॥४३॥ छ ॥

टी० स्त्रीकोप्रथमऋतुप्राप्तहोताहै उसेरक्तकाफलकहतेहैं शुक्रवर्णरु
धिरहोयतोपुत्रवतीजानना शशिकहिपेखरगोसकेऐसा रुधिरहोयतोभी
पुत्रवतीजानना माहुरकेऐसावर्णहोयतो कन्यावतीजानना नीलवर्णहो
यतोमृतप्रजा कर्बुरकहिपेचित्रविचित्रवर्णहोयतो स्त्रीभरे पिंगटकहि
येकुछश्वेतकुछपीतवर्णहोयतोमृतप्रजाजाननाकृष्णवर्णहोयतोविध

वाजानना मध्यरक्तहोयतो श्रेष्ठजानना बहुतरक्तहोयतो दुर्भगाजानना
 थोडारक्तवर्षिंदुगावहोयतो अप्रजाजानना लालरक्तहोयतो पुत्रवती
 जानना लुण होयतो मृतप्रजा पिच्छिल कहिये पांवके वर्ण ऐसा होयतो
 वंध्याजानना गुलाबी वर्ण होयतो काक वंध्याजानना पीत वर्ण होयतो वे
 श्याजानना पुंगुची के ऐसा वर्ण होयतो शुभजानना सिंदूर के ऐसा वर्ण हो
 यतो कन्या प्रसूती जानना दस नर से रक्तमालूम करके शुभाशुभ फल कहना

कालफल ॥ ॥ पूर्वाण्डे सभगा प्रोक्ता मध्याह्ने चैव निर्धना ॥ अप
 राण्डे शुभा चैव साध्याह्ने सर्वभोगिनी ॥ ४४ ॥ मध्ययोरुभयोर्वेश्या
 निर्णीये विधवा भवेत् ॥ पूर्वरात्रे तथा वंध्या दुर्भगा सर्वसं पिपु ॥ ४५ ॥
 टी० दिन के पूर्व भाग में रक्तु प्राप्त होयतो सभगा जानना मध्याह्न में होयतो ध

नहीन जानना अपराण्ड में होयतो अशुभ साध्याह्न में होयतो सर्व सुख पुत्रजा
 नना दूनो संध्या में होयतो वेश्या जानना अर्धरात्री में होयतो विधवा जान
 ना पूर्वरात्री में होयतो वंध्या जानना संधी में होयतो अशुभ जानना
 वस्त्रफल ॥ ॥ सुभगा श्वेत वस्त्रा चरो मिणी रक्त वस्त्रका

॥ नीलांबर धरनारी विधवा पुष्य वंतिका ॥ ४६ ॥ भोगिनी
 पीत वस्त्रा च मिश्र वस्त्रा वरप्रिया ॥ सूस्या स्यात्तू स्यावस्त्रा
 रुद्रद वस्त्रा पतिव्रता ॥ ४७ ॥ दुर्भगा जीर्ण वस्त्रा च पुभगा
 मध्यवाससा ॥ पूत वस्त्रा शुभा नारी मलिनी मलिना भवेत् ४८

टी० स्त्री को प्रथम करतूस के र वस्त्र पहोयतो सुभगा जानना लाल वस्त्र हो
 यतो रोग युक्त नील वस्त्र होयतो विधवा पीत वस्त्र होयतो सुख युक्त वि
 न विचित्र होयतो प्रतिप्रिय महीन वस्त्र होयतो रुशंगी मजदूर वस्त्र हो
 यतो पतिव्रता पुंगु वस्त्र होयतो अशुभ मध्य वस्त्र होयतो सुभगा धोवा
 वस्त्र होयतो शुभा मैला वस्त्र होयतो मलिनता जानना —

रजस्वला धर्म ॥ ॥ आर्ने चाभिष्टुता आरी नैक वेश्यवि संश्र
 येत् ॥ न चान्य जानि संस्पर्श कुपौ स्पर्शन च कृत्वि ॥ ४९ ॥
 त्रिरात्रं स्वमुखं नैव दर्शयेद्यस्य कस्यचित् ॥ स्वनावयं श्राव
 येद्ये वन कुर्यादंत धावनम् ॥ ५० ॥ न कुर्यादा र्ने च नारी यद्वा पा
 मीक्षणं न या ॥ अंजनं भोजनं स्नानं प्रयासं वर्जयेत्तथा ५१

नखादिकृतनं रज्जुतालपत्रादिबंधनम् ॥

नवेशरावेभुंजीततोयंचांजलिनापिबेत् ५२

टी० ऋतुमती स्त्री ने एक घर मे रहना अन्यजाती से स्पर्शन करना अपने जाती मे भी स्पर्शन करना तीन रात्र अपना मुख न किसी को दिखावना न अपनी बाणी किसी को सुनावना दंतुवन न ही करना न सत्रों का अवलोकन न करना काजल न देना तेल न लगावना स्नान न करना रस्नान ही चलना न स न ही निकालना डोरी का स्पर्शन करना तालपत्र का बंधन न करना नवी नमृत्तिका पात्र मे भोजन करना जल अंजुली से पीना — रक्षे बंधनं २

रजस्वला स्नान ॥ ॥ हस्तानिलाश्वि मृग मैत्रवसु ध्रुवाख्यैः

शक्रान्वितैः शुभतिथौ शुभवासरे च ॥ स्नायादथा तैव वती

मृगपौष्णवायुहस्ताश्विधातुभिरलंभते च गर्भ ॥ ५३ ॥

टी० ऋतुमती का स्नान उक्त नक्षत्रों के रावना कोष्टक मे स्पष्ट है और मृग रेवती स्वाती हस्त अश्विनी इस नक्षत्रों मे स्नान करावने से बहुत जल दीर्घ गर्भ रहता है

| हस्त | स्वाती | अश्विनी | मृग | अनुराधा | धनिष्ठा | नक्षत्र |
|--------|--------|---------|-----|----------|---------|---------|
| उ. फा. | उ. बा. | उ. भा. | ०० | ज्येष्ठा | ०० | |
| १ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | तिष्यः |
| चं. | वु. | उ. | सु. | ०० | ०० | वार |

चतुर्थे हनि सा स्पृश्या रजोदर्शनतस्त्रियः ॥

पंचमे हनि शुद्धा सादैवे कर्मणि पैतृके ॥ ५४ ॥

टी० स्त्री ऋतुप्राप्त के बाद ४ दिन तक अस्पर्श है पुरुष ने स्पर्श कराना नही

अन्यच्च ॥ ॥ प्रथमे हनि चांडाली द्वितीये ब्रह्मघाति

नी ॥ तृतीये रज की प्रोक्ता चतुर्थे हनि शुद्धानि ॥ ५५ ॥

टी० स्त्री ऋतुप्राप्ती से प्रथम दिन चांडाली रहती है २ दूसरे दिन ब्रह्म

घातिनी ३ तीसरे दिन धोबी जानना ४ चौथे दिन शुद्ध जानना —

अन्यमत ॥ ॥ भर्तुः स्पृश्या चतुर्थे हनि स्नानेन स्त्री रज

स्वला ॥ पंचमे हनि योग्या सादैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ ५६ ॥

टी० स्त्री चतुर्थ दिन मे पति संग करने मे योग्य है परंतु देव और पितृ इन के काम की

अन्यमत ॥ ॥ वर्षा दशकादूर्ध्व यदि पुण्यं बहिर्न हि ॥ (नही)

अनपुष्पं भवत्येव यमसो दुर्गदिवत् ॥१०॥

टी० बार वर्ष के नंतर स्त्री को क्रतु प्राप्ति न हो तथापि पुरुष ने संग करना वं
शके वास्ते गुह्य और कटहर के से सा जानना अनि क्रतु प्रकरणम् ॥१॥

अथ गर्भाधान प्रकरणम्

क्रतौ तु प्रथमे कार्ये पुनस्त्रिभुवै दिने ॥

मघा मूलान्त्य पक्षांत त्यक्त्वा चंद्रबले सति ॥१॥

टी० प्रथम क्रतु मे स्त्री का गर्भाधान पुरुष नक्षत्र मे करना शुभ दिन मे
मघा मूल रेवती पक्ष का अंत इत्का त्याग करना चंद्र बल मे करना -

गर्भाधाने त्याज्य माह ॥ गंडानं त्रिविधं त्यजेन्निधनज

नार्क्षि च मूलान्तं कंठस्थं पौष्णं मघो परागदिवसं पातं तथा

वैधृतिं ॥ पित्रोः आद्वदिनं दिवा च परिषाद्यर्क्षं स्वपत्नी गमे

भान्मुत्पातहना निमृत्यु भवनं न चर्क्षतः पापभं ॥२॥ भद्रा

वष्टी पर्वी रिक्ता च संध्या भौमा कीर्की नारायणश्च तस्वः ॥

टी० गर्भाधान मे जो वर्ज्य हैं सो आगे चक्र पे स्पष्ट लिखा है गर्भाधाने त्याज्य
चक्र ॥

| गंडानं रेवती परिषाद चतुर्दशी संध्या तृतीयदिन | वधतारा ग्रहण दिन उत्पात नक्षत्र अष्टमी भौम चतुर्थदिन | जन्मतारा ज्येष्ठी पात पाप युक्तरु अमावास्या रति | मूल वैधृति भद्रा कीर्त्तिपा शनि | भरणी आद्वदिन जन्मल प्रादृष्ट संक्रांति प्रथमदिन | अश्विनी दिवस वष्टी रिक्ता द्वितीयदिन |
|---|---|---|---|---|--|
|---|---|---|---|---|--|

अन्यदपि ॥ क्रतु स्नातांतु यो भार्या सन्निधौ नोपग

च्छति ॥ घोरयां भ्रूण हत्या यां युज्यते नात्र संशयः ॥३॥

टी० क्रतु स्नान के नंतर स्त्री के पास शयन करने से भ्रूण हत्या का भागी होता
अन्य मत ॥ व्याधितो बंधनस्थो वा प्रवासे व्यपिप है

वसु ॥ क्रतु काले पि नारी यां भ्रूण हत्या प्रमुच्यते ॥४॥

टी० रोगी होय अथवा कैद पे होय या प्रवास मे होय या पर्व होय तो भी स्त्री संग
न करने से भ्रूण हत्या कहा है ॥ क्रतु प्राप्ति से सोलह महीने शुभाशुभ ॥१॥

क्रतु स्वाभाविकः स्त्री यां रात्रयः चौदशः स्मृताः ॥ तासामाद्या

+ अतस्तु निदिनैकादशी च या ॥५॥ त्रयोदशी च रोगास्यः त्रश

स्तादशवासराः॥नस्मात्त्रिरात्रं चांजालीपुष्पितां परिवर्जयेत् ६
टी० ऋतुप्राप्तमयातवसेस्त्रीकोसोलदिनकतूरहताहै निसयेप्रथम४रात्री
औरएकादश११औरत्रयोदशयेनिंदिनहै इसवास्तेइसदिनकात्यागकरना
औरदस१०रात्रीशुभजानना - गर्भाधानकोशुभाशुभदिन॥ ॥
रात्रौचतुर्थीपुत्रस्यादल्यापुर्धनवर्जितः॥पंचम्यां पुत्रिणी नारी
षष्ठ्यां पुत्रस्तमध्यमः॥७॥ सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्या
मौश्वरः पुमान्॥ नवम्यां सुभगानारी दशम्यां प्रवरः सु
तः॥८॥ एकादश्यामधर्म्यास्त्री द्वादश्यां पुरुषोत्तमः॥त्रयो
दश्यां सुतापाणवर्णसंकरकारिणी॥९॥ धर्मज्ञश्चकृतज्ञ
श्च आत्मवेदी दृढव्रतः॥१०॥ प्रजायतेचतुर्दश्यां पंचदश्यां
पतिव्रता॥ आश्रयः सर्वभूतानां षोडश्यां जायतेपुमान्॥११
टी० ऋतुप्राप्तीसेसोलदिनमेगर्भाधानकोशुभाशुभदिन चक्रलिखतेहै:

| | | | | | | | |
|---|------------------|---|-----------------|----|-------------|----|---------------|
| १ | वर्ज्य | ५ | कन्या | ९ | सौभाग्यरुहि | १३ | पापकर्मीकन्या |
| २ | वर्ज्य | ६ | पुत्रमध्यम | १० | गुणवानपुत्र | १४ | धर्मज्ञपुत्र |
| ३ | वर्ज्य | ७ | पुत्रहीना | ११ | अधर्मपुत्र | १५ | पतिव्रता |
| ४ | पुत्रअल्पापुर्धन | ८ | पुत्रईश्वरभक्ति | १२ | उत्तमपुत्र | १६ | उत्तमपुत्र |

गर्भाधानेतिषिवारमाह॥ ॥षष्ठ्यष्टमीपंचदशीचतु
र्थीचतुर्दशीमशुभयत्रहित्वा॥शेषाः शुभाः स्युस्ति
थयोनिषेकेवाराः शशांकार्यसितेंदुजाश्च॥१२॥ ॥
टी०११वी अष्टमी पौर्णिमा चतुर्थीचतुर्दशी अमावास्यायेनिषीवर्ज्यकरको
शेवतिथीशुभजानना सोम-बृहस्पति शुक्र-बुध पेगर्भाधानमेशुभजानना-
गर्भाधानेनसत्राण्याह॥ हरिहस्तानुराधाश्च स्वातीवारुण
वासवं॥उत्तरात्रिनयंसौम्यं रोहिण्यश्च शुभाः स्मृताः॥१३॥
टी० श्रवण हस्त अनुराधा स्वाती शनतारका ज्येष्ठा उत्तराफाल्गुनी उत्तरा
षाढा उत्तराभाद्रपदा मृग रोहिणी येनसत्रमेगर्भाधानशुभकहाहै -
गर्भाधानेलग्नशुद्धी॥ ॥ केंद्रत्रिकोणेषु शुभैश्चपा
यैः कन्यापारिगैः पुंमहदृष्टलग्ने॥ ओजांशकेऽपि
चपुंमरात्रौ चित्रादितीज्याधिपुमध्यमं स्यात्॥१४॥

टी० प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम येकेन्द्र द्वासी शुभग्रह होय त्रिकोण नवम
पंचम द्वासी शुभग्रह होय तृतीय एकादश षष्ठ द्वासी पापग्रह होय लग्न
को मुरुपग्रह देखते होय विषम नवमांशमे जेन्द्रमा होय द्वासी गर्भाधान
शुभजानना और समरात्री विजा पुनर्वसु पुष्य अश्विनी यह मध्यमजानना

गर्भिणी पुंसवन संस्कारमाह ॥ ॥ मूलादिजितयेकर
श्रवण के भाद्रपदा पूर्वाषाढा मृगपंचके दिन करे भौमे
नरिक्ता तिथौ ॥ नैत्रे मास्थयवाप्तिमासि धनुषि स्त्रीमीन
सो अस्थिरेल्लगे पुंसवन न शैव शुभतं सीमांत कर्माष्टमे ॥ ५५

टी० मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हस्त श्रवण पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रप
दा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी रूतिका रोहिणी मृग और
रवि मंगल द्वासी पुंसवन करना शुभ रिक्तात्माग करना और दूसरे
महिनेमे वा तीसरे महिनेमे शुभ धनलभ्य कन्या मीन ये स्थिरत्व
मे करना शुभ होता है सीमांत आठवे महिनेमे द्वासी मकर नमे करना -

वारफल ॥ मृत्यु सौरेस्तनुहानि रिक्ताः प्रजा मृतिः पुंसवने
बुधस्य ॥ काकौ च वध्या भवती ह शुक्रे स्त्री पुत्रलाभो रविभौमजीवैः
टी० शनिवार को पुंसवन करे तो मृत्यु जानना सोमवार को करे तो शरीर
नाश बुधसे करे तो पुत्रनाश शुक्र को करे तो काक वध्या और रवि मंग
ल रुद्रस्वति को पुंसवन करे तो पुत्र कन्या प्राप्ती -

सीमांतो न्ययनमाह ॥ ॥ पुरुषग्रह वाराः स्युः शुभाः सीमां
तकर्मणि ॥ मध्यौ स्त्री ग्रह वारी तु वर्जयेत्तु न पुंसको ॥ ५७ ॥

टी० पुरुषग्रह के वारमे सीमांत कर्म करना शुभ होता है स्त्रीग्रह के वारमे
मध्यमजानना न पुंसकग्रह के वारमे अति निकृष्ट जानना -

अन्यमते ॥ चतुर्थ षष्ठाष्टमया सभाजि सौरेण गर्भे प्रथमं विधे
यं ॥ सीमांत कर्म हि जभापिनीनां मासेष्टमे विष्णु वसिष्ठकुर्यात् ॥

टी० प्रथमगर्भधारणसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम मासमे सौरे माससे गिननेसे सी
मांत कर्म करना ब्राह्मण के हकीमे अष्टमाध्याये विष्णु मरी करन शुभ होता है

अन्यमते ॥ ॥ रोहिणीं पंचममासि द्वासीं पुष्यहस्तोत्तराश्व
यं ॥ योष्ठा वैष्णवार्धं वैवस्वीयं देसीं मकरासरे ॥ ५९ ॥

टी० रोहिणी मृग पुनर्वसु पुष्य हस्त तीनों उन्नरा रेवती श्रवण इनन
क्षत्रों में सीमंतकर्म शुभ होता है और शुभग्रह के वार में करना —

अन्यदपि ॥ ॥ पक्षच्छिद्रां रिक्तां च विना पंचदशीं शुभाः ॥ चतु

र्दशी चतुर्थी च कदाचित् शुभप्रदाः ॥ २० ॥ शुभसंस्थे निशाना

ये चतुर्थी च चतुर्दशी ॥ पौर्णिमा सी प्रशंसन्ति केचित् सीमंतकर्मणि

टी० सीमंतकर्म में पक्ष में जो छिद्रातिथी उस्का त्याग करना रिक्तातिथी
त्याग करना कोई आचार्य कहने हैं कि शुभराशी के चंद्रमा में और चतु
र्थी चतुर्दशी और पौर्णिमा ये सीमंतकर्म में प्रशंसा करने हैं —

पक्षच्छिद्रातिथी ॥ ॥ चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ॥ ष

ष्ठी च द्वादशी चैव पक्षच्छिद्रावृत्त्याः स्मृताः ॥ २२ ॥ कृपादेता मुनिथी

पुर्वजैर्नीयाश्च नाडिकाः ॥ भूताष्टमनुत्वां कदशशेषास्तु शोभनाः ॥

टी० चतुर्दशी चतुर्थी अष्टमी नवमी षष्ठी द्वादशी इसको पक्षच्छिद्राति
थी कहने हैं क्रम से इनकी पट्टी त्याग करना चतुर्दशी १४ चतुर्थी ८ अष्ट
मी १४ नवमी ४ षष्ठी ९ द्वादशी की १० घड़ी पहिली त्याग करना शुभ —

मासेश्वरज्ञानमाह ॥ ॥ मासेश्वराः सितकुजे ज्यर

वींदु सौरचंद्रात्मजास्तनुपचंद्रदिवाकराः स्युः ॥ २४ ॥

टी० गर्भधारण से दस मास के १० स्वामी क्रम से नीचे लिखे हुवे कोष्ठक पर
से स्पष्ट मालूम होगा — मासेश्वरज्ञानार्थमासेशचक्रम् ॥ ॥

| | | | | |
|-----------------|----------------|-------------------------|-----------------|-----------------|
| स्वामी शुक्र | स्वामी मंगल | स्वामी गुरु | स्वामी रवि | स्वामी चंद्र |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| स्वामी शनी | स्वामी उप | स्वामी गर्भाधानरूपेश | स्वामी चंद्र | स्वामी सूर्य |

अन्यमते ॥ ॥ मासेष्टमे हि गर्भस्पृश्या हि षोर्बलि

क्रिया ॥ श्रवणे चैव रोहिण्यां पुष्ये चैव प्रशस्यते ॥ २५ ॥

हितीया सप्तमी चैव द्वादशी च शुभानिधिः ॥ शुभग्र

होदयाः शस्तास्तेषां च दिवसा अपि ॥ २६ ॥ ॥ ॥

टी० स्त्रीको अष्टम मास में गर्भसंस्कार विष्णु वली करना श्रवण रोहिणी

पुष्य द्वितीया सप्तमी द्वादशी पेशु भवै और शुभग्रह के लगनेशु भग्रह के वारमे करना शुभ होता है - गर्भिण्यां निषेधमाह ॥ ॥

भूम्या च वोच्च नीचा यामारोहमवरोहणे ॥ न ही प्रतरणं

चैव शक्यरोहणं तथा ॥ ७॥ उग्रौषधं तथा सारं मेषु

न भारवाहनं ॥ कृते पुंसवने चैव गर्भिणीं परिवर्जयेत् २०

टी० पुंसवन केनेतर स्त्री ने ऊची जमीन पर चढ़ाना नही नीची जमीन पर उतरना नही पेड़ पर चढ़ना नही भोजन दी मे जाना नही गाड़ी पर चढ़ाना नही कोई तेज औषधी खाना नही कोई स्नान पदार्थ खाना नही पुरुष से संग कराना नही कोई भारी बोझ उठावना नही ये सब वर्ज्य होती स्त्री को यना है

गर्भिणी को पुत्र वा कन्या होने का प्रश्न

तिथि वार भयुग्योगास्त्रिंशो द्विंशत शेषके

॥ सूर्यारे ज्येष्ठ नक्षत्रं द्वात्रिंशे कन्या शनौ श्रवण २१

टी० गर्भिणी को पुत्र वा कन्या होने का प्रश्न करे तो तिथि वार नक्षत्र द्वात्रिंशो करना ३ गुण देना ७ से भाग लेना भाग ३ शेष रहे तो पुत्र २४ ६ शेष रहे तो कन्या ७ शेष रहे तो गर्भ रहेगा नही ऐसा जानना - द्वाविंशो धानन करणम् ॥ ॥

प्रसूति स्थाने गमनमाह ॥

रोहिण्येन्दुवौष्णोऽस्वाती गारुण्योरपि ॥ पुनर्वसौ पुष्यहस्त

धनिष्ठा च्युतरा सुच ॥ ३० ॥ मैत्रत्वाष्टे तथा श्रिन्वां सूलिकाय

हवेशनं ॥ प्रसूति संभवे काले सद्य एव प्रवेशयेत् ॥ ३१ ॥

टी० रोहिणी मृग रेवती स्वाती शततारका पुनर्वसु पुष्य हस्त धनिष्ठा तीनों उतरा अशुभ धानिष्ठा अश्विनी इन नक्षत्रों में प्रसूति स्थान में प्रवेश करना उक्त है परंतु प्रसूत काल प्राप्त में उसी वखत प्रवेश करना नक्षत्र का विचार करना नही

गर्भ काल सण ॥ कललं च पनं २ शास्त्रां स्थितिं त्वं प्रोमोदम

६ स्वृतिः ॥ मुक्तिरुद्देग संसृतिर्मोक्षो धानतं कयात् ॥ ३॥

टी० गर्भाधान से १० मास तक गर्भ का रूप कहते हैं प्रथम १ मास में कलल कहिये मुक्त रूप कहिये संयोग रोपिंड होता है २ मास में चन्द्रादि चंद्रादि मज्जुत होता है ३ मास में वह पिंड में शास्त्र कहिये हस्त और पाद उत्पन्न होते हैं ४ मास में उसमें अस्थी माने हाड होती हैं ५ मास में उदर रत्न का कहिये वन

जाहोताहै ६ मासमे रोम कहिये केश होतैहैं ७ मासमे स्मृती याने ज्ञान हो
ताहै ८ मासमे भुक्ति कहिये सुधा का ज्ञान होताहै ९ मासमे उद्देग याने गर्भ
से निकलने की इच्छा करताहै १० मासमे प्रसव जानना —

दंतफलं ॥ दंतैर्युत श्वेतप्रथमेऽर्भकः स्यात्स्वपंविनश्चेदनुजं द्वितीये
॥ हन्यात्तृतीये भगिनीं चतुर्थे स्वमातरं बाणमितेऽग्रजातं ॥ ४ ॥

टी० बालक दंत सहित उत्पन्न होय तो बालक काना श जानना २ मासमे छोटे भाई
को अशुभ ३ मासमे बहिन को अशुभ ४ मासमे माता को दुःख होय ५ मासमे बड़े
भाई को कुंश जानना आगे षष्ठ मासमे शुभ जानना — उपसूतिका माह ॥

अज १ शष १२ द्वि २ मिता वृष कुंभयोः शुनिमिता हय कर्कट केश

राः ५ ॥ मकर युग्मा तुला धर कन्यका स्त्वलिहरी विमिता ह्युपसूतिकाः

टी० मेष मीन इसल प्रमे प्रसूती होय तो पास २ स्त्री कहना वृष कुंभ होय तो
४ स्त्री कहना धन कर्क होय तो ५ स्त्री कहना मकर मिथुन तुला कन्या वृ
श्चिक सिंह होय तो ३ स्त्री कहना इस प्रकार से लग्न प्रशंसा करना —

अन्यमते ॥ मेष त्रिपंचानन चापलग्रेचि स्मृत्य सर्वं बहुरोदति स्य

॥ अल्पं घटे स्त्री वणिजे परेषु रुदंति नो ज्ञान बलस्य सत्त्वात् ॥ ६ ॥

टी० मेष वृष मिथुन सिंह धन इसल गौ मे प्रसूति होय तो बालक रोदन बहु
त करताहै कुंभ कन्या तुला हस्ते थोड़ा रोदन करताहै कर्क वृश्चिक मकर
मीन इसल ज्ञान बल से रोदन नही करता ऐसालग्न से जानना —

अन्यदपि ॥ ॥ यथाराहुस्तथा शय्याभौ मेखङ्गांगभंग

ता ॥ रवि स्थाने भवे दीपः शनि स्थाने तु नालकं ॥ ७ ॥

टी० जन्म कुंडली लिखना उसमे जिस दिशा मे राहु होय उस दिशा मे शय्या कहना
जिस स्थान मे मंगल होय उस तरफ खटिया का भंग कहना सूर्य जिस दिशा मे हो
य उस दिशा मे दीप कहना जिस स्थान मे शनी होय — उस दिशा मे बालक काना
जन्म काल फल ॥ अश्विनी मघ मूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते

पिता ॥ पूषादि शक्र पश्चाद्द्वै जननी बाध्यते शिशोः ॥ ८ ॥

टी० अश्विनी मघा मूल दन नक्षत्रों के पूर्वार्द्ध मे जन्म होय तो पिता को अशुभ जा
नना रेवती ज्येष्ठा दन नक्षत्रों के उत्तरार्द्ध मे होय तो माता को अशुभ जानना

गंडांत फल ॥ ॥ सर्वेषां गंडजातानां परित्यागो विधीयते

॥ वर्जयेद्दर्शनं शाबंतं च पाण्मासिकं भवेत् ॥ ९ ॥

टी० गंडांत मे जो जन्म होय तो बालक का परित्याग करना अथवा ६ माहिना मुक्त देख
ना नही

तिथिगंडांतमाह ॥ ॥ पूर्णानंतरास्त्रयोस्त्रिंशत्संघिर्नोडीद्वयं
तथा ॥ गंडांतं मृत्युर्द्वयं नोहाहवतादिषु ॥ ११ ॥ १२ ॥

टी० बौर्णिमाकी अंत्यघड़ी और प्रतिपदाकी आद्यघड़ी ऐसी २ घड़ी संधी
दूसीरीतसे पंचमी घड़ी दशमी एकादशी ऐसी २ घड़ी संधी जानना इ
त्येजन्मयात्रा विवाह मौजो इत्यादिक मृत्युमुख होने हैं अशुभजानना

लग्नगंडांत ॥ ॥ कुलीरसिंहयोः कौटचापयोर्मीनमे

षयोः ॥ गंडांतमंतरालस्याहृतिकार्धं मृतिप्रदम् ॥ ११

टी० कर्ककी अंत्यकी आधीघड़ी और सिंहकी आदकी आधीघड़ी सं
धी इसीक्रमसे वृश्चिक और धन मीन और मेष ऐसी एकघड़ी मृत्युप्रद
जानना शुभकर्ममें वर्ज्यकरना — ॥ नक्षत्रगंडांत ॥ ॥

पौष्ण्याभिज्योः सार्वपि न्यर्षयोश्च यच्च ज्येष्ठा मूलयो रंतरा

ले ॥ तद्गंडांतस्याचतुर्नो डिकं हियात्राज्योहाहनालेप्यनिष्टं ॥

टी० रेवतीकी अंतकी २ घड़ी और अभिनीकी आदिकी २ घड़ी संधी होती
है इसक्रमसे आश्लेषा मघाज्येष्ठा मूल येनक्षत्र गंडांत होता है इत्ये
यात्रा जन्म विवाह ये कर्म अशुभजानना —

रुष्णाचतुर्दशीफलं ॥ ॥ रुष्णापक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः

षड्विधं फलं ॥ चतुर्दशी च षड्भागो कुयोदादौ शुभं स्यू

तम् ॥ १३ ॥ द्वितीयपितरं हंतितृतीये मातरं तथा ॥ च

तुर्ये मातुलं हन्ति पंचमे वंशनाशनं ॥ षष्ठे च धनहानिः

स्यात्स्वामौ वंशनाशनम् ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

टी० रुष्णापक्षे चतुर्दशी को जन्म होय तो चतुर्दशी का ६ भाग करको शुभ
शुभदेखना प्रथमभाग में शुभ द्वितीयभाग में पिताको दुःख जानना
तृतीयभाग में माताको दुःख जानना चतुर्थभाग में मायाको अशुभजा
नना पंचमभाग में वंशनाशन जानना षष्ठभाग में धननाश जानना
और वंशका भी नाश जानना — ॥ अमावास्याफलं ॥ ॥

सीनीवाल्यां प्रसूताश्च दशमी भार्याषु स्यात् ॥ गजाश्वम

हिनी चैनशक्रस्यापि त्रिंशद्वरेत् ॥ १५ ॥ कुहू प्रसूतिरित्य

* यैः सर्वलोषकरी स्मृता ॥ यस्य प्रसूतिरैतेषां तस्या सुधन

नाशनं ॥१६॥ सर्वगंडसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत् ॥१७॥

टी० चतुर्दशी युक्त अमावास्या मेदासी अथवा भार्या गो हाथी घोड़ी भैस
ये जो प्रसूत होय तो मालिक को निर्धन करते हैं अमावास्या मे जन्म होय तो
बहुत दोष जानना धन आयुष्य रस्का नाश और गंडांत फल के ऐसे फल जानना

दिन क्षय फल ॥ दिन क्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टि वैधृतौ ॥ शू

ले गंडे ति गंडे च परिघे यमघंट के ॥१८॥ काल दंडे मृत्यु योगे

दग्ध योगे सुदारुणे ॥ तस्मिन् गंड दिने प्राप्ते प्रसूति र्पदि जा

यते ॥१९॥ अति दोष करी प्रोक्ता तत्र पापयुता सति ॥२०॥

टी० क्षय दिन व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गंड अतिगंड परिघ योगका अर्द्ध यमघंट काल दंड मृत्यु योग दग्ध योग और भीरारुण योग ऐसे योग मे जन्म होय तो बहुत अशुभ जानना -

ज्येष्ठानक्षत्र फल ॥ ॥ ज्येष्ठादौ जननी माता द्वितीये जननी

पिता ॥ तृतीये जननी भ्राता स्वयं माता चतुर्थ के ॥१॥ आत्मा

न पंचमै हंति षष्ठे गोत्रस्यो भवेत् ॥ सप्तमे चोभय कुलं ज्येष्ठ

भ्रातर मष्टमे ॥२॥ नवमेश्च शूरं हंति सर्वं हंति दशांशकः ॥

टी० ज्येष्ठानक्षत्र मे प्रसूति होय तो ६ घड़ी का एक भाग ऐसे १० भाग करना
उस्का फल प्रथम भाग मे होय तो माता के माता को अशुभ २ मे होय तो माता
के पिता को अशुभ ३ मे होय तो मामा को अशुभ ४ मे होय तो माता को अशुभ
५ मे होय तो बालक को अशुभ ६ मे होय तो गोत्र को अशुभ ७ मे होय तो दू
नो कुल को अशुभ ८ मे होय तो ज्येष्ठ भ्राता को अशुभ ९ मे होय तो स्वशुर को
अशुभ १० मे होय तो सर्व नाश जानना -

मूल फल ॥ ॥ मूलं स्तंभं त्वक्चशाखापत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ वे

दाश्च मुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा ॥२१॥ नंदा बाणरसारु

द्रा मूल भेदाः प्रकीर्तिताः ॥ मूले मूल विनाशा यस्तं भेदा नि

र्धन क्षयः ॥२२॥ त्वचि भ्रातृ विनाशा यशाखा मातुर्विनाश

कृत ॥ पत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्पेषु नृप वल्लभः ॥२३॥ फले

पुलभने राज्ञं शिखाया मल्पजीवितम् ॥२४॥ ॥ ॥ ॥

टी० मूल नक्षत्र को मूल वृक्ष ऐसे सा नागरख को उत्प्ले शुभाशुभ फल देखना -

मूलकाप्रमाण ६० घड़ी तिस्ती प्रथम ४ घड़ी रसका मूल ३ स्ते जन्म हो
यतो नाश जानना नंतर ७ घड़ी मूल का स्तंभ इस्ते हा नि ५ नक्षत्र नंतर १०
घड़ी मूल की त्वा तिस्ते जन्म भ्रातृ नाश नंतर ८ घड़ी उस्ती शास्त्राति
स्ते माता का नाश जानना नंतर ९ घड़ी रसका पत्र तिस्ते स परिवार को
अशुभ जानना नंतर ५ घड़ी पुष्य तिस्ते जन्म हो यतो राजा को प्रिय होय
नंतर ६ घड़ी फल इस्ते जन्म हो यतो राज्य लाभ नंतर ११ घड़ी शाखा मे ज
न्म हो यतो अल्प जीवी जानना —

मूलवास ॥ कृषादि सिंहे च घटे च मूलं दिवस्थितं युग्य तुलां

गनात्ये ॥ पाताल गं मेघ धनुः कुलीर न के बुध तर्पे च नि संस्मरंति २५
टी० रष इन्द्रिक सिंह कुंभ इसराशी मे मूल स्वर्ग मे रहता है इस्ते जन्म
हो यतो राज्य प्राप्ति जानना मिथुन कन्या तुला मीन इसराशी मे मूल वास
पाताल मे फल धन प्राप्ति जानना मेघ धन कर्क मकर इसराशी मे मूल
मृत्यु लोक मे रहता है फल सत् कुटुंब को अशुभ जानना —

आश्लेषानक्षत्रकानराकारचक्र ॥

मूलास्थाने च गरुकांस पुगंच बाहु हज्जानु गुह्य पदमित्यहि

देहभागः ॥ बाण द्विनेत्र हुत भुक् श्रुति नागरुद्र षण्णद पंचा

रसः क्रमशस्तु नाड्यः ॥ २६ ॥ राज्यं पितृस्यो मातृनाशः काम

किंशरतिः ॥ पितृभक्तो बली स्वघ्न स्थायी भोगी धनी क्रमात् ॥ २७

टी० आश्लेषा मे जन्म हो यतो पुरुष कल्पना करके ६० घड़ी मे अंगो के फल दे
लका प्रथम ५ घड़ी मत्तक जानना फल राज्य प्राप्ति नंतर ७ घड़ी मुख फल पि
ता को अशुभ जानना नंतर ९ घड़ी नेत्र फल माता को अशुभ नंतर ३ घड़ी कंठ
फल कामी नंतर ४ घड़ी स्तंभ फल पिता की भक्ती नंतर ८ घड़ी बाहु फल बल
वान् नंतर ११ घड़ी हृदय फल आत्म घाती नंतर ६ घड़ी जंघा फल त्यागी
नंतर ९ घड़ी गुह्य फल भोगी नंतर ५ घड़ी पाद फल धनवान् —

हादशराशिनाश ॥ ॥ मेघो रषो य मिथुन कर्कटः सिंहक

न्यके ॥ तुला च रश्मि को धनी मकरः कुंभ मीन को ॥ २८ ॥

टी० मेघ राशी से मीन राशी तक कम से जानना —

राशिस्वायी ॥ ॥ कुजः सितो बुधो निधुर्भगत्पुत्रभूमिजाः ॥

सुरेज्यमंदसूर्यजागुरुःक्रियाचभेश्वराः॥२९॥

टी० दसचक्रसेद्वादशराशीकेस्वामीजानना-

| | | | | | |
|--------|-----------|---------|--------|---------|---------|
| १ मेष | २ वृषभ | ३ मिथुन | ४ कर्क | ५ सिंह | ६ कन्या |
| मंगल | शुक्र | बुध | चंद्र | सूर्य | बुध |
| ७ तुला | ८ वृश्चिक | ९ धन | १० मकर | ११ कुंभ | १२ मीन |
| शुक्र | मंगल | गुरु | शनि | शनि | गुरु |

ग्रहोंकेउच्चनीच॥ रविमेषेतुलेनीचोवृषेचंद्रस्तुवृश्चिके॥

भौमश्वनकेकर्केचस्त्रियांसौम्योदधेतथा॥३०॥ गुरुः कर्केचनकेचमीनकन्येसितस्यच॥ मंदस्तुलायामेषेचकन्या राहुगृहस्यच॥३१॥ राहुर्गुप्तेतुचापेचतमोवत्केतुजंफलं

॥ प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं चक्रमाहुधैः॥३२॥ ७॥

टी० सूर्यमेषकाउच्च तुलाकानीच चंद्रमावृषकाउच्च वृश्चिककानीच मंगल मकरकाउच्च कर्ककानीच बुधकन्याकाउच्च मीनकानीच बृहस्पती कर्ककाउच्च मकरकानीच शुक्रमीनकाउच्च कन्याकानीच शनितुलाका उच्च मेषकानीच राहुमिथुनकाउच्च धनकानीच केतूकाउच्च नीचराहु केऐसाजानना— ग्रहोंकीक्रूरशुभसंज्ञा॥ ॥ ॥

क्रूरःखेटाराहुमंदार्कभौमाःपापःसौम्यस्तैर्युतःक्षीणइंदुः॥

पूर्णचंद्रःसौम्यशुक्रामरेज्याःसौम्याःसर्वेचंद्रयुक्ताबलाढ्याः३३

टी० क्रूरग्रह राहुशनि सूर्य मंगल बुधभी दनकेसाथसौपापग्रहहोताहै- कृष्णपक्षकाचंद्रमायह पापग्रहजानना शुभग्रहपूर्णचंद्रमा बुधशुक्रबृहस्पती यहशुभग्रहजानना— ग्रहोंकीजातिसंज्ञा॥ ॥ ॥

विप्राधीशौजीवशुक्रौकुजाकौराजन्यानामोषधीशोविशांच॥

शूद्राणांश्रव्यांत्यजानांचमंदःसिंहीस्तुर्मेखवंशोद्धतानां॥३४

टी० बृहस्पतीशुक्रयह ब्राह्मण सूर्यमंगलयहक्षत्रिय चंद्रमा वैश्यबुध शूद्रशनीचांडाल राहुमेख यह प्रकारसेग्रहोंकीजानिजानना—

ग्रहोंकीस्त्रीपुरुषसंज्ञा॥ प्रोक्तानराःसूर्यकुजामरे

ज्याःकूटौशनिस्तौयुवनीसितेदू॥ सत्वरवीज्यःस

णदाधिपास्युःरजःसितारौज्ञयमौतमश्च॥३५॥

न्योतिषसार

टी० सूर्य मंगल बृहस्पती यह पुरुष ग्रह शनी बुध ग्रह नक्षत्र ग्रह शुक्र
चंद्रमा यह स्त्री ग्रह ग्रहों के गुण सूर्य पुरुष चंद्र यह सत्पुण शुक्र मंगल य
ह रजोगुण बुध शनी यह तमोगुण जानना —

ग्रहों का रूप ॥ ॥ नृपौरवीं दूकिल सैन्य नेता भौमः कु
मारः शशिजो निरुक्तः ॥ सन्यात्रिणो देवगुरु शना
रख्यौ सूर्यात्मजः सेवक संज्ञकः स्यात् ॥ १६ ॥ ७ ॥ ॥

टी० रवि चंद्र यह राजा जानना मंगल सेनापती जानना बुध कुमार जान
ना बृहस्पती शुक्र यह मंत्री जानना शनी सेवक जानना —

ग्रहों का वर्ण ॥ ॥ रक्तः सितो रक्ततरः सुनीलः पीतो
निशुकुस्तसिनो ववर्णः ॥ सूर्यादधीशा दहने बुध
मीदामोदरः शक्राची निरंजिः ॥ १७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ॥

टी० सूर्य का लाल वर्ण चंद्रमा का श्वेत वर्ण मंगल का बहुल लाल वर्ण
बुध का नील वर्ण बृहस्पती का पीत वर्ण शुक्र का सफेद वर्ण शनी का क
ष्ण वर्ण इस प्रकार से ग्रहों के वर्ण का ज्ञान करना सूर्य का देवता अश्विं
द्रमा का जल मंगल का भूमी बुध का दामोदर बृहस्पती का इंद्रश
क्र का इंद्राणी शनी का देवता ब्रह्मा जानना —

ग्रहों की दृष्टि ॥ ॥ पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाददृष्टिर्न
वपंचमेवा ॥ त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टकेनासंपूर्णदृष्टिः स
प्तसप्तकेच ॥ १८ ॥ शने त्त्वेकादशे पूर्णादृष्टिर्जीवस्वको
णके ॥ बुधैर्द्वेया पूर्णदृष्टिर्भौमस्य चतुरष्टके ॥ १९ ॥ ७ ॥ ॥

टी० ग्रहों की दृष्टि जानने का प्रकार कोई ग्रह जिस स्थान में होय उस स्थान से
३१० स्थान में एक पाद दृष्टि देखता है उसी रीत से ५१० स्थान में दो पाद
दृष्टि और ७१० स्थान में ३ पाद दृष्टि और ९ स्थान में पूर्ण दृष्टि जानना परं हि
शनी जिस स्थान में होय उस स्थान से १११ स्थान में पूर्ण दृष्टि देखता है
बृहस्पती २११ स्थान में पूर्ण दृष्टि और मंगल ४०८ स्थान में पूर्ण दृष्टि
देखता है इस प्रकार से दृष्टि जानना —

दिशा स्थायी ॥ ॥ प्राच्यादिनः सूर्ये सितार राहु मं

देवु सोमं गिर सोहि गोशाः ॥ वेदाधिनाथः क्रमशा

सुरेज्यपूर्वामरेज्यावनिजेदुपुत्राः॥४॥७॥

टी० आठदिशाकेस्वामीपूर्वसेसूर्यशुक्रमंगलराहुशनीचंद्रबुधबृहस्प
ती० यहजानना और चारो वेदकेस्वामी ऋग्वेदकेबृहस्पती यजुर्वेदके
शुक्र सामवेदकेमंगल अथर्वणवेदकेबुध यहक्रमसेजानना—

द्वादशभावसंज्ञा॥ ॥ मूर्तिर्धनारव्यः सहजः सुख
असुनारिपत्नीमृतिधर्मकर्मः॥ सायव्यपावैतनुतो
विचित्पाभावाअमीद्वादशहौरिकाद्यैः॥४१॥ ७॥

टी० लग्नसेद्वादशस्थानकीसंज्ञामूर्ति१धन२सहज३सुख४असुन५अरी६
पत्नी७मृति८धर्म९कर्म१०आय११व्यय१२यहवारस्थानजानना—

केंद्रादिद्वादशस्थानकीसंज्ञा॥ ॥ अथचकेंद्रचतुष्टय
केंद्रकंतलुसुरांबरसप्तमभंस्मृतं॥ पणफरंधनला
भसुनाष्टमंसहजशत्रुनवांत्यमपोक्षिमं॥४२॥ दुश्चि
क्यलाभांबरषष्ठगेहं प्रोक्तं नथैवोपचयंत्रिकंतु॥ षडंत्य
रंप्रंचनिजं नवांशं वर्गेन मारव्यं विबुधावदन्ति॥४३॥ न
वमंपंचमंस्थानं त्रिकोणं परिकीर्तितम्॥४४॥ ७॥ ॥

टी० स्थानसंज्ञाजाननेकाउपाय१॥४१॥७१०येचारोस्थानकेनामकेंद्रचतुष्ट
यकेंद्रकजानना२॥४१॥८११इसस्थानका नामपणफरजानना३॥४१॥९१२
यहस्थानकाआपोक्षिमनामजानना उपचयसंज्ञाकास्थान३॥११॥१०६
इसस्थानकीउपचयसंज्ञाजानना६॥११॥८ यहस्थानकीत्रिकुसंज्ञाजान
ननाजोग्रहअपनेनवमांशमेहोयउस्कोवर्गेनमजानना५॥१॥इस
स्थानकीत्रिकोणसंज्ञाजानना—

सामान्यद्वादशराशिफल॥ ॥ मेषेदैव्यमुपैतिगर्वितवृ
षो नानामतिमैव्यथेश्वरः कर्कटकेधृतीचवनपेकन्याच
भायान्विता॥ सत्यंचैवनुलेखलौमलिनतापापान्वितं
मैथनूमूर्खीयंमकरेघटेचनुरतामीनेत्वपीरामति॥४५॥

टी० नवकालमेमेषलग्नहोपतोदीनकहना रवियेगर्वी विधुनमेनाना
म० त्रिबुद्धिकर्कमेबडाश्वरसिंहमेस्थिरबुद्धिकन्यामेपापावान्तु
त्य० मकरादीवृश्चिकमेमलिनधनमेपापबुद्धिमकरमेमूर्खकुंभमे

चतुर मीनमेवोक्तार्थे ये साहाय्यशुभप्रत्ययानना -

जन्मभूमिज्ञानमाह ॥ ॥ लघुमेदुआंसादशोसूर्यधुनेषु
 स्यात्सतिर्वीक्षितेषांपरेवैः ॥ लघुमेकैवद्विभक्तं दशुक्ते
 गत्तीयांस्याचंद्रशुक्तेप्रसूतिः ॥ ५६ ॥ लघुमेसौम्येवेश्यमे
 सौम्यस्वेटेप्रालेषांशौचस्वर्गमेपूर्णदेहे ॥ आप्ये लघुमेधुन
 मेवाभृगांकेगर्भासूनसूयतेनावसंस्थः ॥ ५७ ॥ लघुमेनी
 रेभंदशुनेदृष्टेचंद्राकैचंद्रजैः ॥ उखरेदेवतागारेकीडागेहे
 क्रमात्सवः ॥ पुंलघुस्येभानुसूतेशशनेशैल्यिकेगृहे
 ॥ भूपालयेचगोष्ठेचदेसगारेमस्वात्यये ॥ ५८ ॥ लघुमेतेभौ
 यसौम्येदुशुकार्केगुरुभिःक्रमात् ॥ प्रसवोयंसपास्यातः
 सत्यलल्लादिसूरिभिः ॥ ५९ ॥ यदैकराशिगोलप्रचंद्रौदृष्टि
 विवर्जितौ ॥ विजनेप्रसवः प्रोक्तोमणित्याद्यैश्चसूरिभिः ५१

टी० जन्मकालमेजन्मलग्नमेचंद्रमासे १२ स्थानमेशनीहोय पापग्रहकी
 दृष्टिहोयतोप्रसवशुभस्थानमेकहना कर्कलग्नहोय उसीकाचंद्रमाहोयवृ
 श्चिकमेशनीहोयतो गङ्गामेप्रसूतीकहना लग्नशुभग्रहराशीहोयमस्था
 नमेषुभग्रहहोय चंद्रमाअपानेराशीमेपूर्णहोय जलराशीकालप्रहोय
 चंद्रमासप्रमस्थानमेहोयतोनावमेप्रसूतीकहना जलराशीकालग्रहो
 यतोउत्तरभूमीमेजन्मकहना जलराशीकालग्रहोयउसीमेशनीहोयतो
 देवताकेस्थानमेप्रसवकहना जलराशीकालग्रहोय चंद्र सूर्य बुध ग्रहदेरा
 नेहोयतोमीडागेहमेप्रसूतीकहना गुरुवराशीकालग्रहोयउसीमेशनी
 होय कमसेपंगलबुधचंद्रशुक्रसूर्य ग्रहस्वतीग्रहप्रहोकीदृष्टिहोयतोम
 शानमेप्रसूतीकहना चित्रकारकेयकानमेप्रसूतीकहना राजाकेगृहमेप्र
 सूतीकहना गोशालामेप्रसूतीकहना देवतास्थानमेप्रसूतीकहना या ॥ भू
 मीमेप्रसूतीकहना जन्मकालमे लग्नऔरचंद्रमाकी एकराशीहोय को
 ईग्रहकीदृष्टिहोयतोजनहितस्थानमेप्रसूतीकहना -

प्रसवज्ञानमाह ॥ ॥ शुभग्रहेस्वबंधुगैः सुखेनसंयुतः
 सवः ॥ सुतांकसप्तमस्थितैरसद्वहैस्तु कष्टनः ॥ ५२ ॥

टी० प्रसूतीकालमेजन्मलग्नमेस्थानमे शुभग्रहहोयनोसुखप्रसू

तीकहना ५१९७ स्थानमे पापग्रह होय तो कष्टसे प्रसूती कहना —

जन्मकालमे मृत्युकारक ॥ ॥ चंद्राष्टमं च धरणी सुतसप्तमं
च राहुर्नवं च शनिजन्म गुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तपंच भृगु
षष्ठबुधश्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदंति संतः ॥ ५३ ॥

टी० जन्मकालमे चंद्र अष्टम स्थानमे होय मंगल ७ स्थानमे राहु ९ स्थान
मेशनिलग्र १ स्थानमे गुरु ३ स्थानमे सूर्य पंचम स्थानमे शुक्र ६ स्थानमे बु
ध ४ स्थानमे ऐसे ग्रहयोगमे बालक होय तो बचे गान ही ऐसा जानना —

अन्यमत ॥ ॥ चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चंद्रोष्टमे पिवा
॥ सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥ ५४ ॥ ॥

टी० जन्मकालमे चतुर्थ स्थानमे राहु होय चंद्रमा ६ अथवा ८ होय तो बा
लक तत्काल मृत्यु पावे ऐसा जानना शंकर संरक्षण करे तो भी —

अन्यमत ॥ ॥ क्षीण चंद्रो व्ययस्थाने पापलगे स्मरे
ष्टमे ॥ शुभैश्च रहिते केन्द्रे क्षीणं नश्यति बालकः ॥ ५५ ॥

टी० जन्मकालमे क्षीण चंद्रमा १२ अथवा पापग्रह के स्थानमे होय अथवा
७ या ८ होय केन्द्र शुभग्रह से रहित होय तो तत्काल मृत्यु जानना —

अन्यमत ॥ ॥ दशमस्थो दिवानाथः पापैर्बहु निरीक्षि
तः ॥ मेषवृश्चिककर्कस्थो सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥ ५६ ॥

टी० जन्मकालमे सूर्य दशम स्थानमे मेष वृश्चिक कर्क इस राशीमे हो
य पापग्रह की दृष्टि होय तो भी तत्काल बालक मृत्यु पावे —

अन्यमत ॥ ॥ सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो य
दि ॥ नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुष्यः प्रजायते ॥ ५७ ॥

टी० लग्नसे सप्तम ७ स्थानमे मंगल ८ स्थानमे शुक्र होय ९ स्थानमे
सूर्य होय तो योडा आयुष्य जानना —

अन्यमत ॥ ॥ क्षीण चंद्रो यदा लगे पापाश्चाष्टमके
द्रगाः ॥ स्मरे लग्नपतिः पापैर्मुक्तो नश्येत्तदा शिशुः ५८

टी० क्षीण चंद्रमालग्रमे होय केन्द्रमे पापग्रह होय लग्नपती ७ मेषापग्र
ह से युक्त होय तो भी बालक तत्काल मृत्यु पावे —

अन्यमत ॥ ॥ लग्ने कूरश्च भवने कूरः पातालगो

यदा ॥ दशमे भवने नूरः कष्टं जीवति बालकः ५९

टी० नूरग्रहका लग्नहोय और ४ स्थानमे नूरग्रह होय १० स्थानमे नूरग्रह होय तो बालकका जीवन बहुतक हसे जानना —

माताको अशुभ ॥ ॥ अष्टमस्थो यदा राहुः पदापापग्रहो भवेत् ॥ तदा मातृभयं विधाचतुर्थे दशमे पितुः ॥ ६० ॥

टी० पापग्रह षष्ठ स्थानमे १२ स्थानमे होय तो माताको डेरुश जानना ४ स्थानमे १० स्थानमे पापग्रह होय तो पिताको डेरुश जानना —

अन्यमत ॥ ॥ अर्को मंदल ज्येष्ठः प्रसूता सं च मे यदि ॥ आत्मानः पितरं भ्रातृमाता चैव यथा क्रमात् ६१

टी० जन्मलग्नमे पंचम स्थानमे सूर्यशनि मंगल चंद्र होय तो क्रमसे बालक पिता भ्राता माता इनको अशुभ जानना —

अन्यमत ॥ ॥ सप्तमे भवने भानोः मध्यस्थो भूमिं दनः ॥ राहुर्ज्येष्ठेन थैवापि पिता कष्टेन जीवति ॥ ६२ ॥

टी० सप्तम स्थानमे सूर्य होय १० स्थानमे मंगल होय १२ स्थानमे राहु होय तो पिता बहुतक हसे बचे हेरुश जानना —

अन्यमत ॥ ॥ अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रे च नीचचंद्रमाः ॥ सप्तमस्थे भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ६३ ॥

टी० अष्टम स्थानमे राहु केन्द्रे मे नीचचंद्रमा होय तो बालकका श जानना —

अन्यमत ॥ ॥ दशस्थो यदा चंद्रः पापाश्चाष्टमे ह माः ॥ मासे नैकेन मृत्युः स्यात्तस्य बालस्य निश्चितं ६४

टी० जन्मकालमे १२ स्थानमे चंद्र ८ स्थानमे पापग्रह होय तो ४ मासे मे मृत्यु जानना —

अन्यमत ॥ ॥ षष्ठाष्टमे यदा चंद्रो बुधयुक्तश्च निष्ठति ॥ विषदोषेन बालस्य तदा मृत्युश्च जायते ॥ ६५ ॥

टी० जन्मकालसे षष्ठ अथवा ८ स्थानमे चंद्रमा बुधयुक्त होय तो बालकको विषहोषसे मृत्यु कहना —

अन्यमत ॥ ॥ अष्टमे च निरानाथः केन्द्रे चूरो यदा भवेत् ॥ चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ६६ ॥

टी० जन्मलग्नमे अष्टम स्थानमे चंद्रमा होय केन्द्र १४ ७ १० स्थानमे नूर

ग्रह होय ४ स्थान मे राहु होय तो वर्ष पर्यंत अरिष्ट जानना -

अन्य मत ॥ ॥ जन्म स्थाने यदा भौमः शत्रुक्षेत्रे यदा

भवेत् ॥ श्रियते न स्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ ६७ ॥

टी० जन्मलग्न से दशम स्थान मंगल का शत्रु क्षेत्र होय उसी स्थान मे मंगल होय तो पिता को अरिष्ट जानना -

अन्य मत ॥ ॥ लग्नेष्ट्र मे यदा राहु श्वेद्रेऽपि यदि दृश्य

ते ॥ दशाहे जायते न स्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ ६८ ॥ ॥

टी० अष्टम स्थान मे राहु होय और चंद्र उसको देखता होय तो बालक का मृत्यु १० दिन मे जानना -

अन्य मत ॥ ॥ वक्रा शनी भौम गृहे केन्द्रेषु षष्ठाष्टमेऽपि

वा ॥ कुजेन बलिना दृष्टो हंति वर्षद्वयै शिशुः ॥ ६९ ॥ ॥

टी० वक्र का शनी मंगल के क्षेत्र मे १० होय केन्द्र मे होय लग्न से षष्ठ अथ वा ८ स्थान मे होय बलवान् मंगल देखे तो २ वर्ष तक बालक को अरिष्ट कहना -

अन्य मत ॥ ॥ शनि राहु कुजैर्युक्तः सप्तमे न वमेश

शी ॥ सप्तमे दिवसे हंति मासे वा सप्तमेशिषुः ॥ ७० ॥

टी० शनी राहु मंगल ये तीनों ग्रह से युक्त चंद्रमा ७ स्थान मे अथ वा ९ स्थान मे होय तो ७ दिन मे अथ वा ७ मास मे बाल को अरिष्ट जानना -

अन्य मत ॥ ॥ दशमे भवने राहुः पितृ मातृ प्रपीडनं

द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ७१ ॥ ॥

टी० लग्न से १० स्थान मे राहु होय तो माता पिता को दुःख और बारह वे १२ वर्ष मृत्यु तुल्य अरिष्ट जानना -

अन्य मत ॥ ॥ शनि क्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा

शनिः ॥ द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते ७२

टी० जन्म काल मे शनी के क्षेत्र मे १० ११ सूर्य होय सूर्य के क्षेत्र मे ५ शनी होय तो द्वादश वर्ष मे मृत्यु जानना -

अन्य मत ॥ ॥ जन्म लग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च वृह

स्पतिः ॥ वर्षे च द्वादशे मृत्युर्दिरस्यति शंकरः ॥ ७३ ॥

टी० जन्म लग्न मे मंगल होय और ८ स्थान मे वृहस्पती होय तो बारह व

वैमृत्युजानना शिवसंरक्षणकरेतोभीमृत्युजानना—

अन्यमत॥ ॥भीमक्षेत्रेयदाजीरोजीवहोयेचभू

सुतः॥ द्वादशेवत्सरेमृत्युबालकस्थनसंशयः॥७४॥

टी० जन्मकालमें मंगलके १८ क्षेत्रमें बृहस्पती होय बृहस्पतीके ११२ क्षेत्रमें मंगल होय तो द्वादशवर्षमें अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥षष्ठाष्टमस्तथा मूर्त्तौ शत्रुक्षेत्रेयदाबु

धः॥ चतुर्थवर्षमृत्युबालकस्थनसंशयः॥७५॥ ॥

टी० जन्मकालमें षष्ठ अथवा ८ अथवा ११ में शत्रुक्षेत्रका बुध होय तो चतुर्थवर्षमें बालकको अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥भीमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टासुचचंद्र

माः॥ वर्षेष्टमेपिमृत्युर्वैदश्वरोरक्षितायदि॥७६॥ ॥

टी० जन्मकालमें मंगलके क्षेत्र १८ में बृहस्पती होय १८ स्थानमें चंद्रमा होय तो बालकको अष्टवर्षमें अरिष्ट कहना— ईश्वरसंरक्षणकरेतोभी—

अन्यपि॥ ॥दशमोपि द्वादशार्जुन्यलयेयदाभ

वेत्॥ वर्षेचतुषोडशेतेयोबुधैर्मृत्युर्नरस्यच॥७७॥ ॥

टी० जन्मकालमें १० स्थानमें राहु होय अथवा लघुमें होय तो सोलहवें वर्षमें अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥सप्तमेभवनेराहुप्राचक्षेत्रेयदाभ

वेत्॥ प्राप्तेचषोडशेवर्षे तस्यमृत्युर्नसंशयः॥७८॥ ॥

टी० जन्मकालमें सप्तमस्थानराहुका शत्रुक्षेत्र होय उसी स्थानमें राहु होय तो सोलहवें वर्षमें अरिष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥उच्चैनायदिकाकीचैसप्तमस्थोदिवा

करमानदाजातोनिहंत्याशुमातरं नात्रसंशयः॥७९॥ ॥

टी० जन्मकालमें १ में अथवा ७ तुलाका सप्तम ९ स्थानमें सूर्य होय तो याताको कष्टजानना—

अन्यमत॥ ॥धनस्थानेयदाभीमः पुनैश्वरसम

न्वितः॥ सहजेव भवेद्राहु श्रीतातस्थनजीवति॥८०॥ ॥

टी० जन्मकालमें हिनीय १ स्थानमें मंगल शनी चरके सहित होय और

तृतीयस्थानमे राहु होय तो भार्दको कष्ट कहना —

अन्यमत॥ ॥ पंचमेशनिशानाशे त्रिकोणे यदि वा क्य

तिः॥ दशमे च महीसूनुः परमायुः सजीवति॥ ८१॥

टी० लग्नसे पंचमस्थानका अधिपती चंद्रमा होय त्रिकोण १५ मे बृहस्पति होय और १० स्थानमे मंगल होय तो १२० वर्ष आयुष्य जानना —

अन्यमत॥ ॥ मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृह

स्पतिः॥ दशमो गारकश्चैव स ज्ञेयः कुलदीपकः॥ ८२॥

टी० जिस्के जन्मलग्नमे शुक्रबुध होय केन्द्र १४।७।१० मे बृहस्पती १० स्थानमे मंगल होय तो कुलमे मान्य होता है —

अन्यमत॥ ॥ नैव शुक्रो बुधो लग्ने नास्ति केन्द्रे बृहस्प

तिः॥ दशमो गारको नैव जातकः किं करिष्यति॥ ८३॥

टी० लग्नमे बुधशुक्र न होय केन्द्र १४।७।१० मे बृहस्पती न होय १० स्थानमे मंगल न होय तो पुरुष जड़ होता है — ॥ जारजात ज्ञानमाह ॥ ॥

लग्नशशांकं सुरराजमं त्रीनवीसितो नैक गृहस्थितो वा ॥ न

जीववर्गेण युतं न दानी जानं वदेद न्यसमागमेन॥ ८४॥

टी० जन्मसमयमे लग्नको और चंद्रमाको बृहस्पती न देखता होय एक गृहमे भी न होय बृहस्पती के वर्गमे भी न होय तो दूसरे पुरुषसे उत्पन्न जानना —

अन्यमत॥ ॥ स्वाती द्वितीया रविवारयुक्ता सप्तमी सोमजरे व

नीच ॥ सहादशी भानुसुतश्च विष्टा चैतेषु जातः परतो वदंति॥ ८५॥

टी० जन्मसमयमे द्वितीया रविवार स्वाती न सत्र होय तो अन्यसे जन्म कहना दूसरा योग सप्तमी बुधवार रेवती न सत्र होय तो दूसरे पुरुषसे जन्म कहना तीसरा योग द्वादशी शनिवार निधनिष्ठान सत्र होय तो अन्य जान कहना —

वर्णशंकरज्ञानमाह ॥ धनस्थाने यदा सौरिः सैंहिके यो धरात्मजः ॥ शु

क्रोशुरुः सप्तमे च त्वष्टमे रविचंद्रमाः॥ ८६॥ ब्रह्मपुत्रे पदे वापि वेश्या

सुचसदरतिः॥ प्राप्ते विंशति मे वर्षे मूर्च्छो भवति नान्यथा॥ ८७॥

टी० जन्मकालमे द्वितीयस्थानमे शनी राहु मंगल होय ७ स्थानमे शुक्र बृहस्पती होय ८ रवि चंद्र ये होय तो ब्राह्मणका पुत्र होय तो भी वह पुरुष वेश्या गमन करे और २० वर्ष के अवस्थामे मूर्च्छ होय वर्णशंकर जानना —

॥ जातक ॥ ॥ तनुस्थान ॥ लघुस्थितो दिनकरः कुरुते न गभी
हापृथ्वीमुतो विननुनेरधिप्रकोपः ॥ जाया मुनः प्रकुरुते व
हुहुः स्वभाजं जीवेनुभार्गवबुधाः सुतकांतिदाः स्युः ॥ १७ ॥
धनस्थान ॥ दुग्धान्वाधनविनाशकराः प्रदिशन्ति स्थि
तारविशनेश्चरभूमिपुत्राः ॥ चंद्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनो
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थानः ॥ १८ ॥ सहजस्थान ॥
भावचक्रोति विरुजं रजनीकरोपि कीर्त्या युतं क्षितिस्ततः
प्रचुरप्रकोपः ॥ कुर्वन्बुधः सुधिवर्गं सुविनीतवेषं स्त्रीणां
प्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीयो ॥ १९ ॥ सुहृत्स्थान ॥ आदि
त्यभौमशनयः सुखवर्जिता गंधुर्वेति जन्मनि न सुचिरं न
तु र्ये ॥ सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनो वासौ रण्यान्वितं च नृप
कर्म रतप्रधानम् ॥ २० ॥ सुतस्थान ॥ पुत्रैरविः प्रचुरकोपयु
तबुधः स्वस्वत्याजं शनिधरातनुजावपुत्रं ॥ मुकेन्दुदेव
गुरवः सुतधाम संस्थाः कुर्वन्पुत्रबहुलसुरिवनं सुहृत्
॥ २१ ॥ रिपुस्थान ॥ मार्तण्डभूमिमतुजौ हतशत्रुपक्षं पशु
नं रीपुगृहेष्यति पूजनीयम् ॥ काव्येन्दुजौ मतिविहीनम
नल्परोगे जीवकरोति विकलमरणं शशांकः ॥ २२ ॥ जाया
स्थान ॥ तिग्मांशुभौ धरविजा किल सप्तमस्या जायां कुकमे
निरतां तनुसंततिं च ॥ जीवेन्दुभार्गवबुधा वहुपुत्रयुतां रू
पां न्वितां जनमनोहररूपशीलं ॥ २३ ॥ मृत्युस्थान ॥ सर्वप्र
हादिनकरप्रसुरान्तितां तं मृत्युस्थिता वितनुते किल दु
ष्टबुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रवष्टिसौख्यैर्वि
हीनमतिरागशयैरुपेन ॥ २४ ॥ धनस्थान ॥ धर्मद्विस्तार
विशनेश्चरभूमिपुत्राः कुर्वन्ति धर्मरहितं विमतिं कुशीलं ॥
चंद्रो बुधो भृगुमुतः सुरराजमंभी धर्मक्रियासु निरतं कु
रुते मनुष्यं ॥ २५ ॥ कर्मस्थान ॥ आदित्यभौमशनयः कि
ल कर्मसंस्थाः कुर्वन् रं वहुकर्मरतं कुपुत्रं ॥ चंद्रः सुतीर्ति
मुशनावहुविजयुक्तं रूपां न्वितं बुधगुरुभक्तमभाजं ॥ २६ ॥

लाभस्थान॥ लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्तं तारा
पतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशं ॥ सौम्यो विवेकस्तु भगं
च धनायुषीज्यः शुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिं ॥
९८॥ व्ययस्थान॥ सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगोविशीलं
काणं शशीक्षिति सुतो बहुपापभाजं ॥ चंद्रांगजोगतध
नं धिषणः रुद्रांगं शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्र
म् ॥ ९९॥ राहुकेतुफलं सर्वमंदवत्कथितं बुधैः ॥ १००॥

टी० लग्नसे लेको द्वादशस्थान का फल जो जो ग्रह जो जो स्थान में होय ति
न का फल कोष्टक परसे स्पष्ट देखना परंतु राहुकेतु इन का फल शनीके
ऐसा जानना - ॥ नराकारचक्र ॥ ॥ ॥

शीर्षारव्यं वदनं च बाहुयुगलं हृच्चोदरं कट्यथो बस्ति
ऐत्यमुरुत्तजानुजघने पादद्वयं वै क्रमात् ॥ मेषाद्याः
किल राशयः समुदिताः पूर्वैः सुबो धाय ये त्वेके लग्न
भतश्च काद्यवयवाज्ञेयास्तु निःसंशयं ॥ १०१॥ ॥

टी० पुरुष का आकार चक्र लिखना उस पर मेषादिक राशी का यथा
क्रमसे न्यास करना मस्तक १ सुत २ हस्त ३ हृदय ४ उदर ५ कटी ६
वस्ती ७ गुह्य ८ ऊरु ९ जानु १० जघन ११ पाद १२ ऐसा पहिले ग्रह
फल जानना कोई आचार्य कहते हैं कि जन्मलग्न से भी न्यास करना -
शरीर के व्रण तिल मशक के वास्ते -

अन्यमत

यत्र यः सौम्ययुना ग्रहाः स्युस्तत्र व्रणस्तत्स
मराशिदेशे ॥ तद्दृष्टिपुस्थो व्रणकुत्तवलो वास
दृष्टियुक्तस्तिललक्ष्मकृत्स्यात् ॥ १०२॥ ॥

टी० नराचक्रमे जन्मलग्न से जिस राशी में ३ तीन ग्रह होय उसके संमां
न शरीर में व्रणादिक चिन्ह कहना उसी तरह से जन्मकुंडली में षष्ठ
स्थान में पापग्रह होय तो शरीर में घाव दसादिक कहना अथवा शुभ
ग्रह होय तो तिल मसादिक कहना -

पुरुषजातकोष्टक

| संख्यास्थान | रशि | चंद्र | गणह | वृष | उरु | सुक्त | शानी गुरुकेतु |
|-------------|-----|---------|------|-------|---------|---------|---------------|
| १ | तुल | दशरिशीश | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| २ | ५ | अश्विनी | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ३ | ६ | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ४ | ७ | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ५ | ८ | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ६ | ९ | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ७ | १० | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ८ | ११ | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |
| ९ | १२ | मिथि | मिथि | रजकोप | कंठिफार | कंठिमुल | कंठिमुल |

स्त्रीजानकमाह॥ ॥ लगेचसप्तमेपापेसप्तमेवत्स

रेपति॥ शिष्यतेनाष्टमेवर्षेचंद्रः षष्ठाष्टमेयदि॥१॥

टी० स्त्रीकेजन्मकालमेलप्रमेपाप्रग्रहहोय औरसप्तमेपापग्रहहोयतो अव
र्षमेपतिनाशजानना चंद्रपष्ठ ५८ स्थानमेहोपतो अष्टमवर्षमेपतिनाशजानना-

अन्यमत॥ ॥ द्वादशेनाष्टमेभीमेकूरेतचैवसंस्थिते॥

लगेचसिंहिकापुत्रैरुद्धाभवतिनन्यका॥२॥ अ॥ अ॥

टी० जन्मसमयमे१२८ स्थानमेयंगलहोय औरदूरग्रहभी१२८ स्था
नमेहोय औरलप्रमेराहुहोयतो स्त्रीविधवाहोयरेसाजानना-

अन्यमत॥ ॥ रुद्रात्सप्तमः पापश्चंद्रात्सप्तमोपिवा॥

सद्योनिहंतिदंपत्योरेकोनास्त्यत्रसंशयः॥३॥

टी० लग्नमे ७ स्थानमे पापग्रहहोय चंद्रमासेसप्तमस्थानमेपापग्रह
होयतो विवाहमे अल्पकालमे विधवाजानना—

अन्यमत॥ ॥रबिसुतोयदिकर्कमुपागतोहिमक
रोमकरोपगतोभवेत्॥किलजलोदरसंजनिता
तदानिधनतावनितास्तकीर्तिता॥४॥ ७॥ ॥

टी० शनीकर्कराशीमेहोय चंद्रमामकरराशीमेहोयतो जलोदररोग
सेस्त्रीकानाशजानना—

अन्यमत॥ ॥निशाकरःपापरवगांतरस्थःश
स्त्राग्रिमृत्युकुजभेकरोति॥पापास्मरस्यन्यरव
गेचधर्मेकिलोगनाप्रव्रजितित्वमेति॥५॥ ७॥ ॥

टी० चंद्रमा पापग्रहके मध्यमेहोयतो शस्त्रसे मृत्युकहना चंद्रमा
मंगलके राशीमेहोयतो अग्नीसेनाश कहना पापग्रह सप्तम ७
स्थानमेहोय ९ स्थानमे अन्यशुभग्रहहोयतो स्त्री काषायवस्त्रपा
रीवेदांतीहोतीहै—

अन्यमत॥ ॥सप्तमेदिनपतौपतिमुक्ताक्षो॥
णिजेचविधवाखलुबालो॥पापरेचरविलो
कनयातेमंदगेचयुवनिर्जरतीस्यात्॥६॥ ७॥ ॥

टी० स्त्रीकेजन्मलग्नसे सप्तम ७ स्थानमेसूर्य होयतो पतित्यागीक
हना मंगल सप्तम स्थानमेहोयतो बाला अवस्थामे वैधव्यप्राप्ती
सप्तमस्थानको पापग्रह देखते होयतो यौवन अवस्थामे वैधव्यप्रा
प्ती सप्तमस्थानमे शनीहोयतो रुद्ध अवस्थामे वैधव्यप्राप्ती ग्रहके
बलसेकहना—

अन्यमत॥ ॥लग्नेसितेंदुकुजमंदभस्थौकू
रेक्षितौसान्धरताचबाला॥स्मरेकुजांशके
सुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्चशुभाशुभांशो॥७॥ ७॥ ॥

टी० लग्नमेशुकचंद्रमा मंगल शनी यह दशमस्थानमे होय उ
त्तरेपापग्रह देखतेहोयतो वहस्त्री परपुरुषसेसंगकरेसेसाजान

ना सप्तमस्थानमे ७ मंगलका अंश होय औरशनी वहसप्तमस्था
नको देखता होयतो नष्टपौनी जानना वहसप्तमस्थानमेषु भग्रह
का अंश होयतो शुभ कहना॥

अन्यमत॥ ॥ सूर्यारौ स्वजलाशितोद्भिभवतः शै
लाग्रपातान्मृतिर्भौमे दृक् सनाः स्वसप्तजलगाः
स्यात्कूपवाप्यादिनः॥ सूर्या चंद्रमसौखलै स्थित
युतौ कन्या युतौ बन्धुनातौ चैव गविलप्रसंस्थि
तकरोतो ये निमग्रत्वतः॥ ८॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥

टी० सूर्यमंगल यह १० अथवा ४ चतुर्थस्थानमे होयतो पाषाणसंवे
धसे मृत्युकहना मंगल चंद्र शनी यह अपाने स्थानमे सप्तम ७
अथवा चतुर्थ ४ स्थानमे होयतो कुंवा बावली तलाव इत्यादिक से
मृत्युकहना सूर्य और चंद्रमाको पापग्रह देखते होय अथवा युक्त
होयतो वह स्त्री बंधुयुक्त कहना सूर्य चंद्र यह द्वि स्वभाव राशीमे हो
यतो जलमे मृत्युकहना—

अन्यमत॥ ॥ समेविलग्ने यदि संस्थिताः स्यु
र्वलान्विताः शुक्र बुधे बुजीवाः॥ स्यात्कामिनी ब्रह्म
विचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना॥ ९॥ ८॥ ८॥

टी० समराशीकालग्रहोय उसीमे शुक्र बुध चंद्र गुरु यह बल युक्त होयतो
वह स्त्री ब्रह्मविचारकरे और उत्तम प्रकारकी ज्ञानी होयरे सा कहना—

अन्यमत॥ ॥ सप्तमे भार्गवे ज्ञाना कुलदोषकण भवे
त्॥ कर्कराशिस्थिने भौमे सैरा भ्रमनिवेशसु॥ १०॥ ८॥

टी० जिस स्त्री कुलप्रसे ७ स्थानमे शुक्र होयतो कुलको दाषितवरे और
कर्कराशीमे मंगल होयतो वध्या और दूसरे के ग्रहमे वास जानना—

अन्यमत॥ ॥ पापयोरेतरे लगे चंद्रे वा यदि कन्य
का॥ जायते चतुर्दशनिमित्तं शुभपौःकुलं॥ ११॥

टी० लग्नको पापग्रहकी कर्त्तरी होय अथवा चंद्रमाको पापग्रहकी क
र्त्तरी होयतो वह स्त्री दूजेवंशका घात करेरे सा जानना—

तनुस्थान॥ ॥ मूर्त्तौ करोति विधवां दिनकृत्य नम

राहुर्विनष्टनयोरविजोदरिद्रां॥ शुक्रः शशांकतनयश्च
 गुरुश्च साध्वीमायुः संपंचकुरुते च चशर्वरीशाः॥ १२॥
 धनस्थान॥ ॥ कुर्वति भास्करशनेश्च राहुभौमाद्वारि
 द्रदुःखमनुलंनियतं द्वितीये॥ विजेश्वरी मविधवां गुरु
 शुक्रसौम्या नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः॥ १३॥ स
 हजस्थान॥ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्युस्त्रि
 यंबहुसुतां धनभागिनीं च॥ सत्यदिवाकरसुतः कुरुते ध
 नाढ्यां लक्ष्मीं ददाति नियतं किल सैहिकेयः॥ १४॥ सुह
 स्थान॥ ॥ स्वल्पपयो भवति सूर्यसुते चतुर्थे दौर्भाग्यमु
 षाकिरणं कुरुते शशी च॥ राहुर्विनष्टनया स्थितिजो ल्यवी
 जां सौरव्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्च कुर्युः॥ १५॥ सुतस्था
 न॥ ॥ नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ च द्वात्मजौ बहु
 सुतां गुरुभार्गवौ च॥ राहुर्ददाति मरणं रविजस्तुरोगं क
 न्या प्रसूतिनितरां कुरुते शशांकः॥ १६॥ रिपुस्थान॥ षष्ठ
 स्थिता शनिदिवाकरराहुभौमा जीवस्तथा बहुसुतां धन
 भागिनीं च॥ चंद्रः करोति विधवा मुशनादरिद्रां वेश्यां श
 शांकतनयः कलहप्रियां च॥ १७॥ जायास्थान॥ सौरार
 जीवबुधराहुर्वीर्यदुःशुक्रादयुः प्रसह्य मरणं खलु सप्तम
 स्थाः॥ वैधव्यबंधनभयं सयविचननाशं व्याधिप्रवासपर
 णं नियतं क्रमेण॥ १८॥ मृत्युस्थान॥ स्थानेष्टमे गुरुबुधौ
 नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः॥ सूर्यः क
 रोति विधवां धनिनीं कुजश्च सूयौ त्वजौ बहुसुतां पतिं व
 ल्लभां च॥ १९॥ धर्मस्थान॥ धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभू
 मिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां शशिजः सुभोगां॥ राहुश्च सूर्य
 र्यतनयश्च करोति वंध्यां नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः
 ॥ २०॥ कर्मस्थान॥ राहुर्नभस्य लगतो विधवां करोति पा
 पेपरां दिनकरश्च शनेश्च रश्च॥ मृत्युं कुजो र्धरहितां कुटि
 लां च चंद्रः शेषाग्रहाधनवतीं बहुवल्लभां च॥ २१॥

अथस्थाना॥ आयेरीचर्बहुकतां पमिनीं शवांकः पुत्रानि
तां हिसि सुनोर विजो पना ह्यो॥ आधुपतीं सुरगुरुपुंशु
जः सपुत्री राहः करोति सुभगां सुरिनीं लुपय ॥ २५ ॥ अ
यस्थान ॥ ॥ अंत्ये धनव्ययवती दिन रुहरि द्रं वंध्यां कुजः
परतां कुदिलां न राहः ॥ साध्वीं पिते ज्यशशि जा बहु पु
त्रोत्र पुक्तो विधुः प्रकुरुते व्ययमो दिनां धाम् ॥ २६ ॥ ॥

टी० द्वादशस्थानका फल जो जो ग्रह जो जो स्थान मे होय पतिनका फल को
हृक परसे स्पष्ट मालूम होगा—

॥ स्त्री जानक को हृक ॥

| क्रम | नाम | रवि | चंद्र | मंगल | बुध | शुक्र | शनि | रा. के. | |
|------|--------|------------|------------|------------|----------|----------|------------|----------|------------|
| १ | ननु | विधवा | अत्यापु | विधवा | पतिव्रता | पतिव्रता | पतिव्रता | दरिद्री | पुत्रनाश |
| २ | धन | दरिद्रदुःख | बहुपुत्र | दरिद्री | सौभाग्य | सौभाग्य | सौभाग्य | दुःखपु | दरिद्रदुःख |
| ३ | सहज | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र |
| ४ | गुह्य | दरिद्री | दुष्टभा | अत्यसं | बहुसौ | बहुसौ | बहुसौ | अत्यदुः | पुत्रनाश |
| ५ | सुत | पुत्रनाश | कन्याव | पुत्रनाश | उत्तमफल | सुभफल | बहुसुख | रोगी | मृत्यु |
| ६ | रिशु | धनपुत्र | विधवा | धनपुत्र | प्रसूहका | धनपुत्र | दरिद्रीवे | धनपुत्र | धनपुत्र |
| ७ | जाया | रोगी | प्रवासी | विधवा | नाश | अपबंधु | मृत्यु | बंधव्यम | पाननाश |
| ८ | मृत्यु | विधवा | विधवा | धनपु | स्वजननि | स्वजननि | पराजान | बहुपुत्र | पराजान |
| ९ | धर्म | धर्मपुत्र | पुत्रपुत्र | धर्मपुत्री | उत्तमपु | धर्मपु | धर्मपुत्र | बंध्या | बंध्या |
| १० | कथं | दुष्टपुत्र | पापवती | मृत्यु | धनपुत्र | धनपुत्र | धनपुत्र | पापकर्म | बंधव्य |
| ११ | आय | बहुपुत्र | धनपुत्र | बहुपुत्र | सुरती | आधुप्य | पुत्रपुत्र | धनपुत्र | सौभाग्य |
| १२ | व्यय | दरिद्र | दिनां | दुष्टकर्म | सुपुत्र | सुभागा | पतिव्रता | दरिद्री | पापकर्म |

अथाष्टोत्तरी दशा

आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्य आश्लेषा तुल्य वेदशा ॥ मघा पूर्वाषाढा
चैत्र चंद्रस्य च दशा नवा ॥ इत्येतां विंशतिं पञ्चविंशतिं च स्वाती

भौमदशास्मृता॥ ज्येष्ठानुराधामूलेचसौम्यस्यचदशा
बुधैः॥२॥ अभिजिच्छ्रवणः पूषाउषाचैवशनेर्दशा॥३॥
निष्ठाशतताराच पूर्वभाद्रपदागुरोः॥४॥ उभापूषा
श्विनीकालराहोश्चैवदशास्मृता॥ कृत्तिकारोहिणी
चोक्तामृगः शुक्रदशाबुधैः॥५॥ एषांभानांक्रमेणैवज्ञे
याः सूर्यादिकादशाः॥ क्रूरजाअशुभाप्रोक्ताशुभास्या
तसौम्यखेटजा॥६॥ सूर्यस्यरसवर्षाणिद्वंद्वोःपंचद
शैवच॥ भौमस्यवसुवर्षाणिऋषिचंद्रबुधस्यच॥७॥
मंदस्यदशवर्षाणिगुरोश्चैकोनविंशतिः॥ राहोहो
दशवर्षाणिभार्गवस्यैकविंशतिः॥८॥ ९॥ १०॥ ११॥

टी० आर्द्रानक्षत्रसे आरंभकरको मृगतक २८ नक्षत्रमे सूर्यसे शुक्रत
क ८ ग्रहोंकी पृथक् पृथक् कोष्टकपरसे महादशाकी वर्षसंख्याजानना
पापग्रहमे ४ नक्षत्रऔरशुभग्रहमे ३ नक्षत्रजानना औरजिसविभाग
मे जन्महोय उसमे भोग्या भोग्यजानना जोदशा जन्मकालमे होय
वही ग्रहकी दशा प्रथमजानना चक्रपरसे स्पष्टदेखना—

ग्रहोंकी अंतर्दशा

महादशास्वस्वदशाब्दनिघाहनावसुव्यो मध

राभिरेताः॥ अंतर्दशास्युर्गैगनैचराणां तदेक

भावोहि महादशास्यात्॥ ८॥ ९॥ १०॥

टी० कोर्दग्रहकी अंतर्दशा निकालनाहोयतो जन्मदशाके वर्षसंख्या
सेउस्की वर्षसंख्या गुणदेना नंतर १०८ सेभागलेना जो अंक आवेसो वर्ष
मालूमकरना नंतरशेषरहेतिस्को वारसेगुणदेना पुनः १०८ सेभागले
ना जो अंक आवेसो मासजानना नंतरशेषरहाजो उसको ३० सेगुणदेना पुनः
१०८ सेभागलेना जो अंक आवेसो दिनजानना नंतर शेषरहा जो उसको ६० सेगुण
देना पुनः १०८ सेभागलेना जो अंक आवेसो घड़ीजानना इसप्रकारसे ग्र
होंकी अंतर्दशा जानना—

| सूर्यकी महादशा वर्ष १६ | | | | | | चंद्रकी महादशा वर्ष १५ | | | | | |
|------------------------|----|-----|-------|----|------|------------------------|----|-----|----------|----|------|
| आर्यो | | | अनर्क | | | मया | | | अनर्क | | |
| अंतर्दशा | | | | | | अंतर्दशा | | | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल | ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल |
| रवि | ० | ४ | ० | ० | अशुभ | चंद्र | १ | १ | ० | ० | शुभ |
| चंद्र | ० | १० | ० | ० | शुभ | शनि | १ | १ | १० | ० | अशुभ |
| मंगल | ० | ५ | १० | ० | अशुभ | बुध | १ | ४ | १० | ० | शुभ |
| बुध | ० | ११ | १० | ० | शुभ | रवि | १ | ४ | २० | ० | अशुभ |
| शनि | ० | २ | २० | ० | अशुभ | गुरु | १ | १० | २० | ० | शुभ |
| गुरु | १ | ० | २० | ० | शुभ | शुक्र | १ | ० | ० | ० | अशुभ |
| शुक्र | १ | ० | ० | ० | अशुभ | रवि | १ | ११ | ० | ० | शुभ |
| शुक्र | १ | २ | ० | ० | शुभ | चंद्र | ० | १० | ० | ० | अशुभ |
| संख्या | ६ | ० | ० | ० | ० | संख्या | १५ | ० | ० | ० | ० |
| शनि की महादशा वर्ष ८ | | | | | | बुध की महादशा वर्ष १७ | | | | | |
| हस्त | | | विजा | | | अनुगधा | | | ज्येष्ठा | | |
| अंतर्दशा | | | | | | अंतर्दशा | | | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल | ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल |
| शनि | ० | ७ | ३ | २० | अशुभ | बुध | १ | ० | ३ | २० | शुभ |
| बुध | १ | ३ | ३ | २० | शुभ | शनि | १ | ४ | २५ | ४० | अशुभ |
| शनि | ० | ० | २५ | ४० | अशुभ | गुरु | १ | ११ | २५ | ४० | शुभ |
| गुरु | १ | ४ | २५ | ४० | शुभ | शुक्र | १ | १० | २० | ० | अशुभ |
| शुक्र | ० | १० | २० | ० | अशुभ | रवि | १ | २ | २० | ० | शुभ |
| रवि | १ | ४ | २० | ० | शुभ | चंद्र | ० | ११ | १० | ० | अशुभ |
| चंद्र | ० | ५ | १० | ० | अशुभ | शनि | १ | ३ | ३ | २० | अशुभ |
| चंद्र | १ | १ | १० | ० | शुभ | संख्या | १७ | ० | ० | ० | ० |
| संख्या | ८ | ० | ० | ० | ० | | | | | | |
| शनी की महादशा वर्ष १० | | | | | | गुरु की महादशा वर्ष १९ | | | | | |
| हस्त | | | विजा | | | अनुगधा | | | ज्येष्ठा | | |
| अंतर्दशा | | | | | | अंतर्दशा | | | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल | ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल |
| शनि | ० | ११ | ३ | २० | अशुभ | गुरु | १ | ४ | ३ | २० | शुभ |
| गुरु | १ | ९ | ३ | २० | शुभ | शुक्र | १ | १ | १० | ० | अशुभ |
| शुक्र | १ | १ | १० | ० | अशुभ | रवि | १ | ० | १० | ० | शुभ |
| शुक्र | १ | ११ | १० | ० | अशुभ | चंद्र | १ | ० | २० | ० | अशुभ |
| रवि | ० | ५ | २० | ० | अशुभ | मंगल | १ | ४ | २५ | ४० | अशुभ |
| चंद्र | १ | ४ | २० | ० | शुभ | बुध | १ | ११ | २५ | ४० | शुभ |
| मंगल | ० | ० | २५ | ४० | अशुभ | शनि | १ | १ | ३ | २० | अशुभ |
| बुध | १ | ५ | २५ | ४० | शुभ | संख्या | १९ | ० | ० | ० | ० |
| संख्या | १० | ० | ० | ० | ० | | | | | | |

ज्योतिषसार २

| राहुकीदशावर्ष १२ | | | | | | शुक्रकीदशावर्ष २१ | | | | | |
|-----------------------------------|----|-----|-----|----|------|-------------------|----|-----|-----|----|------|
| उत्तराभाद्रपदा-रेवती-अश्विनी भरणी | | | | | | रुनिका रोहिणी मृग | | | | | |
| अंतर्दशा | | | | | | अंतर्दशा | | | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल | ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | फल |
| राहु | १ | ४ | ० | ० | अशुभ | शुक्र | ४ | १ | ० | ० | शुभ |
| शुक्र | २ | ४ | ० | ० | शुभ | रवि | १ | २ | ० | ० | अशुभ |
| रवि | ० | ८ | ० | ० | अशुभ | चंद्र | २ | ११ | ० | ० | शुभ |
| चंद्र | १ | ८ | ० | ० | शुभ | मंगल | १ | ६ | २० | ० | अशुभ |
| मंगल | ० | १० | २० | ० | अशुभ | बुध | ३ | ३ | २० | ० | शुभ |
| बुध | १ | १० | २० | ० | शुभ | शनि | १ | ११ | १० | ० | अशुभ |
| शनि | १ | १ | १० | ० | अशुभ | गुरु | ३ | ८ | १० | ० | शुभ |
| गुरु | २ | १ | १० | ० | शुभ | राहु | २ | ४ | ० | ० | अशुभ |
| संख्या | १२ | ० | ० | ० | ० | संख्या | २१ | ० | ० | ० | ० |

विंशोत्तरी महादशा

पक्षोनजनुर्भमंकहत्क्रमशोर्केदुकुजागुस्तारयः॥श

निचंद्रजकेतुभार्गवाःपरिशेषानुदशाधिपास्तनः॥९॥

टी० विंशोत्तरी दशाप्रकार जन्मनक्षत्रमे २ कमकरना ९ सेभागले नाशेष १ बचेतो सूर्यदशा २ बचेतो चंद्रदशा ३ बचेतो भौम दशा- ४ बचेतो राहुदशा ५ बचेतो गुरुदशा ६ बचेतो शनिदशा ७ बचेतो बुधदशा ८ बचेतो केतुदशा ९ बचेतो शुक्रदशा और अधिपतिजानना-

दशाकीवर्षसंख्या भोग्याभोग्य

ऋतुदिगिरयोधृतिर्नृपातिधृतीमेघहयोनरवाःसमाः॥क्रम

तोहिमताअशादिभाजनिभस्थाघटिकाःसमाहताः॥१॥भ

भोगेनभक्ताःफलंभक्तपाकस्तदूनादशासामवेद्भोग्यसंज्ञा॥

टी० विंशोत्तरीदशाकीवर्षसंख्या ऋतुकहिये ६ दिक ०१० गिरीक ०७ धृतिक ०१० नृपक ०१६ अतिधृतिक ०१९ मेघक ०१७ हयक ०७ नरक ०२० यहक्रमसेवर्षसंख्या सूर्यादिशुक्रांततकको एकमेस्पष्टदेखना- आगेजन्मजिसनक्षत्रमेहोय उसनक्षत्रके पूर्वनक्षत्रकीजोघड़ीहोय उसको ६० मेंन्यूनकरना उसमेंदृष्टकालजोडदेनातो भयातहोनाहै नंतर जन्मनक्षत्रकीजोघड़ीहोयउस्कोपूर्व ६० मेंन्यूनकियाजोघड़ीउस्मेजोड देनातो भोगहोताहै भयातजोहोयउस्कोनक्षत्रपतीकेवर्षसेगुणदे

ना भोगजो भोग्य घड़ी होष उसै भागलेना जो अंक आवे सो वर्ष जात
ना शेषजोरहेतिस्को १२ से गुण देना भोग्यसे भागलेना जो अंक आवे
सो मास० शेषजोतिस्को ३० से गुण देना भोग्यसे भागलेना जो अंक आवे
वै सो दिन० शेषजोतिस्को ६० से गुण देना भोग्य घड़ी से भागलेना जो अंक
आवे सो घड़ी इस प्रकार से दशा ल्यावना—

विंशोत्तरीक्रम॥ ॥ कृत्तिकादि क्रमणैव ते पाविंशोत्तरी

दशाः॥ अंतर्दशायुतावर्षमासवासरवर्तिताः॥११॥ ॥

टी० कृत्तिकासे भरणीतक नक्षत्र और दशा अंतर्दशाके स्वामी के
नाम और वर्ष संख्या को एक परसे माह्य करना—

अन्यमने॥ ॥ स्वदशारामगुणितातदृशगुणिता

पुनः॥ स्वगुणेनहरेल्लब्धवर्षमासदिने भवेत् १२

टी० अपनी प्राप्त दशा को तीन ३ से गुण देना तिस्की अंतर्दशा ल्यावना होष उसो न
र्ष से गुण देना मंतर ३० से भागलेना तो अंतर्दशा वर्ष मास दिन प्राप्त होता है—

| सूर्य की महादशा वर्ष ६ | | | | चन्द्र की महादशा वर्ष १० | | | | भोग्य की महादशा वर्ष ७ | | | |
|---------------------------|----|-----|-----|--------------------------|----|-----|-----|------------------------|----|-----|-----|
| कृत्तिका पुनराफा उत्तराषा | | | | रेहिणी मृगशिरा | | | | मृग शिरो मृगशिरा | | | |
| अंतर्दशा | | | | अंतर्दशा | | | | अंतर्दशा | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. |
| रवि | ० | ३ | १० | शुक्र | ० | १० | ० | शुक्र | ० | ४ | २३ |
| बुध | ० | ६ | ० | भोग्य | ० | ७ | ० | भोग्य | ० | ० | १० |
| मंगल | ० | ८ | ६ | राहु | १ | ६ | ० | राहु | ० | ११ | ६ |
| केतु | ० | १० | २४ | शनि | १ | ४ | ० | शनि | १ | १ | ९ |
| शुक्र | ० | ९ | १० | शनि | १ | ७ | ० | बुध | ० | ११ | २४ |
| शनि | ० | ११ | १३ | बुध | १ | ५ | ० | केतु | ० | ४ | २० |
| बुध | ० | १० | ६ | केतु | ० | ७ | ० | शुक्र | १ | ३ | ० |
| केतु | ० | ४ | ६ | शुक्र | १ | ८ | ० | रवि | ० | ४ | ६ |
| शुक्र | १ | ० | ० | रवि | ० | ६ | ० | चन्द्र | ० | ७ | ० |

| राहु की महादशा वर्ष १० | | | | शुक्र की महादशा वर्ष १६ | | | | शनी की महादशा वर्ष १० | | | |
|------------------------|----|-----|-----|-------------------------|----|-----|-----|-----------------------|----|-----|-----|
| आशी स्वामी शतवारिका | | | | शनि की विशाला १० भा | | | | पुषा अश्लेषा उतर्गभा | | | |
| अंतर्दशा | | | | अंतर्दशा | | | | अंतर्दशा | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. |
| रवि | १ | ० | १३ | शुक्र | १ | १ | १० | शनि | ३ | ० | ३० |
| शुक्र | ३ | ४ | २४ | शनि | ३ | ६ | १३ | बुध | ३ | ० | १० |
| शनि | २ | १० | ६ | बुध | २ | ३ | ९ | केतु | १ | १ | ९० |
| बुध | ४ | ६ | १० | केतु | ० | ११ | ६ | शुक्र | ४ | ३ | ०० |
| केतु | १ | ० | १० | शुक्र | १ | ० | ० | रवि | ० | ११ | १२० |
| शुक्र | ३ | ० | ० | रवि | ० | ६ | १० | बुध | १ | ७ | ०० |
| रवि | ० | १० | २४ | चन्द्र | १ | ४ | ० | मंगल | १ | १ | ०० |
| चन्द्र | १ | ६ | ० | मंगल | ० | ११ | ६ | राहु | २ | १० | ६० |
| मंगल | १ | ० | १० | राहु | २ | ४ | २४ | शुक्र | २ | ६ | ११० |

| बुधकी महादशावर्ष १७ | | | | | केतुकी महादशावर्ष ७ | | | | | शुक्रकी महादशावर्ष २० | | | | |
|---------------------|----|-----|-----|----|---------------------|----|-----|-----|--|-----------------------|----|-----|-----|--|
| अंश रेवती | | | | | अंश मृगशिरा | | | | | अंश मृगशिरा | | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | घ. | ग्रह | व. | मा. | दि. | | ग्रह | व. | मा. | दि. | |
| बुध | २ | ४ | २७ | ० | केतु | ० | ४ | २७ | | शुक्र | ३ | ४ | ० | |
| केतु | ० | ११ | २७ | ० | शुक्र | १ | ३ | ० | | रवि | १ | ० | ० | |
| शुक्र | २ | १० | ० | ० | रवि | ० | ४ | ६ | | चन्द्र | १ | ८ | ० | |
| रवि | ० | १० | ६ | ० | चन्द्र | ० | ७ | ० | | मंगल | १ | २ | ० | |
| चन्द्र | १ | ५ | ० | ० | मंगल | ० | ४ | २७ | | राहु | ३ | ० | ० | |
| मंगल | ० | ११ | २७ | ० | राहु | १ | ० | १८ | | शुक्र | ३ | ८ | ० | |
| राहु | २ | ६ | १८ | ० | शुक्र | ० | ११ | ६ | | शनि | ३ | ३ | ० | |
| शुक्र | २ | ३ | ६ | ० | शनि | १ | १ | ९ | | बुध | ३ | १० | ० | |
| शनि | २ | ८ | ९ | १० | बुध | ० | ११ | २७ | | केतु | १ | २ | ० | |

महादशाभंतर्दशाकाफल

सूर्यकी दशा ॥ ॥ देशान्तरचनिजबंधुवियोगदुःखमुद्दे
गर्भभयचोरभवाचपीडा ॥ पूर्वस्थितस्य निखिलस्य
धनस्य नाशो भानोर्दशाजननकालदशा भवति ॥ ११ ॥

टी० प्रवासमेगमनभाईलोगसेवियोग दुःख मनकोचिंता रोग भय चोर
सेपीडा और पूर्वके द्रव्यकानाशय इह सूर्य दशा मे फल प्राप्ती जानना -

चंद्रकी दशा ॥ ॥ हेमादिभूनिवरवाहनपानलाभः

शत्रुप्रतापबलबुद्धिपरंपराच ॥ मिष्टान्नपानशय

नासनभोजनानि नूनं सदा शशिरदशागमने भवति १२

टी० सबेष्टवर्ष सुवर्णघोडा हाथी यह सब वस्तु कालाभ शत्रुकानाश बलकी
बुद्धि मिष्ट भोजन आसन उत्तम वस्तु कालाभ चंद्रके दशामे प्राप्ती जानना -

भौमकी दशा ॥ ॥ भूषालचोरभयवन्धिताचपीडास

वर्ग रोग भयदुःख सुदुःखिताच ॥ चिंताज्वरश्च बहुदुःख

दरिद्रयुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशाजनने भवति ॥ १३ ॥

टी० राजासे भयचोरसे भय अग्नीसे पीडा सब शरीरमे रोग भय बहुत दुःखी
चिंता युक्त ज्वर युक्त बहुत कष्ट दरिद्र युक्त यह मंगलके दशामे फल प्राप्ती जानना -

राहुकी दशा ॥ ॥ दीनो नरो भवति बुद्धि विहीन चिंता सर्वो

गर्भभयदुःख सुदुःखिताच ॥ पापानि बंधवहु कष्ट दरि

द्रयुक्तराहोर्दशाजननकालदशा भवति ॥ १४ ॥

टी० मनुष्य दीन होय बुद्धिहीन चिंता युक्त सर्वो रोगी भय बहुत दुःखी

पापकर्मसेबंधन बहुतकष्ट करिद्विपुताबहुतदुःखामेकले प्राप्ती जानना
गुरुदशा॥ ॥ राख्याधिकारपरिवर्द्धितचिन्तनधर्मा
धिकारपरिपालनसिद्धिबुद्धि॥ सिद्धिग्रहोपिधनधान्य
समृद्धितावस्थादेवनागुरुदशागमनेभवति॥ १५॥

टी० राजाका अधिकार चित्तस्वस्थ धर्ममेउत्तम प्रकारकी बुद्धि शरीर आ
रोग्य सतपिचारवान् धनधान्यकी समृद्धि पहाकल गुरुदशामे जानना—
शरीरकी दशा॥ ॥ मिथ्यापवादबंधधनमर्थहानिनिर्मि
त्रेचबंधधुवचनेषुचयुद्धबुद्धि॥ सिद्धचकार्यमपिप्रस
दादिनष्टस्यात्सर्वदाशानिदशागमनेभवति॥ १६॥ १७॥

टी० मिथ्या अपवाद दूसरे सबबंधधनप्राप्ती द्रव्यनाश मित्र औरबंध
सेकलह सिद्धकार्यकानाश यहशानिदशामे फलप्राप्ति जानना—
बुधकी दशा॥ ॥ दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्य
नानाविलासम भिरागमनोभिरामैः॥ हेमादिरत्नवि
भवागमकोश ध्यानस्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवति १७

टी० उत्तमस्त्री प्राप्ती रति सौख्य और नाना प्रकारका सौख्य विलास सुव
र्णरत्न इत्यादिविभवयुक्त ईश्वर ध्यान यहबुधकी दशामे प्राप्ती जानना
केतुकी दशा॥ ॥ भार्यावियोगजनितचशरीरदुःखं द्र
व्यस्थहानिरतिकष्टपरंपराच॥ रोगाश्वबंधधु कलह
विदेशताचकेतोर्दशाजननकालदशाभवति॥ १८॥

टी० स्त्रीवियोगसंबंधी शरीरको दुःख द्रव्यनाश बहुतकष्ट रोगी बं
धूसेवैर देशांतरवास यहकेतुके दशाका फल जानना—
शुक्रकी दशा॥ ॥ आरामबुद्धिपरिगर्वशरीरवृद्धिस्वे
तानपत्र धनधान्यसमाकुलं च॥ आयुः शरीरसुतेपौत्र
सुखंनराणां द्रव्यं च भार्गवदशागमनेभवति॥ १९॥

टी० सुखस्थानवर्गे साहस्यारिककीरही शरीरपुष्टकृत्र प्राप्ती धनधान पुत्र
आयुष्यबहुत पुत्रादिकका सौख्य द्रव्यप्राप्ती यहफल शुक्रके दशामे जानना—
अश्वयोगिनी दशा॥ ॥ मंगलापिंगला धान्या भ्रायरीभद्रि
कापिच॥ उल्कासिद्धसंकटाचयोगिन्यष्टौ दशात्पुनाः २०

ज्योतिषसार ८७

टी० मंगला १ पिंगला २ धान्या ३ भ्रामरी ४ भद्रिका ५ उल्का ६ सिद्धा ७ संकटा ८ यह आठ योगिनी का दशा प्रकार आगे स्पष्ट है ऐसा जानना -

योगिनी स्वामी ॥ ॥ अथा सामधीशा क्रमान्मंगलायाः
शशी तीक्ष्ण भानुर्गुरु भूमिसूनुः ॥ बुधः सूर्यसूनुर्भृगुः
सिंहिकायाः स्मृतः संकटयास्तथांते च केतुः ॥ २१ ॥

टी० मंगला दिक दशा के स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनी शुक्र राहु के
तु संकटा दशा का स्वामी यह मंगला दिक दशा के क्रम से स्वामी जानना -

योगिनी दशा क्रम ॥ ॥ स्वर्क्षः पिनाकिनयनैः संयोज्य व
सुधिर्भजेत् ॥ योगिन्यष्टौ समाख्याता शून्य पातेन संकटा २२

टी० दशाख्यावने का प्रकार जन्य नक्षत्र मे ३ पुनः करको ८ से भाग लेना जै
साह न्य नक्षत्र पुष्य ८ इत्येतीन जोड़ दिया तो ११ भया ८ से भाग लेना तो
शेष ३ बचने से धान्या दशा आती है यह प्रकार से दशा क्रम जानना -

वर्ष संख्या ॥ ॥ एक द्वि त्रीणि वेदाश्च पंचषड्सप्तमानि
च ॥ अष्टवर्षाणि हि भवेन्मंगलादावतुक्रमात् ॥ २३ ॥

टी० आठ योगिनी की वर्ष संख्या मंगला व १ पिंगला व २ धान्या व ३ भ्रामरी
व ४ भद्रिका व ५ उल्का व ६ सिद्धा व ७ संकटा व ८ इस प्रकार से वर्ष संख्या जानना -

अंतर्दशा ॥ अथांतर्दशायाः प्रकारं प्रवक्ष्यामि दशावार्षिकं स्वस्ववर्षेण गु
ण्यं ॥ नतः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा सदा खेट विद्विर्विधेया फलां ये २४
टी० प्राप्त दशा से जिस दशा का अंतर करना होय उसके वर्ष संख्या से प्राप्त दशा को गुण
देना उत्प्रेक्षका भाग लेने से अंतर्दशा होती है आगे चक्रमे स्पष्ट मालूम होगा

| मंगला | पिंगला | धान्या | भ्रामरी | भद्रिका | उल्का | सिद्धा | संकटा |
|-----------|-----------|----------|----------|----------|----------|-----------|------------|
| व-१ चंद्र | व-२ सूर्य | व-३ गुरु | व-४ मंगल | व-५ बुध | व-६ शनि | व-७ शुक्र | व-८ रा. के |
| दिन ३६० | दिन ७२० | दिन १०८० | दिन १४४० | दिन १८०० | दिन २१६० | दिन २५२० | दिन २८८० |
| मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भद्र. | उ. | सि. | सं. |
| १० | २० | ३० | ४० | ५० | ६० | ७० | ८० |
| पिंग | २० | धा | ६० | भ्रा | १२० | मं | २०० |
| धान्या | ३० | आ | ८० | भ | १४० | उ | २४० |
| भ्राम | ४० | आ | १०० | उ | १६० | सि | २६० |
| भद्रि | ५० | मं | १२० | सि | १८० | मं | २८० |
| उल्का | ६० | उ | १४० | सं | २०० | पिं | ३०० |
| सिद्धा | ७० | सं | १६० | मं | २२० | धा | ३२० |
| संक | ८० | मं | १८० | पिं | २४० | आ | ३४० |
| वैज | १६० | ० | ३२० | ० | ४८० | ० | ६४० |

दशापरत्वेफलमाह

वैरिणां तु विषदा विनाशका वाहनादि वसु रत्नलाभः ॥

कामिनी सुतगृहादित्याभदा मंगलासफलमंगलोदया २५

टी० शत्रूके उपद्रवकानाशघोडाहोयो सुवर्णरत्नदत्तादिको कालाभस्त्रीपुत्रगृहादिक कालाभ और मंगलकार्यका उदयमहमंगलादशामे फल जानना-

पिंगलादशाफल

दुःस्वरो दुर्लभरोगवर्धिता व्ययता च कलहः स्वजनैश्च ॥

अंशभागकथिता फलदा सौ पिंगला च विदुषां सुखदाहो २६

टी० दुःस्वशोक कुलमे रोगवृद्धी चित्रमेवा कुलना बंधुजनमेवैर पि मला प्रथमसखदेती है नंतरहि स्वाफल जानना-

धान्यादशाफल ॥ ॥ धनं धान्यवृद्धिं धरानाथमा

न्यं सदा युद्धभूमौ जयं धैर्यं वनं ॥ कलत्रांगजानां सुखं

चित्रवस्त्रैर्युतं धान्यका धान्यवृद्धिं करोति ॥ २७ ॥

टी० धनवृद्धि धान्यवृद्धि राज पूज्य सर्वकाल युद्ध भूमी मे जय धैर्य युक्त स्त्रीपुत्रका सुख चित्र वस्त्र युक्त धान्यादशामे धान्यवृद्धि जानना-

भ्रामरीदशाफल ॥ ॥ विदेशे भ्रमं हानिमुद्देशताश्च

कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जिततां ॥ रिणं व्याधिं वृद्धिं जे

नानां प्रकोपं दशाभ्रामरी भ्रामयेत्सर्वदेशं ॥ २८ ॥

टी० विदेशमे भ्रमण युद्धमे हानि स्त्रीको पीडा सुखहीन रिण युक्तरोगवृद्धि जनका प्रकोप सर्वदेशमे भ्रमण यह भ्रामरीदशामे फल जानना-

भद्रिकादशाफल ॥ ॥ धनानंदवृद्धिं गुणानां प्रकाशं

समीचीनवस्त्रागमं राजमान्यं ॥ अहंकारदिव्यांगना

भोगसौख्यं सत्स भद्रिका भद्रकार्यं करोति ॥ २९ ॥ ॥

टी० धनकी वृद्धि आनंदवृद्धि गुणप्रकाश उत्तम वस्त्र प्राप्ती राजमान्य भूषण कीमती स्त्री भोगादिक का सौख्य कल्याण यह भद्रिकादशामे फल जानना-

उल्कादशाफल ॥ ॥ भ्रमं व्याधिक हंजराणां प्रको

पंधनादेशदारादिकानां वियोगः स्वगोत्रैर्विवादं सु

हृदं धुनेरदशा चोत्तिक का नर्य करी सदैव ॥ ३० ॥ ॥

टी० भ्रमण रोग दुःख ज्वर का कोप धन वियोग देश वियोग स्त्री वियोग गोत्र मेकलह मित्र बंधु इन से वैर और नाना प्रकार के अनर्थ यह उल्का दशामे फल

सिद्धादशा फल ॥ ॥ राज्याभिमानं स्वजनादि सौख्यं
धान्यादिलाभं गुण कीर्ति सिद्धिं ॥ राज्यादिलाभं सुन
वृद्धि सौख्यं सिद्धं च सिद्धा प्रकरोति पुंसां ॥ ३१ ॥ ॥ ॥

टी० राज्य प्राप्ति अभिमान अपाने गोत्र मे सरव देना धान्य लाभ गुण सिद्धि कीर्ति सिद्धि राज्य चिन्ह कालाभ पुत्र वृद्धि सरव और सर्व कार्य की सिद्धि यह सिद्धादशामे फल जानना ॥ —

संकटादशा फल ॥ ॥ जनानां विवाहं ज्वराणां प्र
कोपं कलत्रादिकष्टं पशूनां हिनाशं ॥ गृहे स्वल्प वासं
प्रवासाभिलाषं दशा संकटा संकटं राजपक्षात् ॥ ३२ ॥

टी० जन से कलह ज्वर का कोप स्त्रियादिक का कष्ट पशुनाश घर मे थोडा वास प्रवास मे रुचि और राज पक्ष से संकट यह संकटादशामे फल जानना —

सूर्यादीनां दिन दशा ॥ ॥ रवि दिन नख संख्या चंद्रमा
व्योम बाणैः क्षितितनय गजाश्वी चंद्रजः षट्शराश्च ॥ श
निरस गुण संख्या वाग्पतिर्नाग बाणैर्नयन युग कराहुः सप्त
तिः शुक्र संख्या ॥ ३३ ॥ जन्म नाविंशतिः सूर्ये तृतीये दश चंद्र
माः ॥ चतुर्थे भौम चाष्टौ च षष्ठे बुध चतुर्थके ॥ ३४ ॥ सप्तमे द
श सौमिः स्यान् नवमे चाष्टमं गुरोः ॥ दशमे राहु विंशत्या तदूर्ध्वं
तुभृगोर्दशा ॥ ३५ ॥ फल ॥ पंचाभोगो नुतापश्च सौख्यं पी
डा धनं क्रमात् ॥ नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्म सूर्य दशा फल ३६

टी० एक वर्ष मे सूर्यो दिन बग्रह का दशा प्रकार सूर्य जन्म स्थान से दशा राशी भोग करता है उसमे सब ग्रह की दशा भोग होती है निस्का प्रकार —

२० दिन की सूर्य दशा जन्म स्थान से जानना फल रस्ता चलावे —

५० दिन चन्द्र की दशा तृतीय स्थान के १० दिन सूर्य भोग करता है फल

नाना प्रकार के उत्तम भोग — २० दिन मंगल की दशा चतुर्थ स्थान

नके ८ दिन सूर्य भोग करता है फल रोग और संताप — ५६ दिन बुध

की दशा षष्ठ स्थान के ४ दिन सूर्य भोग करता है फल सौख्य कारक —

३६ दिन शनी की दशा द्वात्रिंशत्स्थान के १० दिन सूर्य भोग करता है फल पी
डाकारक जानना - १० दिन गुरु की दशा द्वात्रिंशत्स्थान के ८ दिन सूर्य भो
ग करता है फल धनप्राप्ति - ४१ दिन राहु की दशा द्वात्रिंशत्स्थान के २० दिन
सूर्य भोग करता है फल जाना प्रकार का शोक - ७० दिन बुध की दशा
द्वादशस्थान पूर्ण सूर्य भोग करता है फल सर्व सौख्यप्राप्ति जानना -
नित्य दशाक्रम ॥ ॥ तिथि वा रचनसूत्रं नामाक्षरसमन्वितं ॥

नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ३७ ॥ रविचंद्रौ भौमरा
हु पुरुषं दशके सितौ ॥ क्रमेणैतादृशाश्चेष्टाः फलपूर्वोक्तमैव हि ३८
टी० तिथी संख्या वारकी संख्या नक्षत्रकी संख्या ऐसे सबकी भं क सं
ख्या एकत्र करना उल्लेख अफनेनामके अक्षरकी संख्या मिलावना ९ से भाग
लेना शेष १ रहे तो सूर्य दशा शेष २ रहे तो चंद्र दशा शेष ३ रहे तो मंगल की
दशा शेष ४ रहे तो राहु की दशा शेष ५ रहे तो गुरु की दशा शेष ६ रहे तो श
नी की दशा शेष ७ रहे तो बुध की दशा शेष ८ रहे तो केतु की दशा शेष ९ रहे
तो शुक्र की दशा ऐसे नित्य दशा का क्रम फल पूर्व दशा के ऐसे जानना -

अन्यमत ॥ ॥ जन्म तारा चतुर्गुण्यं तिथि वार समन्वितं ॥

नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ३९ ॥ रविजाशो
क संतापो शशांके क्षेमला भक्तौ ॥ भूमिपुत्रे तु मृत्युः स्था
दुधे प्रजाविवर्द्धनं ॥ ४० ॥ गुरौ वितं भृगौ सौख्यं शनौ पीडा
न संशयः ॥ राहुणा घातपातौ च केतौ मृत्युर्दशाफलं ॥ ४१ ॥

टी० जन्म नक्षत्र को चतुर्गुणित करना उल्लेख तिथी संख्या वार संख्या जो होय
सो सब एकत्र करना ९ से भाग लेना शेष १ रहे तो सूर्य की दशा फल शोक
संताप कारक शेष २ रहे तो चंद्र की दशा फल कुशललाभ शेष ३ रहे तो मं
गल की दशा फल मृत्यु कारक शेष ४ रहे तो बुध की दशा फल बुद्धि की द
ि शेष ५ रहे तो गुरु की दशा फल धनप्राप्ति शेष ६ रहे तो शुक्र की दशा फल
सुख कारक शेष ७ रहे तो शनी की दशा फल पीडा कारक शेष ८ रहे तो राहु
की दशा फल घात और पात शेष ९ रहे तो केतु की दशा फल मृत्यु कारक
इस प्रकार से नित्य दशा फल जानना - इति दशा प्रकरणम् ॥ ४२ ॥ ॥

अथ गोचर प्रकरणम् ॥

मांसं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासंतु मंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चै
व सपादद्वेदिने शशी ॥ १॥ राहुरष्टादशान्यासान् त्रिंशान्यासा
नृशनैश्चरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तुराशिभोगाः प्रकीर्तिताः ॥ २
॥ फल ॥ सूर्यः पंचदिनं शशी त्रिघटिका भौमोष्टवैशाखसं सप्ता
हं बुधशना बुधत्रयदिनं मासद्वयं वै गुरोः ॥ षण्मासं विजस्त
शैव सततं स्वर्णानुमासद्वये केनोऽथैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं
ग्रहाणां फलं ॥ ४॥ राशिप्रवेशे सूर्यो रौमधौ शुक्रबृहस्पती
॥ राहुश्चंद्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदा शुभं ॥ ५॥ ६॥ ॥

टी० सूर्यादिकनवग्रह बारराशी गेचरमे भोगकरते हैं निस्काफल आदि
मध्य अंतमे होता है सो अनुक्रम से दिन संख्या सहित कहते हैं —
सूर्य १ एक राशी १ महिने मे भोग करता है सो आदि १ दिन फल देता है
चंद्र १ राशी २ दिन मे भोग करता है सो अंत की तीन घड़ी फल देता है
मंगल १ राशी १॥ महिने भोग करता है सो आदि ८ दिन फल देता है
बुध १ राशी १ महिने भोग करता है सो अंत मे तीन दिन फल देता है
गुरु १ राशी १२ महिने भोग करता है सो मध्य भाग मे २ महिना फल देता है
शुक्र १ राशी १ महिने भोग करता है सो मध्य भाग मे ७ दिन फल देता है
शनि १ राशी ३० महिने भोग करता है सो अंत के ६ महिने मे फल देता है
राहु १ राशी १० महिने भोग करता है सो अंत के दो महिने मे फल देता है
केतु का फल राहु के ऐसे सा जानना — स्थान पर त्ते फल ॥ ॥

सूर्यस्थान विनाशं भयं श्रियं मानहानि मयदैव्यं ॥ विजयं मा
गं पीडां सुकृतं हंति सिद्धिमायमथ हानिं ॥ ६॥ चंद्रोच्चं च धनं
सौख्यं रोगं कार्यं क्षितिं श्रियं ॥ श्रियं घृत्पुं नृपभयं सुखमाय
व्ययं कमात् ॥ ७॥ भौमो रिभीति धननाशं मयै भयं तथा र्यं क्ष
तिमर्थलाभं ॥ धनात्ययं शत्रुभयं च पीडां शोकं धनहानि म
नुक्रमेण ॥ ८॥ बुधस्तु बंधनमन्य भीति धनं रुजं स्थानमथो
च पीडां ॥ अर्थरुजं सौख्यमथात्सौख्यं अर्थक्षतिं ज्ञानं गृहा
त्करोति ॥ ९॥ गुरुर्भयं धनं दुःखं धननाशं सुखं शुचिः ॥ मानं रोगं
सुखं दैन्यं लाभं पीडां च ज्ञानमात् ॥ १०॥ कविशत्रुनाशं धनं सौ

स्वयंमयसुतात्रिरिपोः साध्यसंशोकमयै ॥ ११० ॥ रात्रा यो वि
 पत्तिं धत्तातिं यथाश्रितनोत्वात्मनोजन्मराशेः ॥ १११ ॥ शनिः स
 र्वनाशान्थावित्तनाशं धनं शत्रुवृद्धिं सुतादेः प्रवृद्धिं ॥ श्रियं
 होषसंधिरिपुंद्रव्यनाशान्थादौर्ध्वनस्य धनं वज्रनयै ॥ ११२ ॥
 गृहहानिं तथा नैस्वधनं वैरं शुचं श्रियं ॥ कलिं च सुचदुरितं
 वैरं सौख्यं शुचं क्रमात् ॥ ११३ ॥ केतुः क्रमाद्भुजं वैरं सुखं भी
 तिं शुचं धनं ॥ गतिं गदं दुःखं च शोचं कीर्तिं च शत्रुताम् ॥ ११४ ॥
 दी ॥ इस्का अर्थकोष्टकमेस्पष्टदेखना - गोचरचक्रम् ॥

| शरी | रवि | चंद्र | मंगल | बुध | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|--------|---------|----------|----------|--------|--------|---------|--------|---------|
| नश | नाश | अनप्रा | शत्रुभ | बधन | भय | शत्रुभा | सर्वना | रोग |
| धन | भय | धनप्रा | धनप्रा | धनप्रा | धनप्रा | धनप्रा | धनप्रा | वैर |
| सहज | लक्ष्मी | सुख | धनप्रा | प्रीति | हैय | सौख्य | धनप्रा | सुख |
| सुहृन् | मानहा | रोग | भय | धनप्रा | धनप्रा | धनप्रा | शत्रुव | वैर |
| सुत | दीनता | कार्यक्ष | अर्थप्रा | रोग | सुख | धनप्रा | धनप्रा | शुद्धि |
| शत्रु | विजय | लक्ष्मी | लाभ | स्थानक | शुद्धि | शत्रुभ | धनप्रा | लक्ष्मी |
| जाया | मार्ग | लक्ष्मी | खर्च | पीडा | नाश | भय | होय | कलह |
| मृत्यु | पीडा | मृत्यु | शत्रुभ | अनप्रा | रोग | शोक | शत्रु | पनला |
| धर्म | उष्ण | राजभ | पीडा | रोग | सुख | धनप्रा | धनप्रा | पापक |
| कर्म | सिद्धि | सुख | शोक | सौख्य | दीनता | महाव | सुखदा | वैर |
| आय | लाभ | लाभ | धनप्रा | सौख्य | लाभ | विपत्ती | धनप्रा | सौख्य |
| व्यय | हानि | खर्च | हानि | नाश | पीडा | धनप्रा | धनप्रा | शुद्धि |

वैधचक्रमाह ॥ ॥ सूर्यो रसांस्त्वखगुणेधि नंदेशवास
योर्भौमशनीतमश्च ॥ रसांकयोर्माभशरेणुणां त्वेचंद्रो न
सब्दौ गुणनंदयोश्च ॥ १५ ॥ लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांस्तेन ग
ह्येजोद्दिशरेब्धिरामे ॥ रसांकयोर्नागविधौ रवनामेलाभ
अथेदेवगुरुः शराब्धौ ॥ १६ ॥ द्वांस्तेन वांशे द्विगुणे शिवाहौ
शुक्रः कुनागे द्वि न गेधिरूपे ॥ वेदांबरे पंचनिभौ गजेशौ न
देशयोर्भीमुरसे शिवाग्रौ ॥ १७ ॥ क्रमाच्छुभो विष्णु इति प्र
हत्यासितुः सुतस्यात्र न वैधमाहः ॥ दुष्टोपि स्वेतो विप
रितवैधाच्छुभो द्विकोगे शुभदः सितेजः ॥ १८ ॥ ७७ ॥

स्वजन्मराशेरिहवेधमाहुरन्येग्रहाधिष्ठितराशितः सः

॥ हिमाद्रि विंध्यांतर एव वेधोन सर्वदेशेष्वितिकाशयकोक्तिः १९

टी० जन्मराशीसे और ग्रह के गतीसे गोचरका शुभाशुभफललिखे ध्रुवांकसे मालूम करना जैसे सूर्य जन्मस्थानसे षष्ठस्थानमें शुभजो ह्रादशस्थानमें शुभग्रह होय तो शुभ अशुभ होय तो अशुभ ऐसा सब ग्रहका वेध जानना परंतु पितापुत्रसूर्यशनिचंद्रबुधइनका परस्परवेध नहीं होता जन्मस्थानसे ह्रादशस्थानमें सूर्य होय और शनी षष्ठस्थानमें होय अन्यग्रह होय तो विपरीतवेध शुभजानना हिमाद्रि और विंध्याइस्के अंतरमें ग्रहवेध अन्यदेशमें नहीं ऐसा जानना कश्यप कहने हैं -

॥ वेधचक्रम् ॥

| रवैः | | | | मं | | | | शुक्रस्य | | | | बुधस्य | | | |
|--------|----|----|----|--------|----|----|----|----------|----|----|---|----------|----|----|----|
| ६ | १० | ३ | ११ | ६ | ११ | ३ | १० | ३ | ११ | १ | ६ | ७ | २ | ४ | ६ |
| १३ | ४ | ९ | ५ | ९ | ५ | १३ | ४ | ९ | ५ | १३ | ४ | २ | ५ | ३ | ९ |
| शुक्रः | | | | शुक्रः | | | | शुक्रस्य | | | | शुक्रस्य | | | |
| ८ | १० | ११ | ५ | ३ | ९ | ७ | ११ | १ | ३ | ४ | ५ | ८ | ९ | १३ | ११ |
| १ | ८ | १३ | ४ | १३ | १० | ३ | ८ | ७ | १ | १० | ९ | ११ | ११ | ६ | ३ |

तारामाह ॥ ॥ जन्मराश्यसंपत्तिपदक्षेमप्रत्यरि साध

काः ॥ वधमैत्रातिमैत्राः स्युस्तारानामसद्वृत्तफलाः ॥ २० ॥

टी० जन्मतारा १ संपत् २ विपद ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मैत्र ८ अतिमैत्र ९ यह तारानव इनका नाम के समान शुभाशुभफल जानना -

अन्यमत ॥ ॥ जन्मर्क्षगणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधि

क्रमात् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं शेषं ताराविनिर्दिशेत् ॥ २१ ॥

टी० जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनना ९ से भाग लेना शेष बचे सो तारा जानना

अन्यमत ॥ ॥ जन्मताराहि तीयाचतुर्याषष्ठ्यष्टमी

तथा ॥ नवमीषट् शुभाताराः शेषास्तिस्त्रोऽशुभावहाः २२

टी० जन्मतारा १ संपत् २ क्षेम ३ साधक ४ मैत्र ८ अतिमैत्र ९ यह ६ तारा शुभजानना और विपद ३ प्रत्यरि ५ वध ७ यह ३ तारा अशुभजा ८ इस्कोई शुभकर्म कराना नहीं -

अन्यमते ॥ ॥ जन्मत्रिपंचसप्तारख्यातारानिष्टफलाः

स्मृताः ॥ शकं गुडं च लवणं सतिलं कां च नं क्रमात् ॥ २३ ॥

टी० प्रथमतारा १ तृतीय ३ पंचम ५ सप्तम ७ यह ४ तारा अशुभफल कर

तीहै इसवास्तेनारोताराके दानप्रथमतारामेशाक कहिये तरकारी दानकरना तृतीयतारामेशुद्धदानकरना पंचमतारामेलवण कहिये नोन दानकरना सप्तमतारामे तिल और सुवर्ण दानकरना अशुभमे दानकरनेसे शुभहीताहै-

अन्यमत॥ ॥ कसदग्धतिथीरिक्ताचंद्रश्चाष्टमग
स्तथा॥ तत्सर्वेनाशयेत्ताराषट्चतुर्नवमीतथा॥ २४॥

टी० दग्धनसूत्र रिक्तातिथी अष्टमचंद्रमा ऐसेदुष्टयोगकानाश षष्ठ
तारा चतुर्थतारा नवमतारा करतीहै—

चन्द्रबल॥ ॥ द्विपंचनवमेषु केषु चन्द्रो हि उच्य
ते॥ अष्टमे द्वादशे रुणौ चतुर्थे षष्ठे उच्यते॥ २५॥

टी० शुक्रपक्षमे द्वितीय २ पंचम ५ नवम ९ चन्द्रमा श्रेष्ठ होताहै रु
णपक्षमे अष्टम = द्वादश १२ चतुर्थ ४ श्रेष्ठ होताहै

अन्यमत॥ ॥ शुक्रपक्षे बली चंद्रो रुणो तारा बली
यसी॥ यदि स्यात्स बले चंद्रो तथापि केशदायिनी २६

टी० शुक्रपक्षमे चंद्रमा बली होताहै रुणपक्षमे तारा बली होतीहै प
रंतु चंद्रमा बली होय तथापि तारा केशदायक होतीहै-

॥ अन्यमत॥ ॥ ये रवे चरा गोचर तोष्टवर्गो दशाक्रमा द्वाप्य
शुभा भवन्ति॥ दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्ते न धुना दानविधिं प्रव

टी० जोग्रह गोचरमे अथवा अष्टवर्गमे अथवा दशांमे जा (ह्य २०)
अशुभ होय तो उसग्रह के दानद्रव्यसे दानविधी कहतेहै—

वारोके दान॥ ॥ भानुस्तांबूल दानादपहरति नृणां वैरुतं वा
सरोत्थं सोमः श्रीखंड दानादवनिवरसुतो भोजनात्पुण्यदा
नात्॥ सोमः शास्त्रस्पमंत्राद्गुरुहरिभजनाद्दार्गवः शुभ्रव
स्नानैलस्नानात्प्रभानेदिनकरतनयौ ब्रह्मनस्यापरे च॥ २७॥

टी० सूर्यदिक्वारके दुष्टफलनाश होनेके वास्ते दानसूर्यका तांबूल
दान चंद्रमाका श्रीखंड चंदनदान मंगलका ब्राह्मण भोजन पुण्य हा
न बुधका शास्त्रके मंत्रका दान गुरुका हरिभक्ति शुक्रका सफेद वस्त्र
शनिश्वरका तैलस्नान और राहूके तूके वास्ते ब्राह्मण को नमस्कार दान
यह नवग्रह दारमे यथाक्रम से पीडनाश होनेके वास्ते करना —

ग्रहोंका दान॥ सूर्य॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुकौसुम
वासोगुडहेमनाम्रं॥ आरक्तकंचंदनमंबुजंचवदंतिदानं
हिविशोचनाय॥ ३०॥ चंद्र॥ घृतकलशंसितवस्त्रंदधिशं
खमौक्तिकंसुवर्णंच॥ रजतंदद्याच्चंद्रारिष्टमतच्छातये
त्वरितं॥ ३१॥ मंगल॥ प्रवालगोधूममस्तूरिकाश्ववृषं स
ताम्रं करवीरपुष्पं॥ आरक्तवस्त्रं गुडहेमनाम्रंदुष्टाय भौ
मायचरक्तचंदनं॥ ३२॥ बुध॥ नीलवस्त्रं मुद्गहैमंबुधाय
रत्नपाचीं दासिकां हेमसर्पिः॥ कांस्यंदंतकुंजरस्याय मे
षोरौघं सस्यपुष्पनात्यादिकंच॥ ३३॥ गुरु॥ अश्वः सुव
र्णं मधुपीतवस्त्रं सपीतधान्यं लवणं सप्रुष्पं॥ सशर्करं त
द्रजनीप्रयुक्तंदुष्टाय शांत्यै गुरवे प्रणीतं॥ ३४॥ शुक्र॥ चि
त्रवस्त्रमपि दानवार्चिते दुष्टे मुनिवरैः प्रणोदितं॥ तंडु
लं घृतसुवर्णरौघं कंबुजं परिमलंधवल्लगौ॥ ३५॥ शं
नि॥ माषाश्च तैलं विमलंद्रनीलं निलाः कुलित्यामहिषी
चलोहं॥ रुष्णाचधेनुः प्रवदंति नूनंदुष्टाय दानं रविने द
नाय॥ ३६॥ राहु॥ गोमेदूरत्नचतुरंगमश्वसुनीलतैला
मलकंबलंच॥ निलाश्च तैलं खलुलोहमिश्रं स्वर्भानवे दा
नमिदं वदंति॥ ३७॥ केतु॥ वैडूर्यरत्नं सतिलंच तैलं मुकंब
लाश्चापि मद्गोमृगस्य॥ शस्त्रंच केतोः परितोषहेतो
च्छ्रागस्य दानं कथितं मुनीन्द्रैः॥ ३८॥

टी० इस्का अर्थचक्रमेस्पष्ट है सो जानना —

ग्रहोंकी जपसंख्या॥ ॥ रवेः सप्तसहस्राणि चंद्रस्यै
कादशैव तु॥ भौमे दशसहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रक
॥ ३९॥ एकोनविंशतिर्जीवेशु क्रैवैकादशैव तु॥ त्रयो
विंशतिमंदे च राहोरष्टादशैव तु॥ ४०॥ केतोः सप्तस
हस्राणि जपसंख्या प्रकीर्तिता॥ ४१॥ ॥ ॥ ॥

टी० सूर्यादिकग्रहकी जपसंख्या चक्रमेस्पष्ट देखना —

उद्योतिवसार०६

| नाम | दि | चंद्र | शंगक | बुध | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|-----|--------|-------|-------|-------|--------|----------|----------|----------|
| शनि | मणि | रुतक | पूंगा | नीलाव | छोडा | बिनक | उडदी | मोवेद |
| ० | मोह | सफेदव | मोह | मूग | सोना | बाबर | नेरु | रत्न |
| ० | खेसव | रहि | मसुरी | सोना | सकत | पुत | नीलम | छोडा |
| ० | जालव | शरव | बैलखल | रत्नम | नीलाव | सोना | तिल | नीलम |
| ० | गुड | मोती | कनैल | पन्ना | नीलाधा | चांदी | कुलधा | नेरु |
| ० | सोना | सोना | लालव | दाशी | मोन | हीरा | मैस | आवर |
| ० | तांबा | चांदी | गुड | घन | फूल | सुगंध | लोह | कबर |
| ० | रत्नबु | ० | हेम | कांसा | चीनी | सुगंधेनु | रुग्णाधे | तिल |
| ० | कमल | ० | तांबा | सथीरव | हरिद्र | ० | ० | नेरुमेपि |
| जप | १००० | ११००० | १०००० | ८००० | १०००० | ११००० | २२००० | १०००० |

ग्रहपीडानिवारणार्थ ॥ ॥ देवब्राह्मणवेदनादुरुवचः संपादनास्त्यहंसा धूनामपि भाषणाच्छ्रुतिरवः श्रेयः कथाकारणात् ॥ होमादध्वरदर्शनात्सुनिमनो भावाज्जपादानतो नो कुर्वन्ति कदाचिदेवपुरुषस्येवंग्रहाः पीडनम् ॥ ४२ ॥

टी० देवताको और ब्राह्मणको बंदन करना शुरू की आज्ञा संपादन करना साधुवोंके मुखसे श्रुति स्मृति और उत्तम कथाश्रवण होय करनेसे यत्न के दर्शनसे शुद्ध मनसे भावसे जपसे हानसे यह प्रकारसे करना तो ग्रहपीडा कारक नही होते ॥ इति गोचरप्रकरणम् ॥ ७ ॥

॥ अथ जातकर्म ॥

जाते पुत्रे पिता कुर्यान्नां दीश्राहं विधानतः ॥

जातकर्मततः कुर्यादन्ये रालंभनात्स रा ॥ १ ॥

टी० पुत्र उत्पन्न होते ही पिताने जातकर्म करना दूसरेने बालकको स्पर्श करनेके पहिले नां दीश्राह पूर्वक पथाविधीसे कर्म करना —

अथ कहड चक्र मिदं ॥ चूचोलाधिनी प्रोक्ता लील लेलो भरणयथ ॥ आई ऊ ए रु तिका स्या दोवावी वृत्तुरे हिणी ॥ २ ॥ वेवोका की मृगशिरः कूघडु गच्छत याद्रेका ॥ केकोहाही पुनर्भं स्याद्दुहहे होडाच पुप्यंभं ॥ ३ ॥ डी डु डेडोतु आरुवावामी मूमेमपास्पता ॥ मोरोटी दू पूव

फल्युदेहोपाप्युत्तरं तथा ॥४॥ प्रोक्तः पूषा ण हो हस्तः पे
 पोरारी तु चित्रका ॥ रूरे रोना तथा स्वानी नीतूने तो विशा
 रिक्का ॥५॥ नानी नूने नुराधर्षे नो पायी यूतु इंद्रभं ॥ येयो भा
 भी मूलभे स्यात्पूर्वा षाढा बुधा फडा ॥६॥ भे भोजा ज्युत्तरा
 षाढा जूजे जो स्वाभिजि द्ववेत् ॥ रवी खू खे खो अवण भंगा जी
 गूगे धनिष्ठा ॥७॥ गोसा सीसू शतभिषक से सोदादी तु पू
 र्वे भाक् ॥३॥ भादूया झत्र जे यो दे दो चाची तुरेवती ॥८॥
 अथावक हड चैक स्पकृत्तिका दित्वे पि अश्विन्या दीनां
 मेषाद्यारंभकत्वेन चक्रस्य मेषादिराशुपयोगित्वेन तत्
 क्रमेण बालानां मुखबोधा यशीघ्रोपस्थितये चाश्विन्यादि
 नक्षत्रपादनामानि लिख्यंते ॥ तत्र अइउ ए ओ इति पंचस्व
 रयुक्तनामांश्च राणां नियमः ॥ तत्रापि अइउ एतेषां ह्रस्व
 त्वदीर्घत्वा नियमः ॥ ए ओ एतयोर्द्वस्वत्वाभावेनार्थो दीर्घ
 त्वमेव ॥ एवं नामांश्च राणां समविषमसंख्ययोरनियमः
 ॥ व्यावहारिके एव संख्यायाः समत्वविषमत्वयोर्निय
 मात् ॥ अन्यथा रोहिणः रैवतः आय भरणः एवं मासनाम
 स्वपि उपेन्द्रो यज्ञपुरुषः इत्यादिशिष्टप्रयोगाणां दुष्टत्वं स्यात्
 टी० नामांश्च रके वास्तेन नक्षत्रके चारचरणमे चार अक्षरचक्रमे देखना

| | | | | | | | |
|-----------------------------|----------|--------------|---------|--------------|------------|--------------|--------------|
| बुध बोला लोला लेलो | अश्विनी | हरे होडा | पुष्य | रूरे रोना | स्वानी | जूजे जोला | अभिजित् |
| आई ऊर | भरणी | डीड डोडो | अश्लेषा | नीतू नेतो | विशाखा | खीखू खेखो | अवण |
| बोबा वीदू | कृत्तिका | मासी मूमे | मघा | नानी नूने | अनुराधा | गानी गूगे | धनिष्ठा |
| वेवो काकी | रोहिणी | मोरा लीदू | पूर्वी | नीया कीयू | ज्येष्ठा | गोसा सीसू | शनतारका |
| बूच डूकु | मृगशिरा | हेमो पापी | उत्तरा | येयो भाभी | मूल | सेसो दादी | पूर्वाभाद्रप |
| केको हाही | आर्द्रा | पूष णाढा | हस्त | बूधा फडा | पूर्वाषाढा | दूथा झेन | उत्तराभा० |
| | पुनर्वसु | पेयो रासी | चित्रा | भेयो जाजी | उत्तराषा० | देदो चाची | रेवती |

ज्योतिषसार २८

॥ अथ नामानितब्राह्मणप्रतिनक्षत्रं पादानामाद्यक्षराणि
चूचैबोलाभिनैव

१ चूडामणिः

२ चैष्टेश्वरः

३ चोलेश्वरः

४ लज्जायुक्तः

लीललेलोभरण्यथ

५ लीलायुक्तः

६ ललाहारः

७ लेखभक्तः

८ लोकमान्यः

आईऊएकनिकास्यात्

९ आयुष्मान्

१० ईश्वरः

११ उत्तमः

१२ एकाकी

ओवावीवुनुरोहिणी

१३ ओषधः

१४ हामनः

१५ विद्याधरः

१६ वृन्तज्ञः

वृन्तस्य योता येश्वरास्तान् जानातीति । हं हाहु तैरमैशुनिकयो

दित्यनेन सिलाः अश्वमद्विषिका अत्रिभारहाजिकेत्यादयः ॥

वेवोकाकीमृगशिरः

१७ वेपथुः

१८ बोधः । कविदुष्टः कवितौम्यः

१९ कालज्ञः

२० कीलालदः । पयः कीलालम

कूपं दुःखाथ आईकः धृतं

२१ कुलश्रेष्ठः

२२ घनश्यामः

२३ इस्तिथीशः

इति नक्षत्रपतिपञ्चादित्यादौ इति नक्षत्रचतुर्थं तमित्यर्थः ॥ तेन च

१ चूडामणिः

२ चैष्टेश्वरी

३ चोलेश्वरी

४ लज्जायुक्ता

चैष्टाक्रिया

चोलेदेशविशेषः

५ लीलायुक्तः

६ ललाहारिणी

७ लेखभक्ता

८ लोकमान्या

ललारोगविशेषः

लेखाभदिति नंदना

इत्यमरः

९ आयुष्मती

१० ईश्वरी

११ उत्तमा

१२ एकाकिनी

१३ ओग्रा

१४ नामा

१५ विद्याधरी

१६ वृन्तज्ञा । वृन्तस्य यो व्याकरणे प्रसिद्धः

ईषदुप्रेत्यर्थः

वृन्तस्य योता येश्वरास्तान् जानातीति । हं हाहु तैरमैशुनिकयो

दित्यनेन सिलाः अश्वमद्विषिका अत्रिभारहाजिकेत्यादयः ॥

१७ वेपथ्वी

१८ बोध्या । विकल्पेनो ग्रा

१९ कालज्ञा

२० कीलालदा । कीलालमत्र मितिनि

घटो

२१ कुलश्रेष्ठा

२२ घनश्यामत्रिधा

२३ इस्तिथीश

ज्योतिषसार ९९

णपतयेदितिसिध्यति तथा च डे प दस्य चतुर्थी बोधकत्ववत् इ स प द
स्यापि षष्ठी बोधकत्वं तथैव द्वितीयादिसप्तम्यन्तशब्दानां विभक्तिवाच
कत्वं तिथिवाचकत्वं च प्रकृतं तु तिथिवाचकत्वेन ड स्तिथिः षष्ठी तिथिः
तस्यार्दशः ग्रहः तिथीशाब्दिकौ गौरी गणेशोऽर्हर्गुहोरविरिति ज्योतिषोक्तेः

२४ छायाकारी

२४ छायाकारिणी

केकोहाही पुनर्वसू

२५ केलिज्ञः

२५ केलिज्ञा

केलिः क्रीडा

२६ कोमलः

२६ कोमला

२७ हरिः

२७ हरिणी

२८ हिनतः

२८ हिनता

हूहे होडाथ पुष्यकः

२९ हूहूतः (हाहाहूहूश्चैव माया

२९ हूहूता

३० हेलवित् (गंधर्वास्त्रिदिवौक

३० हेलवित्

३१ होता (सामित्यमरः

३१ होत्री हवनकर्त्रीत्यर्थः

३२ डाकिनीशः

३२ डाकिनीज्ञा डाकिनीदेवताविशे

डीडूडेडोथ आश्लेषा

३३ डिभः

३३ डिंभा पोतः शकोऽर्धको डिंभ ३

३४ डुकुत्रधातुजज्ञः

३४ डुकुत्रधातुजज्ञा (त्यमरः

डुकुत्रकरण इति धातोर्जाता ये प्रयोगास्तान् जानातीति

३५ डेंद्रयुक् धनि युक्त इत्यर्थः डकारो धनिरुच्यते इत्येकाक्षरः

३५ डेंद्रयुक्

३६ डोच्चः

३६ डोच्चा धनिना श्रेष्ठा

मा मी मू मे म घातथा

३७ मानी

३७ मानिनी

३८ मीनाक्षीवित्

३८ मीनाक्षी

३९ मूर्खेतर मूल आदिवाचक

३९ मूर्खेतरा चतुरेत्यर्थ

४० मेदिनीशः

४० मेदिनी

मोटाटी दुनुपूर्वस्यात्

४१ मोमाभक्ता माचउमाचमोमेतयो ४१ मोमाभक्ता

४२ तार्थज्ञः

(भक्तः ४२ तार्थज्ञा

लोपरिच्यांकटे चैव धनौ च परिकीर्तित इत्येकाक्षरः

४३ टीकाकृत्

४३ टीकाकृत्

४४ दुदुधातुजज्ञः

४४ दुदुधातुजज्ञा

ज्योतिषसार १००

दुहुधातोर्जातायेप्रयोगास्मान् जानातीति
हेतोपाशीतुउत्तरा

४५ हेन्द्रयुक्

४६ तोच्चः

४७ पाता

४८ पीनः

४५ हेन्द्रयुक् हेन्द्रवत्

४६ तोच्चाः तोच्चवत्

४७ पालयिनी

४८ पीनाः पुष्टेत्यर्थः

रूपणढायहस्तः स्वान्

४९ पूज्यः

५० षष्ठीभक्तः

५१ णार्थवान्

५२ दार्ढ्यतः

४९ पूज्या

५० षष्ठीभक्ताः ॥ जन्मदिनात्पुष्टिने

५१ णार्थवती (रूपदेवताविशेषः)

५२ दार्ढ्यताः दौर्महशः समारब्धातद्

(लोकाक्षरः)

पेपोरारीतुचित्रका

५३ पेष्टाः पेष्टालः

५४ पोतः तः

५५ राज्ञा

५६ रीतिवित्

५३ पेष्टी

५४ पोतवती

५५ राज्ञी

५६ रीतिवित् रीतिः सन्मार्गः

रूपैरोमातयास्वाती

५७ रूपवान्

५८ रेवाभक्तः रेवतीरमणः

५९ रोगहरः रोहिणीशः

६० तारकः

५७ रूपवती

५८ रेवाः रेवानदी रेवती

५९ रोगहरा

६० तारका नक्षत्रता

नीतूतेतोविशारवका

६१ तीर्थभक्तः

६२ तुलाशः

६३ नैजस्करः नैजस्वी

६४ तोयधरः

६१ तीर्थभक्ता

६२ तुलाशः तुला तोरुनं तांजानाती

६३ नैजस्करा

६४ तोयधरी वाप्यादिः

(ति)

नानीनूनेभनूराधा

६५ नागः नरः नायकः

६६ नीतिज्ञः

६७ नूतनः

६८ नेमवान्

६५ नारी

६६ नीतिज्ञा

६७ नूतला

६८ नेमवती अन्नवतीत्यर्थः निघंटो

नेमराब्धेऽनपरीयः

ज्येष्ठानोमायियुः स्मृता

- | | |
|---|---------------------------------------|
| ६९ नोनवीनः | ६९ नोनवीना. मेनिवेधेनवीनेना |
| ७० पानयुक् | ७० पानयुक् (स्तिप्राचीना |
| ७१ पिपासुः | ७१ पिपासुः पानुमिच्छुरित्यर्थः |
| ७२ युद्धता | ७२ युद्धता |
| येकोभाभीतुमूलंस्यात् | |
| ७३ येशः | ७३ येशः। यानां यानानां यातृणां वा ई |
| ७४ योद्धा. योगी | ७४ योद्धा. योगिनी. शः। याने यातृ |
| ७५ भाग्यवान्. भगीरथः. भक्तः | ७५ भाग्यवती { पस्त्यागेदस्ये |
| ७६ भीमः | ७६ भीरुः. भीमावा { काक्षरः |
| भूधाफाडाचपूर्वस्यात् | |
| ७७ भूपः | ७७ भूपप्रिया |
| ७८ धरणीशः | ७८ धरणिः |
| ७९ फाल्गुनः | ७९ फाल्गुनप्रिया. सुभद्रेत्यर्थः. अ |
| ८० ढाकाप्रियः | ८० ढाकाप्रिया { जुनः फाल्गुनोति |
| ढाकावाद्यविशेषः। स्याद्यशः पटहोढकैत्यमरः णुरिति | |
| भेभोजाज्युनराषाढा | |
| ८१ भेशः | ८१ भेश प्रिया. भानां नक्षत्राणामीशः न |
| ८२ भोक्ता | ८२ भोक्ती. { सत्र मृसं भं. नक्षत्रेशः |
| ८३ जनकः | ८३ जननी. { सपाकरइत्यमरः |
| ८४ जीवः। रुहस्पतिः | ८४ जीविनी। जीवनकर्त्रीत्यर्थः |
| जूजेजोरावाभिजिन्मृतः | |
| ८५ जुंगज्ञः | ८५ जुंगज्ञा. (जुंग औषधिविशेषः |
| ८६ जेता | ८६ जेत्री { जुंगो ब्राह्मीत्वित्यम |
| ८७ जोष्टा | ८७ जोष्टी { रः |
| ८८ खनित्रज्ञः | ८८ खनित्रज्ञा. खनति येन तन् |
| खिरखूखेखोश्रवश्चैव नित्रं तज्जानातीति | |
| ८९ खिलुबित् | ८९ खिलुबित्. खिलुं परिशिष्टं |
| ९० खुरभृत्यः | ९० खुरभृत्या. |
| ९१ खेदहा. खेदो दुःखं | खुरं बिभ्रतीति खुरभृतः ताव |
| ९२ खोज्वलः | को महिष्यादीन् यातीति |
| | ९१ खेदहारिणी |
| | ९२ खोज्वला. खे आकाशेऽज्वलनीति |
| | सूर्यविद्युदादिः |

ज्योतिषसार ११२

गामी गूढे धनिष्ठ का

- ९३ गणपतिः
९४ गीतः
९५ गूढज्ञः
९६ गेयः

- ९३ गणपतिप्रिया
९४ गीता लोकेरिति शेषः
९५ गूढज्ञा
९६ गेया स्तुत्येत्यर्थः

गोसासीसूरातारा

- ९७ गोमान्
९८ साधुः
९९ सीतावरः
१०० सूतः

- ९७ गोमती
९८ साध्वी
९९ सीता
१०० सुता

सेसोदाहीच पूर्व भा.

- १०१ सेव्यः
१०२ सोमः
१०३ दाना
१०४ दिवावरः

- १०१ सेव्या
१०२ सोमप्रिया
१०३ दात्री
१०४ दिवाकरप्रिया

दूताभित्त चोत्तराभा.

- १०५ दूताभित्तः
१०६ धार्थकृत्
१०७ स्वपकेतुः
१०८ अकारार्थः

- १०५ दूताभिज्ञा
१०६ धार्थकृत् यकारः परिरक्षणे इत्येकः
१०७ स्वपकेतुप्रिया ब्रह्मसूरीपकेतुः स्यादिति
१०८ अकारार्था अकारो गोपकः इत्यर्थः

देदोचाचीरेवती

मेतदुत्पेकाक्षरः

- १०९ देवः
११० दोलारुढः
१११ चारुकांतिः
११२ चिरजीवी

- १०९ देवपत्नी
११० दोलारुढा
१११ चारुकांतिः
११२ चिरजीविनी

जातकर्म ॥ ॥ यस्मिन् जन्म मुहूर्तेऽपि सूतकांतेथ
वाशिष्ठोः ॥ जातकर्म च कर्तव्यं पितृपूजनपूर्वकं ॥ १ ॥
हि प्रैश्चरैर्भुवैर्मित्रैर्होदशोप्रथमेन्द्रिका ॥ कैन्द्रेणुरौभृ
गोकार्ये जातकर्म समाप्तम् ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥

ली० बालककाजन्म मुहूर्तेनाप्रहोपनो अशौचमाश्रीरहतेभीजात
कर्म नोदीश्राद्ध पूर्वक करना प्रथमदिनमेकरना प्रथमदिननहो

यतो १२ दिन में करना क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र में चरसंज्ञक नक्षत्र में ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र में मिश्रसंज्ञक नक्षत्र में और केंद्र में गुरुशुक्र होय तो जात कर्म करना शुभ है -

स्नानफल ॥ ॥ श्रुत्वा जातं पिता पुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत् ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा नद्यां वा देवस्नानके ॥ ३ ॥

टी० पिता ने बालक का जन्म सुनते ही वस्त्र सहित उत्तरमुख होय कोन दी में अथवा गुहामें स्नान करना -

अन्यमत ॥ ॥ पुत्रजन्म नियते च तथा संक्रमणं के ॥ राहोश्च दर्शने कार्यं प्रशस्तं नान्यथा निशि ॥ ४ ॥

टी० रात्री में स्नान करने का कोई आचार्य निषेध मानते हैं तो पुत्रजन्म में यज्ञ में सूर्यसंक्रांती में ग्रहण में दूतने स्थान में रात्री में स्नान करना उत्तम अन्यथा रात्री स्नान में निषेध है ऐसा आचार्य कहते हैं

अन्यमत ॥ ॥ दिवा यदा हुतं तोयं कृत्वा स्वर्णयुक्तं तु तत् ॥ रात्रौ स्नाने तु संप्राप्ते स्नायादनलसन्निधौ ॥ ५ ॥

टी० दिन में कूप से जल उठाया होय और रात्री में स्नान करने का काम पड़े तो जल सुवर्णयुक्त करके अग्नी के समीप स्नान करना -

अथ नामकर्म

द्वादशे दिवसे वापि जन्मतो दिवसे शुभे ॥

षोडशे विंशतौ चैव द्वात्रिंशो वर्णितः क्रमात् ६

टी० आगे नामकर्म के काल कहते हैं जन्म से १२ दिन में करना अथवा शुभदिन में करना ब्राह्मण ने १२ दिन में करना क्षत्रिय में १६ दिन में करना वैश्य ने २० दिन में करना शूद्र ने ३२ दिन में करना शुभ -

अन्यमत ॥ ॥ नामधेयं दशम्यां तु केचिदिच्छन्ति सू

रयः ॥ अष्टादशे हनि तथा वदंत्यन्ये मनीषिणः ॥ ७ ॥

टी० कोई आचार्य कहते हैं नामकर्म दशमदिन में करना और अन्य कहते हैं कि १० दिन में नामकरण शुभ होता है -

नामकर्मणि नक्षत्रमाह

चरस्थिरमृदुक्षिप्र नक्षत्रे शुभवासरे ॥

चन्द्रताराबलोपेतेदिवसेचशिरोपितुः ३

टी० चरनक्षत्रमे स्थिरनक्षत्रमे मृदुनक्षत्रमे क्षिप्रनक्षत्रमे शुभग्रहकेबारमे चंद्रकेबलमे ताराबलमे ताराशुद्धीमेपिताने पुत्रकानामकर्मकरनाशुभ—

अन्यमत॥ ॥ पूर्वाणहः श्रेष्ठदत्तुक्तो मध्यान्हो मध्यमः स्मृतः ॥ अपराणहचरात्रिचवर्जयेन्नामकर्मणि ॥ ४ ॥

टी० नामकर्मप्रथमप्रहरमे शुभ द्वितीयप्रहरमे मध्यम तृतीय प्रहरमे और रात्री दुस्ते नामकर्म करनानही—

नामकर्मेषु दुष्टयोगाः ॥ ॥ सायान्हे दुष्टयोगे पुशनिभूमिजवारयोः ॥ रिक्तापूर्वाष्टमीविष्टिः ॥ किंस्तु घंतुविशेषतः ॥ ५ ॥ एतैर्दीपैर्युक्ते काले रात्रावपिनकारयेत् ॥ ६ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

टी० नामकर्मकेदिनसायंकाले दुष्टयोगशनिवार मंगलवार रिक्तातिथी पर्व अष्टमी भद्रा किंस्तु घ्नकर्ण दिनमे इतने दोष युक्त काल होय तथापि रात्रीमे नामकर्म करनानही अशुभ—

अन्यमत॥ ॥ शुभवारे च षड्वर्गैश्शुभानां नामसंपदे ॥ राशयश्च स्थिराः श्रेष्ठा हि स्वभावाश्चैर्युताः ॥ ७ ॥ लग्नाद्या याष्टमे सर्वे न शुभानामकर्मणि ॥ ८ ॥

टी० शुभग्रहकेबारमे शुभग्रहके षड्वर्गमे और स्थिरराशीमे श्रेष्ठ द्विः स्वभावराशीमे शुभग्रह होय तो शुभ और लग्नमे द्वितीय एकादश अष्टम इस्ते कोई ग्रह न होय तो नामकर्ममे शुभ होता है—

अन्यमत॥ ॥ एकादशे हि विप्रणां सत्रियाणां त्रयो दशे ॥ वैश्यानां षोडशे दिने मासां तेषूद्रजन्यनः ॥ ९ ॥

टी० ब्राह्मणको ११ दिन क्षत्रियको १२ दिन वैश्यको १६ दिन सूद्र को २० दिन के नंतर यथाक्रमसे नामकर्म चारो वर्ण को उक्त है—

अन्यमत॥ ॥ पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगमेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरादित्याख्येषु च नामकर्म शुभदं योगे प्रशस्ते तिथौ ॥ अहिह्वा दशकतथान्यदिवसे शस्ते न चैकादशे

गोसिंहालिघटेपुष्करं बुधयोर्जीवेशशांकेषिच ॥ १०

टी० पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरा ३ पुनर्वसु इननक्षत्रोंमें नामकर्म शुभहोताहै शुभयोगमें शुभतिथीमें १२ दिन अथवा ११ दिन वृष सिंह वृश्चिक कुंभ इसलग्नमें शुभ रवि बुध गुरु चंद्रमा इनकेवारमें शुभ अथवा अन्यदिनमें कर नाहोयतो पठित नक्षत्रमें करना तो शुभहोताहै —

मंचकारोहण ॥ ॥ शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा

शतभिषगनुराधाच्युत्तरास्वातिहस्ताः ॥ बुधगुरुभृगु

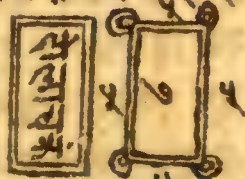
वारेसौम्यलग्नेर्भकस्थनिगदितपिहपूर्वमंचकारोहणंतु १

टी० मृग अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शततारका अनुराधा तीनोत्तरा ३ स्वाती हस्त बुध गुरु शुक्र शुभग्रहके लग्नमें बालकको पलंगपर शयन करावना शुभ —

दोलारोहण ॥ ॥ दोलारोहेर्कभातंचशरपंचेषु

सप्तभैः ॥ नैरुज्यंमरणंकार्ष्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिषो ॥ १

टी० बालकको पालनेमें देनेका काल सूर्यनक्षत्रसे प्रथम पुनक्षत्रमें निरोगता नंतर पुनक्षत्रमें मरण नंतर पुनक्षत्रमें रुशता नंतर पुनक्षत्रमें रोग नंतर ७ नक्षत्रमें सौख्य ऐसा दोलाचक्रमें जानना —



अन्यमत ॥ ॥ आंदोलशयनं पुंसां द्वादशेदिवसे

शुभं ॥ त्रयोदशेतुकन्यायाननक्षत्रविचारणा ॥ २ ॥

टी० बालकको पालनेमें १२ दिनमें शुभ १३ दिन कन्याको पालनेमें शयन करावना नक्षत्रादिकका विचार करना नही —

अन्यमत ॥ ॥ अभीष्टदिवसे पुण्ये चंद्रे ताराबलानिते

॥ योगशायिं हरिं ध्यायन् प्राकृशीर्षे विन्यसेच्छिषुं ॥ ३ ॥

टी० शुभदिनमें चंद्रबल ताराबल सहित होय ऐसे दिनमें विष्णूका ध्या न करको पूर्वके तरफ मस्तक करको पालनेमें शयन करावना शुभहोताहै

जलपूजन ॥ ॥ कवीज्यास्तचैत्राधिमासेन पौषेज

लं पूजयेत्सूक्तिकामासपूर्तौ ॥ बुधे द्वीज्यवारे विरिते

तिथौ हि क्रती ज्यादितीहर्कनैर्कत्यमैत्रैः ॥ १ ॥

टी० प्रसूतीके नंतर १ माससे स्त्री को जल पूजा करावना शुभ चंद्र शु
रुद्धनके बारमे श्रवण पुष्य पुनर्वसु मृगशिर हस्त मूल अनुरा
धा ऐसे शुभदिन करना परंतु शुक और गुरुका अस्त चैत्र अधि
क मास पौष और रिक्ता तिथी इवका त्याग करना शुभ —

दुग्धपानमुहूर्त ॥ ॥ एकत्रिंशद्दिने चैव पयःशंसे
नपाययेत् ॥ अन्नप्राशननक्षत्रादिवसोदयराशिषु ॥ १ ॥

टी० बालकको ३१ दिनमे अन्नप्राशनके नक्षत्रमे जिस लग्नमे सूर्यो
दयहोय उस लग्नमे शंखसे धूपपिपावना शुभ होता है —

तांबूलभक्षण ॥ ॥ सार्द्धमास दूधे दद्यात्तांबूलं प्र
थमेशिशोः ॥ कर्पूरानिकसंमिश्रं विल्लासाय दितो य
च ॥ १ ॥ मूले च चित्रा च तिष्यहरीं दूधे पुष्यौ तथा
मृगशिरादिति वासरेषु ॥ अर्कं दुर्जीवभृषु बोधनवा
सरेषु तांबूलभक्षणविधिर्मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ २ ॥ ॥

टी० बालकको प्रथमतो बूल २॥ यदि नैवे कर्पूरादि पुक्त करको सुसौ
ख्य हितके वास्ते देना पर मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती
मृग पुनर्वसु रवि चन्द्र गुरु शुक बुध ऐसे शुभयोगमे बालकको
तांबूल भक्षण करावना ऐसा आचार्य कहते है —

सूर्यावलोकन ॥ ॥ हस्तः पुष्य पुनर्वसु हरिपुंगवैत्रयं
रोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनी मृगशुक्ला बाहोत्तरा स्वाति
मे ॥ मासोत्तुर्ये तृतीय कौशानिकुजौ त्यक्त्वा च रिक्ता तिथिं
सिंहादित्रयकुंभराशिसहितं निष्कासनं संस्थिते ॥ १ ॥

टी० हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी रे
वती उत्तराफाल्गुनी मृग उत्तराषाढा स्वाती चतुर्थ तृतीयमहिना
सिंह कन्या तुला कुंभ यह राशीके चंद्रमासे बालकको सूर्यावलोकन
करावना परंतु शनि मंगल रिक्ता तिथी ४१ १४ का त्याग करना —

भूस्पृशवेशन ॥ पंचमे वतशामासि भूमौ तमुपये
शयेत् ॥ तत्र सर्वे ग्रहाः शस्ता भौमो व्यत्रविशेषतः ॥ १ ॥

उत्तराश्विनयंसौम्यं पुष्यर्क्षशक्रदैवनं ॥ प्राजाप
त्यंच हस्तंच शस्तमाश्विनसौरव्यदं ॥ २॥ ७॥

टी० पंचममासमे बालकको भूमी पर बैठावना वह काल मे सब ग्रह शु
भ होय परंतु मंगल विशेष करको बलवान होय तीनो उत्तरा मृग पुष्य ज्ये
ष्ठा रोहिणी हस्त यहन क्षत्र शुभ और आश्विन मे करना सुखदायक होता है
भूमि शोधन ॥ ॥ भूभाग मुपलिप्याथ कृत्वा नत्र
नुमंडलम् ॥ शंख पुण्याह शब्देन भूमौ न मुपवेश
येत् ॥ ३॥ वराहं पूजयेद्देवं पृथिवीं चेतया हि जं ॥
पूजनं पूर्ववच्चात्र गुरुदेव हि जन्मनां ॥ ४॥ ७॥

टी० भूमी शुद्ध लीपना उसपर मंडलादिक शोभा करना शंख बजाव
ना और भी नाना प्रकार के वाद्य बजावना वाराह का पूजा करना भू
मी का पूजा करना ब्राह्मण का पूजा करना गुरुदेव यह सब की पू
जा करको नंतर बालकको भूमी पर बैठावना शुभ—

प्रार्थना मंत्र ॥ ॥ मंत्राश्चात्र भवन्ती ये तन्वो निगदतः
शृणु ॥ रक्षेनं वसुधे देवि सरा सर्वगतं शुभे ॥ ५॥ ॥

टी० भूमी पर बैठावने के समय मे भूमी की प्रार्थना सबकुल चारोक्त करना
है भूमि यह बालकको संरक्षण करो और सुख को करो ऐसी प्रार्थना करना—

तस्मिन्काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रं शस्त्रं पुस्तकं लेखनीं च

॥ स्वर्णं रूप्यं च च गृह्णाति बालस्तैराजी वैस्तस्य वृत्तिः प्रदिष्टा ७

टी० उस काल मे बालक के आगे वस्त्र शस्त्र पुस्तक लेखनी सुवर्ण रूपास्था
पन करना जो पदार्थ बालक ग्रहण करे वह वृत्ती से जीवन होय यह जानना—

कर्णवेध ॥ ॥ रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभेविष्णुत्र
येर्कत्रयेरेवत्यांच पुनर्वसुदूषभगे कर्णस्य वेधः शु
भः ॥ मीनेस्त्रीधनुमन्यधेषु च घटे वर्षे विष्णुमौतिथौ
सौम्ये चेंदुगुरौरवौ च शयनं त्यक्त्वा च विष्णोर्दुधैः ॥ १॥

टी० रोहिणी उत्तरा मूल अनुराधा मृग श्रवण धनिष्ठा शततारका ह
स्त चित्रा स्वाती रेवती पुष्य पुनर्वसु पूर्वा इसन क्षत्र मे मीन कन्या ध
न मिथुन कुंभ इसल प्रमे विषम वर्ष मे विष्मति थी मे बुध चंद्र गुरु

रवि इनके वारमे बालक का कान छेदना शुभ परंतु निष्प्राप्त न कहिये चानु
अन्यमत ॥ शुक्रपक्षमे शुभवारमे चैत्रे पौषे च फाल्गुने ॥ सीस्य कात्वा
ने ॥ एकादश्यष्टमी पर्वरिक्ता वर्ज्या शुभावहाः ॥ २॥

टी० शुक्रपक्षमे शुभवारमे चैत्र पौष फाल्गुन इत्ये कर्णवेधकर
ना शुभ एकादशी अष्टमी पर्वरिक्ता तिथी इत्का कर्णवेधयेत्यागकर ना
अन्यमत ॥ ॥ शिशोरजातदंतस्य मातुरुत्संगसर्पि

णः ॥ सौविको वेधयेत्कर्णौ सूच्यादिगुणसूत्रया ३
टी० दन्त रहित बालक का कर्ण छेद जानामे गोहमेलेको सोनारसे
सुईसे दूना सूत्र लेको कर्ण छेद करना शुभ है —

अन्यमत ॥ ॥ मंदाकीरांशवा राः स्युर्वर्ज्याः कर्णस्य
वेधने ॥ गुरुशुक्रेंदुजे वारे पूज्या वारांशको दवानु ॥ ४ ॥
टी० शनि रवि मंगल ग्रह वार होय वा इनके अंश होय तो कर्णवेधमे वर्ज्य
जानना गुरु शुक्र बुध इनके वार होय वा इनके अंश होय तो कर्णवेध करना शु

अन्यमत ॥ ॥ शातकुंभयमीसूचीवेधने तु शुभप्रदा
॥ राजती वायसी वाणि यथाविभवतः शुभाः ॥ ५ ॥ ॥

टी० सुवर्णके सुईसे कान छेदना शुभ अथवा चांदीकी वा लोहेकी वा
जैसी शक्ति होय वैसी करना शुभ —

अन्यमत ॥ ॥ सुभूमौ प्रांतरे रम्ये शुचौ देशे बरेष
वौ ॥ मंस्थिते वेधयेत्कर्णौ स्त्रीपुंसोर्वापदक्षिणौ ॥ ६ ॥

टी० उनामभूमिमे वा रमणीय स्थानमे पवित्रतासे रुद्रशुद्धीमे १० स्थानमे
सूर्यहोपरे से कालमे पुरुषका दक्षिण कर्ण स्त्रीका बाय कर्ण छेदना शुभ
अन्यमत ॥ ॥ शुक्रसूत्रसमायुक्तं तापसूच्याश्च वे

धयेत् ॥ वेधान्तीयेन सूत्रे क्षालयेदुच्या वारिणा ॥ ७ ॥

टी० सफेद सूत्र से तांवेकी सुईसे कर्णवेध करना परंतु जिसन सूत्रमे
वेध किया होय उससे तीसरे सूत्रमे गरम जरू से धोना शुभ —

कटिसूत्रबंधना ॥ ॥ अद्धेन सौरेण शिशोः समामे बालं तु संस्नाप्य

चजन्मधिष्ये ॥ कृत्वा पुनरुदिकरं च कर्म तं आरयेच्छानि सुवर्णसूत्रं

टी० बालकको संस्नातमानमे एक वर्षमे उत्तम स्नान करावना और आ

पुष्पकीचूड़ी होय ऐसा शान्तिकर्म कर को जन्म नक्षत्र मे सुवर्ण युक्त क
हिसूत्रकं वरमे बांधना शुभ —

अथान्नप्राशन॥ ॥ पूर्वाद्रि भरणी भुजंगवरुणस्य
त्वाकुजा कीर्तयानं दार्वचसप्तमीमपितथारिक्ताम
पिद्वाद्दशी॥ षष्ठे मास्यश्वान्नभक्षणविधिस्त्रीणामशु
कृपंचमेगोकन्यासृषमन्मथे बुधबले पक्षे च योगेशुभे १
टी० पूर्वा ३ आर्द्रा भरणी आश्लेषा शततारका मंगल शनि नंदातिथि
पर्व सप्तमी रिक्तातिथि द्वादशी इतने का त्याग करना और पुत्रको
षष्ठमासमे अथवा अष्टममासमे कन्याको पंचम महिनेमे अथवा
विषममासमे वृषकन्या मीन मिथुन इसलग्नमे शुक्लपक्षमे शुभयो
गमे बालकको अन्नप्राशन करावना —

अन्यमत॥ ॥ जन्मर्क्षे श्रीक्षपं विंशत्युत्तमर्क्षे चाति सौरव्य
कृत्॥ आधानर्क्षे च बालानां जायते रोगनाशनम्॥ २॥ ॥
टी० जन्मलग्नमे अन्नप्राशन करावने सो लक्ष्मीक्षय जानना कदा॥
चित् दशमलग्नमे अन्नप्राशन होय तो सुखकारक होय कदाचित्
गर्भाधानलग्नमे होय तो रोगादिकनाश होता है —

चौल॥ ॥ रेवत्याद्यकरत्रयादिति मृगज्येष्ठासु विष्णुत्रये
पुष्ये चोत्तरगेरबौ गुरुकवी दुजेषु पक्षे सितौ॥ गोस्त्री
मन्मथचापकुंभमकरं हित्वा च रिक्तातिथिं षष्ठीपर्व
तथाष्टमीमपि सिनीवालीं च चूडां शुभाम्॥ १॥ १॥
टी० रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृगज्येष्ठा श्रवण
धनिष्ठा शततारका पुष्प यह नक्षत्रों मे उत्तराषण सूर्य मे गुरु शुक्र
चंद्र बुध इनके वारमे शुक्लपक्षमे चौल करना शुभ और वृषकन्या
मिथुन धन कुंभमकर इसलग्नोको त्याग करना रिक्तातिथी षष्ठी पर्व
अष्टमी अमावास्या यह चूडाकर्म मे त्याग करना —

अन्यमत॥ ॥ जन्मतस्तु तृतीये व्देशे षष्ठि च्छति पंडि
ताः॥ पंचमे सप्तमे वापि जन्मतो मध्यमं भवेत्॥ २॥ ॥
टी० कोई आचार्य कहते हैं कि तृतीयवर्षमे चौल श्रेष्ठ पंचम और

सप्तमवर्षमे मध्यमहोनाह ऐसाजानना—

चौलवारपरत्वे॥ ॥ पापग्रहाणां वारादौ निपाणां शुभं
रके॥ इति पाणां पशुस्तो विदुः शुद्राणां रावौ शुभं ॥ ३ ॥

टी० पापग्रहो नैवाभिरविचार्यज्ञातानां शुभ इति पको मंगल शु
भ वैश्य और शुद्र इनको शनिवारको चौल शुभजानना—

अन्यमत॥ ॥ तदनोर्मातरि गर्भिण्या चूडा कर्मनकारये
त्॥ पंचाब्दात्यागबोधैस्तु गर्भिण्या मपि कारयेत् ॥ ४ ॥

टी० पुत्रकी माता गर्भिणी होयतो चौल करानाही परंतु पंचमवर्षके
नंतर गर्भिणी होयतो भी करना शुभ—

विचारंभः॥ ॥ रेवत्यां मृगपंचमे हरिषु मेपूर्वा सुहस्तत्र
पेमूले स्वे अभिजिच्च भानुभृगुजे सौम्ये धनुर्जीवयोः॥ अ
ष्टे पंचमवे विहाय निस्विलान आशुषही युतान् रिक्ता
सौम्यदिने तथैव विबुधैः प्रोक्तो मुहूर्तः शुभः ॥ १ ॥ ४ ॥

टी० रेवती मृग आर्द्रा पुष्यसु पुष्य आश्लेषा श्रवण धनिष्ठा पूर्वा
हस्त चित्रा स्वाती मूल अभिनी अभिजित् रवि शुक्र बुध गुरु इन
के वारमे पंचम वर्षमे शुभदिनमे विचारंभकरना परंतु संपूर्ण अत्र
ध्यायका त्यागकरना वही रिक्ता तिथी इनका त्यागकरना—

अन्यमत॥ ॥ असुरस्वीकृतिः प्रोक्ता प्राप्ते पंचमहाय
ने॥ उत्तरायणगे सूर्ये कुंभमासं विवर्जयेत् ॥ २ ॥ ॥

टी० असुरग्रहण पंचम वर्षमे करना उत्तरायण सूर्यमे शुभ कुंभमास सूर्यका त्याग
करना

अन्यमत॥ ॥ विचारंभे गुरुः शस्तो मध्यमौ भृगुभास्क
रौ॥ मरणं शनिभौ माभ्यामविद्या बुधचंद्रयोः ॥ ३ ॥ ॥

टी० विचारंभ गुरुवारको शुभ शुक्ररविद्वस्तो मध्यम शनि मंगल इ
त्ये मरण बुध और चंद्रमा मे विद्याहीन ऐसाजानना—

मौजीबंधनमुहूर्तः॥ ॥ पूर्वाषाढ हरिषु पेषि मृगभेह
स्तत्र रेवती ज्येष्ठा पुष्य भगो बुधोत्तराश्लेषा भानी च पक्षे सि
ते॥ गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरेशु केके जीवेति यौ पंच
म्यां दशमी नये व्रतमहस्यै वंदित न्यहये ॥ १ ॥ ४ ॥ ॥

टी० पूर्वाषाढा अश्विनी धनिष्ठा शततारका अश्विनी मृग हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी यह नक्षत्र उत्तरायण सूर्यशुक्लपक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह इसलग्नमे शुक्रवार रविवार गुरुवार पंचमी दशमी एकादशी द्वादशी प्रदोष वर्जित ऐसे शुभमुहूर्तमे ब्राह्मणने मौंजीबंधनकरना शुभ-
अन्यमत॥ ॥ ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्ये विप्रस्य पंच
मे॥ राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्यैवार्थिनोष्टमे॥२॥

टी० ब्राह्मणको नवो बलकी इच्छा होय तो ५ वर्षमे मौंजी बंधनकरना सत्रियको बलकी इच्छा होय तो ६ वर्षमे करना वैश्यको धनकी इच्छा होय तो ८ वर्षमे करना शुभ

अन्यमत॥ विप्राणामुपनयनं वसंतसमये धराधिनाथानां

॥ ग्रीष्मर्तौ शरदिविशाखासाः साधारणाश्च माघाद्याः॥३॥

टी० ब्राह्मणने वसंत ऋतूमे मौंजीबंधनकरना सत्रियने ग्रीष्म ऋतूमे करना वैश्यने शरदृतूमे करना माघादिक मासमे करना शुभ-

वर्षसंख्या॥ ॥ गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पंचमे सप्तमेपि वा

॥ हिजल्यं प्राप्नुयाद्विप्रो वर्षे त्वेकादशो नृपः॥४॥ ॥

टी० ब्राह्मणको गर्भसे ८ वर्षमे अथवा जन्मसे ८ वर्षमे वा पंचममे वा सप्तमवर्षमे जनेउ ब्राह्मणको उक्त है और ११ वर्षमे सत्रियको उक्त जानना -

मौंजीबंधननक्षत्र॥ ॥ वेदक्रमाच्छिशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वाशुपौष्ठाकरमैत्रमृगादितीज्ये॥ प्रौवेषु चाश्विनसु

पुष्यकरोत्तरेशकर्णे मृगात्पलघुमैत्रधनादितौ सत्॥५॥

टी० चारो वेद परत्वसे मौंजी बंधननक्षत्रलिखेहु ये चक्र परसे स्पष्ट देखना वेद परत्वेन सत्रचक्र वर्ज्यनक्षत्र

मघा भरणी ज्येष्ठा विशाखा

चैव कृतिका॥ नक्षत्रपंचकं प्रा

ज्ञैर्न ग्राह्यं व्रतबंधने॥६॥ ॥

टी० मघा भरणी ज्येष्ठा विशाखा कृतिका यह ५ नक्षत्र मौंजीबंधनमें त्यागकरना शुभ-
५

| कृत्ति | मघा | साव | अश्विनी |
|------------|----------|---------|----------|
| मृग | रेवती | अश्विनी | मृग |
| आर्द्रा | हस्त | धनिष्ठा | रेवती |
| भाद्रपद | अश्लेषा | पुष्य | हस्त |
| हस्त | मृग | हस्त | अश्विनी |
| चित्रा | पुनर्वसु | उत्तरा | पुष्य |
| स्वाती | पुष्य | आर्द्रा | अश्लेषा |
| पूर्वा | उत्तरा | अश्लेषा | धनिष्ठा |
| पूर्वाषाढा | रोहिणी | ० | पुनर्वसु |

रत्नसेवी वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः॥

प्राजोर्थवान् सूर्यसेवी चंद्रसूर्यादिवेचरैः॥७॥

टी० केन्द्रमे सूर्य होय तो रत्नसेवी चंद्रमा होय तो वैश्य का काम करे मं
गल होय तो शस्त्रसे जीवन सुध होय तो पठन करे गुरु होय तो बहुत धन
वान् शुक्र होय तो धनयुक्त शनी होय तो जीवन की सेवा करे ऐसा जानना-

मौंजी मेल ग्रह शुद्धि॥ ॥ चंद्रः कूरः पितृपेशः शिशुसिततनुपाः

षष्ठगे हे सितोऽस्ये सर्वे प्रेवदुभाः कचतनुगद्वः श्रेष्ठ उच्चैर्दु

रेके॥ विद्यामौंज्युक्तकाले स्थिरचरहरिजन्म्युत्तरमाह्महीने

मौंज्या ऊर्ध्वगणेशगिरपि विधिवत् पूजयित्वाऽऽरभेत्॥७॥

टी० मौंजी मेल ग्रह शुद्धी देखने का प्रकार चंद्र कूर ग्रह लग्नमे न होय चंद्र
शुक्र लग्न पती यह ई स्थानमे न होय शुक्र १२ स्थानमे न होय ८ स्थान
मे कोई ग्रह न होय कोई आचार्य कहते हैं कि लग्नमे सूर्य श्रेष्ठ कोई कह
ते हैं कि उच्चका चंद्रमा लग्नमे श्रेष्ठ ऐसे लग्न शुद्धी मे मौंजी शुभ जो काल
मौंजी मे कथन किया उसमे विद्या का आरंभ करना स्थिर नक्षत्र चर नक्ष
त्र श्रवण तीनों उत्तरा रोहिणी इसका त्याग करना मौंजी के प्रंतर गणे
शका सरस्वती का विधी से पूजा करके आरंभ करना शुभ-

अन्यमत॥ ॥ शुद्धिर्न विद्यते षष्ठवर्षे प्राप्तेष्टमे यदि

॥ चैत्रे मीनगते भानौ तस्योपनयनं शुभम्॥ ८॥

टी० गालक को अष्टम वर्षे प्राप्त भया और मौंजी को काल शुद्धि न
होय तो चैत्रमे मीनके सूर्यमे करना शुभ-

अन्यमत॥ ॥ वर्णाधिपे बलोपेते उपनीत किया

हिता॥ सर्वेषां च गुरौ सूर्ये चंद्रे च बलशालिनि॥ ९॥

टी० वर्णपति बलवान् होय तो मौंजी बंधन श्रेष्ठ सबको गुरु बल स
र्वबल चंद्रबल होय तो करना शुभ-

अन्यमत॥ ॥ शुभदो बलवान् भानुर्लग्नगोदशम

स्तथा॥ सर्वशाखाधिपोपस्थात् सर्वेषां व्रतबंधने १०

टी० सूर्य बलवान् लग्नमे १० स्थानमे होय तो शुभ सब शाखा का अ
धिपती सूर्य है इसका स्ते १/१० होय तो व्रत बंधन करना शुभ-

गुरुबल ॥ ॥ सृषचापकुलीरस्थोजीवोवाप्यशुभो

वरः ॥ अतिशोभनतादद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ १११ ॥

टी० मीन धन कर्क दसराशीका गुरु अशुभहोय तथापि विवाह और मौंजी इत्ये बहुत शुभजानना —

गलग्रहयोगः ॥ ॥ त्रयोदश्यादिचत्वारिसप्तम्यादिदिन

त्रयम् ॥ चतुर्थी कृष्णपक्षस्य अष्टावेते गलग्रहाः ॥ ११२ ॥

टी० त्रयोदशी चतुर्दशी पौर्णिमा अमावास्या प्रतिपदा सप्तमी अष्टमी नवमी कृष्णपक्षकी चतुर्थी यह आठ तिथी की गलग्रह संज्ञा सो शुभकर्ममें त्यागकरना

शूद्राणां ब्रतबंध संस्कारमाह ॥ ॥ मूलाद्रीश्रवणद्विदैवत

सुभेषु ध्येनया च अश्विभेरेवत्या मृगरोहिणीदितिकरे मैत्रेत

था वारुणे ॥ चित्रा स्वाति मघो नरा भृगुमुने भौमे तथा चंद्रजे

शूद्राणां तु बुधैः शुभं हि कथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥ ११३ ॥

टी० मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगरोहिणी पुनर्वसु हस्त अजरा पाशतनूका चित्रा स्वाती तीनो उत्तरा ३ पहन सत्रों में और शुक मंगल बुध यह चारों में शूद्रको संस्कार करना शुभ —

अन्यमतः ॥ ॥ शूद्राणां राजपुत्राणां मौंज्यभावेस्त्र बंध

धने ॥ मौंजी बंधोक्त तिथ्यादौ कार्यं भौमदिनं विना ॥ ११४ ॥

टी० राजपुत्रको शूद्रको मौंजी बंधन के स्थान में शस्त्र बंधन करावना परंतु मौंजी बंधन में तिथी वार न सत्र जो कहा है उत्ये करना परंतु मंगलवार का त्याग करना यह शुभ —

अन्यमतः ॥ ॥ जीवेशु क्रेचभूपुत्रे चंद्रताराबलानि

ते ॥ मौंजी बंधर्क्ष तिथिषु कुजवर्जित वासरे ॥ ११५ ॥ ॥

टी० गुरुवार शुक्रवार मंगलवार चंद्रबल ताराबल में मौंजी बंधन में जो न सत्र तिथी वार जो कहा है उत्ये शूद्रको संस्कार करना शुभ — परंतु मंगलवार का त्याग करना शुभ —

अन्यमतः ॥ ॥ केशान्त षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधी

यते ॥ राजन्यबंधोर्द्वाविंशे वैश्यस्य द्वाधिके ततः ॥ ११६ ॥

टी० केशान्त कहिये दाढ़ी बनावना ब्राह्मण ने १६ वर्ष में राजाने २० वर्ष

मे वै श्वने रश्मिर्वर्षमेकरना - शुभ -

विवाहप्रकर्ण

तत्रादौ दैवज्ञपूजनः ॥ दैवज्ञपूजयेदादौ फलतांबू
लपूर्वकः ॥ विवेदयेत्सुमनसास्वकन्यो ह्यहनादि ॥

टी० प्रथमे ज्योतिषी की यथा शक्ति फलतांबू ल पूर्वक पूजा करानंतर
पितानेकन्याके विवाहका शुभाशुभप्रश्नकरना -

विवाहप्रश्नमाह ॥ विषमभांशगतौ शशिभार्ग
वौ तनुगृहं बलि नौ यदि पश्यतः ॥ रचयतो वर
लाभमिषौ यदा युगल भांशगतौ युवतिप्रदौ ॥ २ ॥

टी० प्रथमकालमे चंद्रशुक्र यह विषम राशीमे वा अंशमे होय और दूने
बली होयके लग्नको देखे तो कन्याको पती प्राप्ति और सम राशीमे वा
अंशमे चंद्रशुक्र होय तो पुरुषको स्त्री प्राप्ति कहना - शुभ -

प्रश्नसमये अशुभानि ॥ प्रशुर्बिलगात्स्वलः श
शांकः शत्रुस्थितौ मृत्युगृहस्थितौ वा ॥ यद्यष्टमाया
त्परतो विवाहात्करोति मृत्युं वरकन्ययोश्च ॥ ३ ॥

टी० प्रथमलग्नमे बलवाद् चंद्रमा पश्य अथवा अष्टमस्थानमे होय तो
विवाहसे अष्टमवर्षमे दूनी स्त्री पुरुषको अरिष्ट जानना -

अन्ययोगाः ॥ पद्युद्यस्थश्चंद्रस्तत्प्रायदिसप्तमो
भवेद्भौमः ॥ समाष्टके सजीव निविवाहकालोत्तर
पुरुषः ॥ ४ ॥

टी० प्रथमलग्नमे चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तमस्थानमे मंगल होय तो
विवाहसे अष्टमवर्षमे पतीको अरिष्ट जानना -

अन्ययोगाः ॥ स्वनीचगः शत्रुहृष्टः पापः पंचम
गोयदा ॥ मृतपुत्रां करोत्येव कुलदोषानसंशयः ॥ ५ ॥

टी० प्रथमकालमे पापग्रह अपाने नीचस्थानमे होय अथवा शत्रुग्रह देखने होय वा
पापग्रह पंचमस्थानमे होय तो संतान नष्टनाश और वैश्य होय से जानना

प्रथमसमये शुभान्याह ॥ विद्यति यद्युदकुंभशायनासनपादु
का सुभंगो वा ॥ प्रथमसमये विषमस्थानस्थे वैधम्यमादेश्य ॥ ६ ॥

टी० विवाहप्रश्नकालमे अकस्मात् जलकुंभका भंग होय अथवा निद्रानाश आ
सनभंग पादुका भंग ऐसा जिस कन्या के विवाह प्रश्न समय मे होय उस्को विधवा योग
जानना

स्त्रीणां कुयोगाः ॥ ॥ मूलजाचगुणहंति व्यालजाकुल

लांगना ॥ विशाखजादेवर ग्रीज्येषु जाज्येषु नाशका ॥ ७

टी० कन्या जन्म मूल नक्षत्र मे होय तो गुणनाश आश्लेषा नक्षत्र मे होय
तो वेश्या होय विशाखा मे होय तो पती के छोटे भाई का नाश ज्येष्ठा नक्ष
त्र मे होय तो पती के बड़े भाई का नाश जानना —

अन्यमत ॥ ॥ अज्येष्ठा कन्या कायत्र ज्येष्ठ पुत्रो वरो

यदि ॥ व्यत्ययो वातयोस्तत्र ज्येष्ठो मासः शुभप्रदः ॥ ८ ॥

टी० कन्या ज्येष्ठ न होय पुरुष ज्येष्ठ होय ऐसा दूनों का भेद होय तो ज्येष्ठ मास मे करना
वर्ष प्रमाण माह ॥ षडब्द मध्ये नो ह्यस्या कन्या वर्ष द्वयं शुभ

ततः ॥ सोमो भुंक्ते तनस्तद्धर्षश्च तथा नलः ॥ ९ ॥

टी० प्रथम ६ वर्ष कन्या का विवाह करना नही कारण प्रथम २ वर्ष चं
द्रमा भोग करता है नंतर दो वर्ष गंधर्व भोग करते है नंतर दो वर्ष अभी
भोग करता है नंतर विवाह को शुद्ध जानना —

वर्ष प्रमाण ॥ ॥ अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा तुरो

हिणी ॥ दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वषली मता ॥

१० ॥ गौरीदानागलोकं वैकुण्ठं रोहिणीददत् ॥ क

न्यादानाद्ब्रह्मलोकं रौरवंतु रजस्वला ॥ ११ ॥ ११ ॥

टी० आठ वर्ष की कन्या होय तब उस्का नाम गौरी नववर्ष की होय त
ब रोहिणी नाम दसवर्ष की होय तब कन्या उस्का नाम बार वर्ष की हो
य तब शूद्रा नाम जानना इसका फल गौरीदान से नागलोक प्राप्ती रो
हिणीदान से वैकुण्ठ प्राप्ति कन्यादान से ब्रह्मलोक प्राप्ती शूद्रादान से
घोर नरक प्राप्ती ऐसा यह दान फल जानना —

अन्यमत ॥ ॥ विवाहो जन्मतः स्त्रीणां युग्मे ब्रे पुत्र

पौत्रदः ॥ अयुग्म श्रीप्रदं पुंसां विपरीते तु सृत्पुदः ॥ १२

टी० स्त्री को विवाह काल जन्म से सम वर्ष मे करना तो पुत्र पौत्र प्राप्ती पु
पुरुष को जन्म से विषम वर्ष मे विवाह होय तो लक्ष्मी प्राप्ती इस्से विपरीत

होयतो वृत्तुशाली जानना. —

अन्यमत ॥ ॥ कन्या द्वादश वर्षाणि काय दत्ता न सेतु
हे ॥ प्रहाद त्यागि तु सस्याः सा कन्या प्रयेत्त्वयं ॥१३॥

टी० कन्या बार १२ वर्ष की होय और पिता के घर में खोती पति को दस हत्ता मा
प्रहोती है अनंतर कन्या ने अपने तन्हा से पती करना ऐसा मा का वैतन है

मंगल विचार ॥ ॥ लये अये च पाताले पायि त्रेचा
मे कुजे ॥ पत्नी हंति स्वभर्तुर्भर्तुर्नीर्यानि वाहयेत् ॥१४॥

टी० स्त्री को वा पुरुष को मंगल रहता है तिसका प्रकार ११२४४४४४४
हस्त ने स्थान में मंगल होय तो स्त्री मंगली कहावती है तो मंगल से प
ल होय तो करना अथवा पुरुष के शरीर बलवान होय तो करना शुभ

भौम विचार ॥ ॥ अथ ज्येष्ठ दशौ रिर्लये वाहि
नु केशवा ॥ नवमे द्वादशे चैव भौम दोषान विचारयेत् ॥१५॥

टी० स्त्री को वा पुरुष को अथ १५१२ द्वादश में स्थान में शनी होय तो
मंगल का दोष नही ऐसा जानना —

ज्येष्ठ विचार ॥ ॥ ज्येष्ठौ मध्यौ प्रोक्तावेक ज्येष्ठ
शुभा वहः ॥ ज्येष्ठ उभयं कुर्वीत विवाहे सर्वसंमतं ॥१६॥

टी० पुरुष ज्येष्ठ वा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठ मास होय ऐसा कोई
२ ज्येष्ठ मे करना प्रथम १ एक ज्येष्ठ मे करना शुभ और पुरुष ज्येष्ठ
स्त्री ज्येष्ठ मास ज्येष्ठ ऐसा तीनों ज्येष्ठ होय तो विवाह करना नही —

अन्यमत ॥ ॥ ज्येष्ठायाः कन्यकाया ज्येष्ठे पुत्र
स्यैव मेषः ॥ विवाहो नैव कर्तव्यो यदि स्थानि धनं तयोः १७

टी० मय मर्भ मे जो होय अस्को ज्येष्ठ कहना सो पुरुष ज्येष्ठ होय और
कन्या भी ज्येष्ठ होय तो करना नही दुःस्वसय कहोता है

अन्यमत ॥ ॥ दश वर्षं न्यति क्रांता कन्या शुद्धि विव
र्जिता ॥ तस्या स्तौरे दुर्गमाना शुद्धी पाणि प्रहो मतः ॥१८॥

टी० दश वर्ष के नंतर कन्या शुद्धी से रहित होती है तो तारा शुद्धी नंतर
शुद्धी लपट शुद्धी देख को विवाह करना शुभ —

कन्या लक्षण आह ॥ ॥ हंस स्वरों मे धवला कपुर्षिक

लोचनं॥ तादृशीं वरयेत्कन्यां गृहस्थः सुखमेधते १०

टी० स्त्रीलक्षण स्त्रीका बोलनाहं सके ऐसा होय मेघके ऐसा वर्ण होय नेत्रका वर्ण सहतके ऐसा होय वापिंगल कहिये कुछ सके दकुछ काला होय ऐसे कन्या से विवाह करे तो गृहस्थ सुख पावना है ऐसा जानना -

वरलक्षणमाह॥ ॥ जानि विद्या वपशीलमारोग्यं ब

हु पस्तता॥ अर्थित्वं विन संपत्तिरष्टा वेते वरे गुणाः॥ १९

टी० पुरुषलक्षण जाती मे उन्नत होय विद्या युक्त होय वय मे वृद्ध न होय स्वभाव अच्छा होय निरोगी होय परिवार बहुत होय स्त्री की इच्छा होय द्रव्य संपत्ती होय ऐसा आठ लक्षण से युक्त वर होय तो कन्या देना -

वरदोषमाह॥ ॥ दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुव

र्तिनां॥ शूराणां निर्धनानां च न देया कन्यका बुधैः॥ २०॥

टी० पुरुष के दोष दूर रहने वाले को कन्या देना नही मूर्ख को देना नही मोक्षधर्म जो योगाभ्यासादिक करे उसके देना नही शूर को देना नही दरिद्री को देना नही ऐसा पंडित लोक कहते हैं -

वर्णाद्यष्टगुणनाम॥ ॥ वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च

ग्रहमैत्रकं॥ गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः २१

टी० वर्ण से ले को नाडी तक गुण के ज्ञान के वास्ते यथाक्रम से चक्रमे स्पष्ट देखना

| वर्ण | वश्य | तारा | कोनि |
|--------|------|------|------|
| १ | २ | ३ | ४ |
| ग्रहमै | गणमै | भकूट | नाडी |
| ५ | ६ | ७ | ८ |

वर्ण॥ मीनालिकर्कटाविप्रानृ

पाः सिंहाजधन्विनः॥ कन्या नक्र

वृषा वैश्या शूद्रा युग्मतुला घटाः २२

टी० ब्राह्मणादिक वर्ण ज्ञान के वास्ते चक्रमे

वर्ण ज्ञानार्थ चक्रम् ॥

मेलिखे परसे चारो वर्ण जानना -

वश्य॥ ॥ दंडनापघटकन्यका

तुलामानवा भजवृषो चतुष्पदाः

॥ कर्क मीन मकराजलोद्धवाकैस

री वनचरालिकीटकाः॥ २३॥

| ब्राह्मण | सत्रिय | वैश्य | शूद्र |
|----------|--------|-------|---------|
| मीन | मेघ | वृषभ | मिश्रुन |
| वृश्चिक | धन | मकर | कुंभ |
| कर्क | सिंह | कन्या | तुला |

टी० चार होरा शीमे मनुष्य चतुष्पद जलचर वनचर इस्का ज्ञान लिखे चक्र पर से मानू महीना -

| | | | | | |
|----------|---------|----------|----------|--------------|---------|
| अश्विनी | चोडा | मघा | मूसा | मूल | कुङ्कुर |
| भरणी | हाथी | पूर्वी | मूसा | हर्षावादा | वानर |
| कृत्तिका | मेढा | उत्तरा | मो | उत्तरावादा | नैऋ |
| रोहिणी | सर्प | हस्त | मैस | अभिजित् | नेउर |
| मृग | सर्प | चित्रा | सेर | श्रवण | वानर |
| आर्द्रा | कुत्ता | स्वामी | तेन्दुवा | धनिष्ठा | सिंह |
| पुनर्वसु | विलार | विशाखा | वाघ | शतताराका | अश्व |
| ज्येष्ठा | मेढा | अनुराधा | हरिन् | हर्षाभादपरा | सिंह |
| आश्लेषा | विलेंया | ज्येष्ठा | हरिन् | उत्तराभा-रेव | मो. गज |

| महावेरचक्रम् ॥ | | समानवेर | |
|----------------|-------|-----------|-------|
| मो. | वाघ | कुङ्कुर | विलाई |
| हाथी | सिंह | उदासीन | |
| चोडा | मैस | चोडा | मेढा |
| कुत्ता | हरिन् | मैत्री | |
| नेउर | सर्प | मो. | मेढा |
| वांदर | मेढा | अतिमैत्री | |
| विलार | मूसा | हाथी | हाथी |

ग्रहमैत्री ॥ ॥ मित्राणि द्युमणेः कुजेन्यशशिनः शुक्रार्क
जोवेरिणौ सौम्यश्चास्यसमोविधौ बुधरवीमित्रेनचास्य
द्विषत् ॥ शेषाश्चास्यसमाकुजस्यमुहदश्चंद्रेन्यसूयौ
बुधः शत्रुः शुक्रशनीसमौचशशभृत्सूनोः सिताहस्क
रौ ॥ ३० ॥ मित्रेचास्यरिपुः शशीगुरुशनिष्माजाः स
मागीष्यतेर्मित्राण्यर्ककुजेदबोबुधसिलौशत्रूसमः सूर्य
जः ॥ मित्रेसौम्यशनीकवेः शशिरवीशत्रूकुजेज्यौसमौ
मित्रेभुक्रबुधौशनेरविशशिष्माजाद्विषोऽन्यः समः ॥ ३१ ॥
टी० सूर्यद्विग्रहकामित्रसमशत्रुज्ञानकेवास्तेचक्रमेदेखना मैत्रीचक्रम

| | | | | | | |
|-------|------------|---------------|------------|------------|------------|---------------------|
| ग्रहा | रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | शुक्र | शनि |
| मित्र | चं. मं. गु | रवि बुध | गु. चं. र. | रवि. शुक्र | र. चं. मं. | बुध. शनि |
| सम | बुध | मं. गु. शु. श | शुक्र. शनि | मं. गु. श | शनि | मं. गुरु |
| शत्रु | श. शुक्र | . | गु | चंद्र | बुध. शु. | रवि. चं. र. चं. मं. |

गण॥ ॥ दक्षिणादिनो ज्यमूगमेव कर्तव्यं तदाहोरात्र
अनितवदेव गणादिना ॥ पूर्वीन पंचमिषोदयो
नराश्रमिषाणिमात्रं गणयो जनः प्रोदयः ॥ अथ
तद्विद्वेन विदितं द्रुमवस्त्रादि विद्वत्तया सुगण
॥ जालुराणां ज्यमूगसु सणा वैरं महीने नये नये

टी० अथिना आदि ले को सजाइ सनसु वदेव गण कर्तव्यमर्थ ॥ ज्य
मगण यह तीनों गण का ज्ञान चक्र परमो भान भक्तता आदि
यका और राक्षस जना वैर मनुष्य गण का वैर राक्षस गण का वैर
इति विदितं हो पतो पै श्री ज्ञानना — ॥ समस्त भद्र इति ॥

| | | | | | |
|----------|-------|--------|-----------|---------|---------|
| आदिनी | इव गण | हवा | मनुष्य गण | ज्यमूग | सिंह गण |
| वृष | इव गण | पृथ्वी | मनुष्य गण | सततारका | सिंह गण |
| अनराध | इव गण | पृथ्वी | मनुष्य गण | पृथ्वी | सिंह गण |
| अवृष | इव गण | पृथ्वी | मनुष्य गण | विशाखा | सिंह गण |
| पुनर्वसु | इव गण | अनराध | मनुष्य गण | कनिका | सिंह गण |
| अश्वि | इव गण | अनराध | मनुष्य गण | दिवा | सिंह गण |
| ज्येष्ठ | इव गण | अनराध | मनुष्य गण | ज्येष्ठ | सिंह गण |
| दश | इव गण | अनराध | मनुष्य गण | अश्वि | सिंह गण |
| अश्विनी | इव गण | अनराध | मनुष्य गण | मघा | सिंह गण |

अथूतवपंचक ॥ ॥ मीनेरिभ्यां पुनरीरुं भूमिपुन

संयुते ॥ मको कन्यका पुनर्नकुपौ नवपंचक ॥ १४ ॥

टी० मीनेरिभ्यां मरुभ्यां वृश्चिक संयुते मंदवपंचक लेती है और वके
से तीन नवम मीन वके संयुते तो यह नवम पंचक और कुंभ मिथुन
और मकर गण पर तब नवम वपंचक गण संताननाग गण इति

मृगशिरा ॥ ॥ मीनेरिभ्यां पुनरीरुं भूमिपुन

योक्ताथा ॥ पुनर्नकुपौ नवपंचक ॥ १५ ॥

योक्ताथा ॥ पुनर्नकुपौ नवपंचक ॥ १५ ॥

टी० मीनेरिभ्यां मरुभ्यां वृश्चिक संयुते मंदवपंचक लेती है और वके
से तीन नवम मीन वके संयुते तो यह नवम पंचक और कुंभ मिथुन
और मकर गण पर तब नवम वपंचक गण संताननाग गण इति

प्रीतिषडाष्टक॥ ॥सिंहोमीनयुनश्चैवतुलावृषयुन
स्तथा॥धनुःकर्कयुतंचैवकुंभकन्यकयोस्तथा॥३६॥
॥नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योःप्रीतिरुत्तमा॥३७॥

टी० सिंह मीन तुला वृष धन कर्क कुंभ कन्या मकर मिथुन मेष वृ
श्चिक ग्रह दो२ राशी प्रीतिषडाष्टक है सो शुभ जानना —

हिर्द्वादश॥ ॥मेषइषौवृषमिथुनौकर्कहरीतुलकन्य
के॥अलिधनुषीमकरकुंभावेतौहिर्द्वादशेराशी॥३७॥

टी० मेष मीन वृष मिथुन कर्क सिंह तुला कन्या वृश्चिक धन मकर
कुंभ ग्रह दो२ राशी हिर्द्वादश आवे तो शुभ जानना इस्से अन्य राशी
वे हिर्द्वादश होय तो दारिद्र्यकारक जानना —

अन्यमत॥ ॥वरस्यपंचमेकन्याकन्याशानवमेवरः॥

एतत्रिकोणकंग्रात्यं पुत्रपौत्रसुखावहं॥३८॥॥

टी० वरसे पंचम कन्या होय कन्यासे नवम वर होय तो पंद्रह नव पंचम
लेना पुत्रपौत्र सुखदायक होता है

अन्यमत॥ ॥चतुर्थदशमश्चैवतृतीयैकादशःशुभः

॥उभयःसप्तमःसान्यमेकस्यैशुभमुच्यते॥३९॥

टी० वरकन्या की राशी परस्पर चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश हो
य तो शुभ दूनों सप्तम होय तो सम शुभ जानना वरके वा कन्या के राशी
पती एक होय तो शुभ जानना

नाडी॥ ॥अंत्यनाडी॥ कृतिकारोहिणी स्वाती यथा

श्लेषा च रेवती॥ श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा अंत्यनाडि

का॥४०॥ मध्यनाडी॥ पूर्वाफाल्गुनि चित्रा च धनिष्ठा भर

णी मृगाः॥ पूर्वाषाढा नूराधा च पुष्या हिर्बुध्न्य मेव च ॥

॥४१॥ अद्यनाडी॥ पूर्वाभाद्रपदा मूलं ज्येष्ठा इस्तः पुनर्व

सु॥ अश्विन्या द्रोणी शतभिषा चोत्तरां लेकनाडिका॥४२॥

टी० अश्विन्यादिक मसे आयनाडी मध्यनाडी अंत्यनाडी जैसा अ
श्विनी भरणी कृतिका ग्रहक्रमसे तीनों नाडी जानना —

॥नाडीचक्रम्॥

[illegible][illegible]

ये ० एकत्र सन्नाम चरण तो २ चरण एकराशी होनी हे तिसक
प्रकार चक्रमें स्थापित आहे —

| | | | | | | | | |
|--------|-----|---|--------|-----|----|--------|-----|----|
| आग्नि | वरण | ४ | वृद्धि | वरण | ५ | वृद्धि | वरण | ६ |
| पर्वण | वरण | ५ | वृद्धि | वरण | ६ | वृद्धि | वरण | ७ |
| उत्थि | वरण | ६ | वृद्धि | वरण | ७ | वृद्धि | वरण | ८ |
| | वरण | | वृद्धि | वरण | | वृद्धि | वरण | |
| वृद्धि | वरण | ७ | वृद्धि | वरण | ८ | वृद्धि | वरण | ९ |
| वृद्धि | वरण | ८ | वृद्धि | वरण | ९ | वृद्धि | वरण | १० |
| वृद्धि | वरण | ९ | वृद्धि | वरण | १० | वृद्धि | वरण | ११ |
| वृद्धि | वरण | | वृद्धि | वरण | | वृद्धि | वरण | |

| | | | | | | | | |
|---------|-----|---|----------|-------|---|----------|-----|---|
| चित्रा | चरण | २ | विशाखा | चरण | १ | मूल | चरण | ४ |
| स्वाती | चरण | ४ | अनुरा | चरण | ४ | पूर्वाषा | चरण | ४ |
| विशाखा | चरण | ३ | ज्येष्ठा | चरण | ४ | उत्तराषा | चरण | १ |
| तुला | | | | दशमिक | | धन | | |
| उत्तरा | चरण | ३ | धनिष्ठा | चरण | २ | हस्ता | चरण | १ |
| श्रवण | चरण | ४ | शततारा | चरण | ४ | उत्तराभा | चरण | ४ |
| धनिष्ठा | चरण | २ | पूर्वाभा | चरण | ३ | रेवती | चरण | ४ |
| मकर | | | कुंभ | | | मीन | | |

अन्यदपि॥ ॥ एकराशीपृथग्विषयेऽप्युत्तमं पाणि
पीडनं॥ एकविषयेपृथगराशौ सर्वेऽप्येवमृत्युदं॥ ४३
टी० स्त्रीपुरुषकी एकराशी होय नक्षत्रका भेद होय तो विवाह शुभ
और एक नक्षत्र होय राशीमे भेद होय और चरण एक होय तो मृत्यु
कारक होना है इससे विवाह करना नही

गुणमेलन प्रकार

वर्णकागुण १

स्त्रीपुरुषका एक वर्ण होय तो गुण १
अथवा पुरुषका उच्च वर्ण होय तो १
इसे विपरीत होय तो गुण ०

| वर्णकागुण | | | | |
|-----------|------|---|----|----|
| | ब्रा | स | वै | शू |
| ब्राह्मण | १ | ० | ० | ० |
| क्षत्रिय | १ | १ | ० | ० |
| वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| शूद्र | १ | १ | १ | १ |

वश्यकागुण २

वैरभक्ष्ये गुणाभावोद्
योः सरस्ये गुणद्वयं॥ व
श्यवैरे गुणश्चैको वश्य
भक्ष्ये गुणार्धकं॥ १॥

टी० शत्रुभक्ष्य होय तो गुण ० दूनों स
मान जाजी होय तो गुण २ वश्यश
त्रु होय तो गुण १ नक्ष्यभक्ष्य होय तो
गुण ॥ आधा जानना -

ताराके गुण

एक तोल भते तारा शुभाचै वा शु
भान्यतः॥ नदासा द्वौ गुणश्चैव ता
राशुध्यामिषस्त्रयः॥ ४४॥ उभयो
र्न शुभानां रास्तदा शून्यं समादिशेत्

| वस्तुषट् | २ | ॥ | १ | ० | २ |
|----------|---|---|---|---|---|
| मानव | ॥ | २ | ० | ० | ० |
| जलचर | १ | ० | २ | १ | १ |
| नवचर | ० | ० | २ | १ | ० |
| कीटक | १ | ० | १ | ० | २ |

टी० स्त्रीवापुरुषकी ही का शुभतारा और किसी का भशुभ होय तो गुण १॥

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

卷之四

दी - कमीपुस्तके बुद्धो मोहकसंगहावे रहोयतो गुण पुन्य पुमांस
बभूव्हो मत्ताणां बुद्धो मासावा रमहो यतो गुण । देवताया जगिज्जे
पुण । देवताया जगिज्जे पुण । देवताया जगिज्जे पुण । देवताया जगिज्जे

The image shows a manuscript page from the 'Siddhanta Shikha' (1530 AD). The page contains a large grid of 10 columns and 10 rows, used for astronomical calculations. The grid is filled with handwritten numbers in Devanagari script. The page is aged and shows signs of wear, including discoloration and some damage.

[illegible]

ज्योतिषसार १२५

रगुणशून्य दूनोमेदेवराक्षसहोयतोवैरगुण१ दूनोमेदेवमनुष्यहो
यतोगुण६ यहरीतसेगणकेगुणजानना -

| ॐ | वर | | | |
|---|-------|---|----|---|
| | दे | म | रा | |
| | देव | ६ | ५ | १ |
| | मनु | ६ | ६ | ० |
| | राक्ष | १ | ० | ६ |

| | | | | | | | | |
|-----|----|---|----|----|----|----|----|----|
| वर | | | | | | | | |
| वधू | | र | च | म | ज | व | शु | श |
| | र | ५ | ५ | ५ | ३ | ५ | ० | ० |
| | च | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ११ | ११ |
| | म | ५ | ४ | ५ | ११ | ५ | ३ | ११ |
| | ज | ३ | १ | ११ | ५ | ११ | ५ | ४ |
| | व | ५ | ४ | ५ | ११ | ५ | ११ | ३ |
| | शु | ५ | ११ | ३ | ५ | ११ | ५ | ५ |
| | श | ० | ११ | ११ | ४ | ३ | ५ | ५ |

भकूटकेगुण

टी० एकराशीहोय नक्षत्रभिन्नहोय अथवा १ नक्षत्रहोय चरणभि
न्नहोयतोगुण७ दूनोसमसप्तहोयतो गुण७ तृतीयएकादशहोय
तोगुण७ चतुर्थदशमहोयतोगुण७ भिन्नराशी १ नक्षत्रहोयतोगुण
५ प्रीतिषडाष्टकऔरद्विर्द्वादश नवपंचम इत्येपरस्परयोनीशत्रुताहो
यतोभकूटगुण६ जानना शुभ दूनोकापरस्परनक्षत्र १ औरचरणभी १
होयतोगुणशून्यजानना -

| | म | र | मि | क | सि | क | तु | र | प | म | कुं | मी |
|--------|---|---|----|---|----|---|----|---|---|---|-----|----|
| मेष | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| वृषभ | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| मिथुन | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| कर्क | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० |
| सिंह | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० |
| कन्या | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ |
| तुला | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० |
| शश्विक | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| धन | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ७ |
| मकर | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ७ |
| कुंभ | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| मीन | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ७ | ७ |

असत्कृत

टी० स्त्रीनक्षत्रसे पुरुषनक्षत्र न गीच होय तो अशुभ और पुरुषनक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र दूर होय तो शुभ जो एकनक्षत्र अथवा दूनों के एक स्वामी होय तो शुभ जानना -

नक्षत्रमेलन॥ ॥ जन्मभंजन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन

नामभं॥ व्यत्ययेन यदा योज्यं दंपत्योर्निधनप्रदं॥ ५२॥

टी० पुरुषका जन्म नक्षत्र होय तो स्त्रीके जन्मनक्षत्रसे मेलन करना और पुरुषका नाम नक्षत्र होय तो स्त्रीके नाम नक्षत्रसे मेलन करना शुभ इसके विपरीत होय तो मृत्युकारक होता है -

वर्णपरत्वे मेलन॥ ॥ ग्रहमैत्रं ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां

णस्तथा॥ वैश्यानां राशिकूटं हि शूद्राणां योनिरुत्तमा ५३

टी० ब्राह्मणको ग्रहमैत्री और क्षत्रियको गणविचार वैश्यको राशिकूट शूद्रको योनी विचार करना शुभ -

अन्यमत॥ ॥ न जन्ममासे जन्मर्से न जन्मदिवसेपि

च॥ आद्यगर्भस्तस्याथ दुहितुर्वीकरग्रहः॥ ५४॥

टी० प्रथमगर्भमे जो होय उसका विवाह जन्ममहिनेमे वा जन्मराशीमे वा जन्मदिनमे करना नही स्त्री होय अथवा पुरुष होय -

स्त्रीपुरुषका एकत्र गुण जानने का चक्र -

[illegible]

ज्योतिषसार १२९

| क | गु | तु | तु | रु | रु | रु | ध | ध | ध | म | म | म | कुं | कुं | कुं | मी | मी | मी | ० |
|-----|-----|------|-----|-----|-----|------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| ॥ | ॥ | १ | ॥ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ॥ | १ | ॥ | ॥ | १ | ॥ | १ | १ | ० | |
| वि | वि | स्वा | वि | वि | अ | ज्ये | मू | रू | उ | उ | अ | ध | ध | श | पू | पू | उ | रे | ० |
| २४ | २३॥ | २० | २३॥ | १०॥ | २४ | १५ | २१ | ३३ | ३१ | ३६ | २७ | २१ | २१ | १६ | १० | २२ | ३१ | ३४ | १ |
| ५ | १३॥ | १०॥ | २२॥ | १०॥ | ३५॥ | १९॥ | ३४ | २६ | ३७ | २०॥ | २७॥ | ११ | ११ | २७ | २५ | ३०॥ | २७ | ३२ | २ |
| १९॥ | २३॥ | १५॥ | १९॥ | १६॥ | १०॥ | २५॥ | ३३॥ | २८ | २० | १५॥ | २४ | २५ | २६ | २७ | २० | २५॥ | २५॥ | १०॥ | ३ |
| २८ | २० | ७॥ | १२॥ | २०॥ | १६॥ | ३०॥ | २२॥ | २३॥ | ९॥ | १४ | २०॥ | ३१॥ | ३०॥ | ३१॥ | २४॥ | २१॥ | २१॥ | १४ | ४ |
| ३४ | १७ | १३॥ | ६॥ | १४ | २९॥ | २४॥ | १५ | ३१ | १२॥ | १८ | २६ | ३४॥ | ३३ | ३१॥ | ३१ | २८ | २८ | ३० | ५ |
| २१ | १० | २३ | १५॥ | २३॥ | २१॥ | १५॥ | १६ | १२ | १८ | २३॥ | ३४ | २१ | २० | २८ | २०॥ | २७ | २९ | २८ | ६ |
| २१ | २१ | ३४ | ३४॥ | २४ | ११ | १५॥ | २३ | १० | १८ | २१॥ | २६ | १३ | १४ | २९ | २४॥ | २७ | २९ | २८ | ७ |
| ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | २१॥ | १७ | ४ | १४ | २८ | २८ | २४॥ | २९ | १९ | २० | १३ | ८ | २०॥ | २८ | २८ | ८ |
| २७॥ | २७॥ | ३४ | २९ | १६॥ | २१॥ | १७ | १५ | २७ | २७ | २३॥ | २४॥ | १८ | १९॥ | १४ | १० | १९ | २८ | २८ | ९ |
| २२॥ | २२ | २८ | २३ | २१ | २६ | ११॥ | १०॥ | २३॥ | २६ | २६ | २७ | २१ | १४ | ८॥ | ११॥ | २० | ३६ | २५ | १० |
| १२॥ | १२ | २७ | २२॥ | २१ | १८ | ११ | १९॥ | १४॥ | २२॥ | २६ | २७ | २३ | ६ | १५ | १०॥ | ८ | १८ | २७ | ११ |
| २७ | २७ | ६ | १० | १६॥ | २० | २६ | २५ | १७॥ | ९॥ | २३ | २३ | २६ | ९ | २० | १३ | २४ | ३१ | १३ | १२ |
| २८॥ | २४॥ | १० | १९ | ३२॥ | २४॥ | ३२ | ३३॥ | १६॥ | १७॥ | ४ | ४ | १९ | २४॥ | २४॥ | १८ | १८ | १८ | ११॥ | १३ |
| १४ | १४॥ | १४॥ | १०॥ | २४॥ | २२॥ | ३०॥ | ३२॥ | २४॥ | ३२॥ | १९॥ | १८ | ५ | ९॥ | १८॥ | २४॥ | २४ | १६ | २४ | १४ |
| १९॥ | १५॥ | २५॥ | १५ | २१॥ | ३०॥ | २४॥ | २३ | ३२॥ | ३३॥ | १०॥ | १९ | १२ | १६॥ | १०॥ | १०॥ | १५ | २६ | २४ | १५ |
| ३० | २०॥ | ३०॥ | २३॥ | १८ | २७ | १२ | २४ | २९॥ | २९॥ | २६ | २६ | १८ | १६ | ९॥ | ११ | १८ | ३० | २८ | १६ |
| ३३ | २६ | ३२॥ | २४॥ | २० | २७ | १४ | १५ | २७ | २६॥ | २५ | २६ | ३१ | १७ | १०॥ | १३ | १८ | ३० | २८ | १७ |
| ३४ | ३३ | २६ | ३०॥ | २७ | ११ | २५ | २६ | १२ | १२ | १०॥ | १९ | १८ | १९ | २४॥ | १७ | २० | १२ | २२ | १८ |
| ३४ | ३४ | ३२॥ | ३२॥ | २२॥ | ७॥ | १॥ | २१ | १२ | २३ | २६॥ | २६ | २४ | २४ | ३०॥ | २६ | २४ | ५ | ५ | १९ |
| २८ | ३३ | ३६ | ३३ | २३ | २० | २७॥ | २३ | २७ | १८ | २३॥ | २४ | २७ | २७ | २८ | ३४ | २० | २१ | १३ | २० |
| ३२॥ | ३२॥ | ३३ | ३४ | २६ | १७॥ | २१॥ | २६ | २० | १४ | १८॥ | १६॥ | ३० | ३० | ३१ | २० | १५॥ | १४॥ | ७ | २१ |
| २६ | १९॥ | २६॥ | २६ | ३२ | ३३ | ३३॥ | २८॥ | २३ | १७॥ | १३ | १५॥ | २४॥ | २४॥ | २५॥ | ११॥ | २६ | २५ | १९॥ | २१ |
| १२ | ८ | ३३ | १८ | ३३ | ३६ | ३६ | २४॥ | ३२॥ | ३०॥ | २६ | २१ | १६ | ११ | २१ | २४॥ | ३३ | २५ | ३४ | २३ |
| २५ | २१॥ | १६॥ | २१॥ | २१॥ | ३६ | ३६ | २२ | २५ | २५ | २१॥ | २५॥ | २९॥ | २४॥ | २६ | १०॥ | १६॥ | २८ | २८ | २४ |
| २७ | २७ | २६ | २७ | ३२॥ | १४॥ | २४ | ३४ | ३५ | ३२॥ | २३॥ | २६॥ | ३०॥ | २७ | २०॥ | ११॥ | १६ | २६ | २८ | २५ |
| १२ | १८ | १९ | २६ | ३१॥ | १४॥ | ३२॥ | ३४ | ३६ | ३४ | २४ | ३४ | १६॥ | १३॥ | २३॥ | २४ | ३०॥ | १७॥ | ३२॥ | २६ |
| २१ | २७ | १९ | १९ | २३॥ | ३२ | ३२॥ | ३२॥ | २४ | ३६ | ३५ | २६ | ३२॥ | ३३ | २९॥ | २४॥ | ३३ | ३२ | २४ | २७ |
| १७ | ३१॥ | ३१॥ | २३॥ | १९॥ | २७॥ | २३ | २८॥ | २५ | ३३ | २६ | ३४ | ३२ | ३१॥ | १८॥ | ११॥ | ३० | ३० | २२ | २८ |
| २० | २७ | २२॥ | १७॥ | १४ | २७ | २३ | २१॥ | २८ | २७ | ३४ | ३६ | ३३ | ३६ | १०॥ | १९॥ | २७ | २९॥ | ३२॥ | २९ |
| १७ | २४ | २९ | ३०॥ | २७ | १३ | १४ | २४॥ | ९॥ | १८ | १२ | २७ | ३४ | ३२ | २५ | २५ | २४ | १४ | २३॥ | ३० |
| १७ | २५ | २७ | ३१॥ | २६ | १२ | २६ | १२॥ | १५॥ | २४ | २६॥ | १९ | ३१ | ३४ | ३३ | ३२ | १७॥ | ८ | १५॥ | ३१ |
| २५ | ३३ | २८ | २३ | १७ | २१ | १९ | ३२॥ | २४ | २४ | २६ | १८॥ | २५ | ३३॥ | ३६ | ३२ | १८ | १०॥ | २७॥ | ३२ |
| १७॥ | २१ | ३३ | ३३ | २७॥ | २७॥ | ३४ | १६॥ | १९॥ | ३०॥ | ३२॥ | २३॥ | १८॥ | १८॥ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ११॥ | ३३ |
| २० | १३ | २०॥ | १४॥ | २७ | २६ | २३ | २३॥ | ३०॥ | ३१ | २९॥ | ३०॥ | ३१ | १७॥ | १० | १७॥ | ३४ | ३३ | ३०॥ | ३४ |
| ११ | ५ | २१ | १३॥ | २६ | १९ | ३४ | ३१॥ | २३॥ | ३३॥ | २९॥ | २१॥ | २२ | ८॥ | १७॥ | २० | ३३ | ३६ | ३४ | ३५ |
| २२ | १८ | १२ | ८ | १८॥ | २७ | २९ | २८ | ३० | २२॥ | २०॥ | २३॥ | १९॥ | २५॥ | १७॥ | २७॥ | ३०॥ | ३४ | ३४ | ३६ |

टी० मूल अनुगधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा म
य यह नक्षत्र दोष से वर्जित होय तो विवाह करना स्त्री को शुभ-

इकईस महादोष॥ ॥ पंचांग शुद्धि रहितो दोषस्त्वाद्यः
प्रकीर्तितः॥ उदयास्त शुद्धि रहितो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः
॥ ६१ ॥ तृतीयः पापघट्टोर्गो भृगुः षष्ठः कुजोष्टमः॥ गंडांत
कर्त्तरीरिः ऋषभश्चंद्रोऽश्वसंग्रहः॥ ६२ ॥ दंपत्योरष्टमं लग्नं
राशौ विषघटीतथा॥ दुर्मुहूर्त्तो वारदोषस्वार्जरीकं स
मांघ्रिभं॥ ६३ ॥ ग्रहणोत्पात भंक्रूरविदूर्संक्रूरसंपुतं॥
कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः॥ ६४ ॥ ७७ ॥

टी० विवाह मे इकईस महादोष का त्याग करना पंचांग शुद्धि रहित
१ उदयास्त २ सूर्यसंक्रांति ३ पापग्रह का वर्ग ४ षष्ठशुक्र ५ अष्टम मंगल ६
गंडांत ७ कर्त्तरी ८ चंद्रमा १० ८ ॥ ६ ॥ ९ स्त्रीपुरुष का अष्टम लग्न १० लग्न मे
चंद्रमा पापग्रह न होय ११ विषघटी १२ दुष्टमुहूर्त्त १३ वारदोष १४ लक्षा
१५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रह का वेध १८ पापग्रह युक्त
१९ पापग्रह का अंश २० महापात २१ वैधृति यह योग का त्याग करना -

अस्तोदयकाल॥ ॥ यमशरभुजवासरवज्जिणो
दिशि हि सप्तसिनास्तमनंतथा॥ गगनवाणयमैर्दि
शिपश्चिमेन वदिनास्तमनंतुभृगोर्बुधैः॥ ६५ ॥ ७८ ॥

टी० शुक्र का अस्त पूर्व मे २५२ दिन पर होता है तिस्का उदय ७२ दिन मे प
श्चिम मे होता है और २५० दिन पर पश्चिम मे अस्त होता है सो ९ दिन मे पू
र्व मे उदय होता है सो विचार कर को जानना -

अवस्थाविचार॥ ॥ प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयंसितः स्यात्
पश्चाद्ग्राहमिह पंचदिनानि वृद्धः॥ प्रागपस्यमेव गदितो
त्रवसिष्टमुख्यैर्जीवस्तु पस्यमपि वृद्धशिशुर्विवर्ज्यः॥ ६६ ॥

टी० पूर्वदिश मे शुक्र का उदय होय तो बालत्व तीन दिन होता है पश्चिम मे अ
स्त के पहिले १५ दिन वृद्ध रहता है वैसा पश्चिम मे उदय होय तब ५ दिन बाल
त्व और १० दिन वृद्ध रहता है सो शुभ कर्म मे त्याग करना और गुरु स्त्री उदय
अस्त मे १५ दिन बालत्व १५ दिन वृद्ध रहता है सो शुभ कर्म मे त्याग करना -

अस्तमेवर्षकर्म ॥ अवापीतुं सदागम्यतामनन्ते
रानिहावतं विद्यामिदं कर्म त्वं नमहादं पुरो
वर्गोतीर्थस्नानविनाहकाभ्युदयं त्वोपदेशसुभक्त
स्तेष्वजिजीविषुः परितोदस्तेषुभो ॥ ५० ॥

टी० पुरुषकास्ते इत्यनेकामकरमान्ते इवलीं कृत्वा नवावयवतया
आसीत् देवतास्तेषु न केनोपेक्ष्य विचार्य भद्रकर्महेतुतामसा
न पुरुषेण तां ऐश्वर्यमविनाहकामनिकहेतुमं प्रकाशयेत् यथा
वक्तव्यं तं जीवनेकीदृशकाहेतुमं उद्धेने पुरुषकका अस्तमेवर्षक
पुरविचारः ॥ ॥ नवात्मजाभनवतीविधवाकुशीस्तपुत्रा

विनाहतयशसु भगविपुत्रा स्वामिप्रियाविमतं पुत्र
यशभनक्यावध्याभवे सुरपुरीक्रमशोभिजनम् ॥ ५१ ॥

टी० अत्रोक्तं पुरुविचारविनाहकानुमेज्ज्यय पुरुहो हते हं प्रानवा
रकहितीवहोपवीजनयुक्तं ततोयदो अतोपतिहीनं चतुर्षहं यजता
पश्यमहोयतोपुत्रयुक्तं पश्यहोयतोपतिहीनं सप्तमहोयतोपुत्र
तोपुत्रीमन्त्रमहोयतोपतिप्रियं दशमहोयतोपुत्रपतीहीनं एकदशम
होयतपुत्रहोयतोपतिव्याहं साकयसंसारहो स्थानकायमजातम
अन्यमतः ॥ अत्रानिदशमारित्यः पूजयामुभयो

रुः विनाहोचतुर्षो हहादशस्थोमृतिप्रदः ॥ ५२ ॥

टी० विनाहोचतुर्षो अत्रस्थ तृतीय दशम पश्य यत्पुत्रपुत्री
तेषुमभोः चतुर्षो अत्रमहादश कर्मपुत्रपुत्रीकर्म

पश्यहं ग ॥ अत्राचतुर्षोयहोयतोपतिप्रदो यजता
पश्यहोयतोपतिप्रदो यजता ॥ ॥ नमि कर्मो ततोयदो
पश्यहोयतोपतिप्रदो यजता ॥ ॥ नमि कर्मो ततोयदो

टी० अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं
अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं
अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं
अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं

अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं

अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं अत्रोक्तं

टी० स्त्रीपुरुष और बटु इनके जन्म राशीसे अथवा जन्मलग्नसे अष्टमलग्नका विवाह जनेउ दस्त्ये त्याग करना —

दुष्टमुहूर्त॥ ॥ तिथ्यंशो दिनमानस्य रात्रिमानस्य चैव हि ॥ मुहूर्तः कथितस्तेषु दुर्महूर्तैः शुभेत्यजेत् ॥ ७३ ॥

टी० दिनका १५ वा भाग और रात्रीका १५ वा भाग दुष्टमुहूर्त होते हैं सो त्याग करना

यामार्ध ॥ ॥ सूर्याद्या मदलं दिवैव निगमाद्यश्वौषु नागत्रिषट्संख्याकं कुलिकं दिवेंद्रविदिङ्नागर्तुवेदिकं ॥
व्येकेते निशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमुद्भूतिनैः कालकंठकमैनिघंटममरेज्यजास्कुजिड्यक्रमात् ॥ ७४ ॥

टी० दिनमें रविवारसे अर्द्धयामके अंक है सो निवृत्ती और प्रवृत्तीके अंक भी कोष्टकमें है यथाक्रमसे देखना ॥ शुभकर्ममें त्याग करना दिनमें रविवारसे दिनके सोलह भाग में कुलिक अंक चक्रमें देखना शुभकर्ममें त्याग करना कोई आचार्य कहते हैं कि रात्रीमें सोलह भाग कुलिक नही पंद्र वा भाग है सो त्याग करना गुरुवारसे कालदोष बुधवारसे कंठकयोग शुक्रवारसे ऐनिघंट योग यह यथाक्रमसे चक्रमें देखना शुभकर्ममें त्याग करना एक दिनमें आठ अर्द्धयाम ८ कुलिकादि सोलह ऐसे बार परत्वसे जानना परंतु जोवार परत्वसे त्याग सोचक्रमें देखना — यामार्द्धचक्रम

| वार | यामार्द्धघटिका | | | कुलिक घ०२ | काल घ०२ | कंठक घ०२ | ऐनिघंट घ०२ |
|-------|----------------|-----------|----------|--------------|------------|-------------|---------------|
| | संख्या | प्रवृत्ति | निवृत्ति | | | | |
| रवि | ४ | १२ | १६ | १४ | ८ | ६ | १० |
| बुध | ७ | २४ | ३८ | १३ | ६ | ४ | ८ |
| मंगल | २ | ४ | ८ | १० | ४ | २ | ६ |
| शुभ | ५ | १६ | २० | ८ | २ | १४ | ४ |
| गुरु | ८ | २८ | ३२ | ६ | १४ | १२ | २ |
| शुक्र | ३ | ८ | १३ | ४ | १२ | १० | १४ |
| शनि | ६ | २० | २४ | २ | १० | ८ | १२ |

चंद्रविचार ॥ ॥ चंद्रे सूर्यादिसंयुक्ते दारिद्र्यं मरणं

शुभं ॥ सौख्यं सापत्न्यं वैराग्यं पापहृदयपुनेमृतिः ॥ ७५ ॥

टी० चंद्रमा सूर्यादिक ग्रहके साथ होयतिस्काफल चक्रमें देखना परंतु दोषापग्रहसे युक्त होय तो मृत्युकारक होता है —

प्रचरणमिवेधहोयउत्कात्यागकरना -

वेधनसत्रम्माह ॥ ॥ शुक्लपिमेभिजिद्राह्येवेधोदये

तुरुद्रमे ॥ पूजादित्येवपुण्यदेवेधोदयेप्राप्तमदेभरस

भाष्यार्थमातेषचहस्तादिबुधभेदया ॥ विनासचरणोत्वा

तीवामरणेचपरस्पर ॥ ॥ ॥ इदिवेवाहमेतद्देधःसत्रम्

राकजः ॥ त्याज्यः पापोहोयत्वाहुतबन्धादिकर्मसु य

टी० वेधजाननेकाप्रकार श्रवण कृतिका इत्यावेधइसीप्रकारसे

अभिजित रोहिणी उजराघाता मृग पूर्वाषाढा आर्द्रा मूल पुनर्वसु उ

ष्यज्येष्ठा अनुराधा आश्लेषा मघा भरणी अश्विनी पूर्वाषाढा रे

वती हस्ता उमा चित्रा पूभा स्वाती शततारका विशाखा धनिष्ठा रे

हा तीनसत्रमेवेधजाननासेमौजीविवाहादिमेंअवश्यत्यागकरना -

अन्यमते ॥ ॥ धिष्ण्यसौम्यग्रहेर्विद्वत्प्रादग्भवेपरि

त्यजेत् ॥ क्रूरैस्तुसकलंत्याज्यमितिवेधविनिश्चयः ॥ ॥ ॥

टी० नक्षत्रशुभग्रहसेवेधितहोयतोजिसचरणमेवेधितहोयउत्कात्याग

करना औरवापग्रहसेवेधितहोयतोवहसवनसत्रत्यागकरना शुभ -

वेधप्रकार ॥ ॥ वेधमाद्यंतयोरंशोरन्योन्यंहितृती

यशोः ॥ क्रूरैरपित्यजेत्यादंकेचिदुभयंहर्षयः ॥ ॥ ॥

टी० वेधप्रथमचरण औरचतुर्थचरणसेऔरद्वितीयतृतीयचरणसेवेध

तहोतोहोईप्रभिलोककहतहोकिक्रूरग्रहसेवेधहोयतोभीषादत्यागकरना

क्रांतिसाम्य ॥ ॥ युयौधनुःचक्रिर्लोचयुक्तेकन्याचमीपे

पनकयुक्तेमोषनसिहचपदनुत्पायान्तेनसाग्न्यशुभिसूयैवोप

टी० धिष्ण्यपतयेसेरोमणीपरचंद्रसूर्यहोयतोक्रांतिसाम्यहोताहो

इसीरीतसेकर्मइष्टिक कन्यामीन वृषभ मकर मेषसिंह कुंभ तु

लो यहक्रांतिसाम्यशुभकर्मसेत्यागकरना -

चक्रक्रान्तम् ॥ ॥ क्रूरैस्तात्रयचैवतिथेरेखाचयंतया

॥ क्रान्तिसाम्ययुधैर्जैयंमध्यमीनंतुमोजयैत् ॥ ॥ ॥

टी० क्रान्तिसाम्यकाप्रकार तीनरेखाहोयोरद्वारेखाआर्द्रावृषा औरमध्यव

रेखापरमीनवृषभेव्यासकरनाहोताहोयारिमेधहोतहोक्रांतिसाम्यहो

ज्योतिषसार १३७

त्रिसाम्यचक्र



एकार्गल॥ ॥ लिखेदूर्ध्वगतामे
कांतिर्यग्रेखास्त्रयोदश॥ यत्र खार्ज
रिकेचक्रेकथितंमूर्ध्नि विन्यसेत् ८९

टी० एकरेखासूधीकरना उसपर १३ रेखा आडीक

रनतब यह खार्जूरचक्र होता है उसपर अश्विनीनक्षत्रसे न्यास करना —

अन्यमत॥ ॥ तत्रैकरेखागतयोः सूर्यचंद्रमसोर्मि

यः॥ एकार्गलोदृष्टिपातश्चाभिजिह्वर्जितानिवै ९०

टी० यह चक्रमे एकरेखापर सूर्य और चंद्रमा होय तो एकार्गलदृष्टि
पात होता है परंतु अभिजित्का दृष्टिमे त्याग करना —

अन्यमत॥ ॥ व्याघातगंडव्यतिपातपूर्वश्रूलांत्य

वज्रेपरिघातिगंडे॥ एकार्गलाख्योऽभिजित्समे

तो दोषः शशीचेद्विषमर्क्षगोः कीत् ॥ ९१ ॥ ९२ ॥

टी० व्यापातगंडव्यतीपात दस्के पूर्वमे पात शु

भ अंत्यमे अशुभ श्रूल वैधृति परिघ वज्र (

अतिगंडइस्के अंत्यमे पात होता है सो अशु

भ एकार्गल होता है परंतु अभिजित् सहित

सूर्यसे चंद्रमा विषमराशीमे होय तो दोषित

होता है व्याघातादिदुष्टयोगके दिन सूर्यन

क्षत्रसे दिननक्षत्र अभिजित् सहित विषम

संख्या होय तो दोष एकार्गल जानना —

अन्यमत॥ विरुद्धनामयोगेषु साभिजिह्वम

र्क्षगः॥ अर्कादिंदुस्तदा योगो निच एकार्गलाभिधः॥

टी० दुष्टनामयोगमे अभिजित् सहित चंद्रमा सूर्यसे विषम होय तो

निंदित एकार्गल होता है सो शुभकर्ममे त्याग करना इस योगके अंत

मे जो नक्षत्र सो पात संज्ञक होता है —

जामित्रदोष॥ ॥ लग्नेद्वोर्नास्तगः पापस्तत्तुल्यांशे य

दिस्थितः॥ तदा जामित्रदोषः स्यात् न हि न्यूनाधिकांश

के॥ ९३ ॥ क्रूरो वा यदि वा सौम्यो रूपाच्चंद्राच्च खेचरः